बाल भारती

भाग 1

पहली कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

अनिल विद्यालंकार
संयुक्ता लूदरा
सत्येन्द्र वर्मा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
मई 1987 : बैसाख 1909

प्रथम संशोधित संस्करण
अप्रैल 1997 : बैसाख 1919

द्विवितीय संशोधित संस्करण
सितंबर 2002 : भाद्रपद 1924

प्रथम पुनर्मुद्रण
जनवरी 2003 : माघ 1924

PD 300T + 25T (A) MB

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2002

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी,फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्लू.सी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	धनकोल बस स्टैंड के सामने
नई दिल्ली 110 016	बैंगलूर 560 085	अहमदाबाद 380 014	पानीहाटी, कोलकत्ता 700 114

प्रकाशन सहयोग

संपादन	:	नरेश यादव
उत्पादन	:	विनोद देवीकर मुकेश कुमार गौड़
सज्जा	:	डी.के. शेन्डे
चित्र तथा आवरण	:	सीमा जर्बी हुसैन

रु. 30.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित ।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली– 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा दि सेन्ट्रल प्रेस (प्रा०) लिमिटेड, 123/443 फैक्ट्री एरिया, फजलगंज, कानपुर–280 002 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

भाषा मनुष्य के वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के विकास के लिए सबसे उपयोगी साधन है, इसलिए भाषा सीखना व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता है। यह एक सहज प्रक्रिया है। भाषा की शिक्षा के बिना मनुष्य का सामाजिक और बौद्धिक विकास पूर्ण नहीं होगा। भाषा का प्रवाह व्यक्ति और समाज में निरंतर चलता रहता है। भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को इस योग्य बना देना है जिससे वे भाषा के प्रवाह में स्वयं तैर सकें।

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्य सामग्री का निर्माण एक सतत प्रक्रिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के तहत परिषद् ने नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की जो ृंखला प्रारंभ की थी उसमें बाल भारती भाग 1 प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा हिंदी पढ़ाने के लिए निर्मित पुस्तक की पहली कड़ी है। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण 1987 में प्रकाशित किया गया था। सन् 2000 में परिषद् द्वारा विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा निर्मित की गई और उसके आधार पर पाठ्यक्रमों का नव निर्माण किया गया। इस पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है – बस्ते के बोझ को कम करना, पाठ्यसामग्री को अद्यतन बनाना और मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करना। परिषद् ने पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों को आधार बनाकर विभिन्न विषयों में नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण तथा अन्य पाठ्यसामग्री में संशोधन-परिवर्धन का कार्य आरंभ किया है।

इसी आधार पर बाल भारती भाग 1 में यथा-आवश्यक संशोधन एवं परिवर्धन किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक को संशोधित करते समय ध्यान रखा गया है कि पाठ्यक्रम के बोझ को कम किया जा सके तथा पाठ्यसामग्री को नई पाठ्यचर्या के परिप्रेक्ष्य में अद्यतन बनाया जा सके।

प्रस्तुत पुस्तक में चारों भाषायी कौशलों–बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखना के साथ-साथ मनोरंजन पर भी पर्याप्त बल देने का प्रयास किया गया है, ताकि बच्चों में पठन-पाठन के प्रति रुचि उत्पन्न हो सके और अधिगम प्रक्रिया आनंददायी बन सके।

प्रस्तुत पुस्तक देवनागरी लिपि और मानक हिंदी वर्तनी की व्यवस्था में प्राप्त सुविधाओं पर आधारित है। पुस्तक में पठन-शिक्षण से संबंधित सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर इसे अधिक सुगम और उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। प्रयास किया गया है कि कम-से-कम समय में बच्चे अधिक-से-अधिक पठन योग्यता का विकास कर सकें।

प्रस्तुत पुस्तक में जिन विचारों एवं मानव मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है उनमें कुछ इस प्रकार हैं– देश प्रेम, राष्ट्रीय एकता, सच्चाई, सफ़ाई, अनुशासन, समय-पालन, खेल भावना, साहस, श्रम का महत्त्व, स्वास्थ्य, सामाजिक सहयोग, पर्यावरण संरक्षण, पारस्परिक सद्भाव, भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का ज्ञान, सभी धर्मों के प्रति आदर का भाव आदि।

आशा है कि विषयवस्तु और प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से बाल भारती भाग 1 के इस नवीन संशोधित संस्करण का विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा स्वागत होगा।

प्रस्तुत पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, अध्यापकों और भाषाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

जगमोहन सिंह राजपूत
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
फरवरी 2002

समीक्षा-संशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य

1. प्रो. मा. गो. चतुर्वेदी
   173, नीलगिरी, अलकनन्दा
   नई दिल्ली
2. प्रो. भगवत रावत
   129, आराधना नगर
   कोटरा, भोपाल (म. प्र.)
3. डॉ. आनन्द प्रकाश व्यास
   छाया, एम.डी. 56
   विशाखा एन्कलेव, दिल्ली
4. डॉ. नीरा नारंग
   शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
   दिल्ली
5. श्री जगमोहन सिंह
   1-के/3, रामप्रिया निवास
   राम प्रिया रोड, इलाहाबाद
6. सुश्री कुसुमलता अग्रवाल
   टी.जी.टी., सर्वोदय बाल विद्यालय
   रमेश नगर, नई दिल्ली
7. श्री विजय नारायण पाण्डेय
   वसंत वैली पब्लिक स्कूल
   वसंत कुंज, महरौली, महिपाल पुर, नई दिल्ली
8. श्रीमती प्रभा शर्मा
   अध्यापिका, दिल्ली पब्लिक स्कूल
   मथुरा रोड, नई दिल्ली
9. श्रीमती संयुक्ता लूदरा
   सी-20/सी, गंगोत्री अपार्टमेंट्स
   अलकनन्दा, नई दिल्ली
10. प्रो. कृष्णकान्त वशिष्ठ
    विभागाध्यक्ष, प्रा.शि. विभाग
    एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
11. प्रो. रामजन्म शर्मा **(संयोजक)**
    एन.सी.ई.आर.टी.
    नई दिल्ली
12. डॉ. इन्दु सेठ **(विभागीय सदस्य)**
    एन.सी.ई.आर.टी.
    नई दिल्ली

शिक्षकों के लिए

प्रवेशिका-निर्माण के प्रमुख आधार बिंदु

1. यह प्रवेशिका बच्चों को देवनागरी लिपि में हिंदी पढ़ना सिखाने तथा भाषा की अन्य योग्यताओं का विकास करने के लिए तैयार की गई है। पढ़ना सिखाने के लिए भाषा-वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से एक ऐसे मार्ग का अनुसरण किया गया है जो शिक्षकों को सहज ग्राह्य हो और छात्रों के लिए रोचक तथा उपयोगी हो।

2. पहली कक्षा के प्रारंभिक दिनों में बालकों में बहुत अधिक झिझक होती है। प्रायः वे खुलकर नहीं बोल पाते। पढ़ने की प्रक्रिया उनके लिए बिलकुल नई चीज़ होती है। इसलिए पुस्तक का प्रारंभ सीधे अक्षर ज्ञान से नहीं किया गया है। आरंभ में कुछ पशुओं, पक्षियों, फल-सब्ज़ियों, सवारियों और पेड़-पौधों के चित्र दिए गए हैं, जिनका उद्देश्य बच्चों का ध्यान पुस्तक पर केंद्रित करना तथा रोचक और उपयोगी बातचीत के लिए आधार प्रस्तुत करना है। इन चित्रों के बारे में बातचीत करते हुए न केवल बच्चों की आँखें पुस्तक में छपी किसी चीज़ को देखने के लिए प्रशिक्षित होंगी अपितु प्रारंभिक दिनों में छोटे बच्चों में जो स्वाभाविक झिझक होती है, वह भी बहुत कुछ दूर हो सकेगी।

3. इन चित्रों के बाद कुछ कहानियों के चित्र दिए गए हैं। प्रत्येक कहानी चार चित्रों में है जिनका क्रम बाईं ओर से दाईं ओर तथा ऊपर से नीचे है। हिंदी लिखने का भी यही स्वाभाविक क्रम है। कहानियों के इन चित्रों में क्रमिक घटनाएँ दिखाई गई हैं। चित्रों के नीचे उनके बारे में बच्चों से बातचीत करने के लिए कुछ संकेत दिए गए हैं। इन चित्रों के द्वारा बच्चों की रुचि सुनने और बोलने में अधिक जगाई जा सकेगी। वे क्रमबद्ध वाक्य बोल सकेंगे। साथ ही उनकी आँख को बाईं ओर से दाईं ओर तथा ऊपर से नीचे की ओर जाने का भी अभ्यास हो सकेगा।

4. कहानियों के बाद दो पृष्ठों में कुछ सरल आकृतियाँ दी गई हैं, जिनका अनुकरण बच्चे तख़्ती, स्लेट और कागज़ या रेत पर कर सकते हैं। इससे बच्चों को जहाँ विभिन्न आकृतियों को पहचानने का अभ्यास होगा वहीं उन्हें अपनी उँगलियों पर नियंत्रण भी प्राप्त होगा। इन आकृतियों में वे सभी रेखाएँ भी आ गई हैं जिनके योग से देवनागरी के वर्ण बनते हैं। लेखनारंभ के प्रयास से बच्चे लिखना सीखने के लिए भली प्रकार तैयार हो सकेंगे।

5. पहली कक्षा के प्रारंभिक तीन-चार सप्ताहों में ऊपर लिखी क्रियाएँ व अभ्यास कराने के बाद ही अक्षर-ज्ञान आरंभ कराना चाहिए। इस प्रवेशिका में सिखाने की जिस विधि का सहारा लिया गया है, उसके प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं :

   (क) हिंदी के सभी लिपि चिह्नों के प्रयोग की आवृत्ति समान नहीं है। **न, ल, ब, स, क, र, म** आदि व्यंजनों का प्रयोग **छ, ठ, ण, ढ, ष** आदि की तुलना में कहीं अधिक होता है। स्वरों की तुलना में उनकी मात्राओं का प्रयोग कहीं अधिक है। बच्चों को अधिक प्रयुक्त लिपि संकेत पहले सिखाए जाएँ तो वे उनसे बनने वाले अधिकाधिक शब्दों को सरलता से पढ़ना सीख सकेंगे। प्रस्तुत प्रवेशिका में इसका यथासंभव अनुसरण किया गया है।

   (ख) प्रस्तुत पुस्तक में पहले बिना मात्रा वाले शब्द लिए गए हैं और फिर बहु-प्रयुक्त मात्राओं वाले। प्रवेशिका के अंत तक सभी स्वर, व्यंजन और मात्राएँ सिखा दी गई हैं। संयुक्ताक्षर **क्ष, त्र, ज्ञ, श्र** भी ले लिए गए हैं। कुछ सरल संयुक्त व्यंजन सरल दृश्य-शब्दों के रूप में दिए गए हैं। इनका प्रयोग पाठों में यथास्थान कर दिया गया है। लिपि-संकेतों को सिखाने का क्रम इस प्रकार रखा गया है कि बच्चे दूसरी कक्षा के अंत तक अपनी भाषा के सभी परिचित शब्दों को पढ़ने में समर्थ हो सकें। इससे वे तीसरी कक्षा में हिंदी के अतिरिक्त विज्ञान, गणित तथा सामाजिक अध्ययन की पुस्तकें पढ़ने के लिए तैयार हो सकेंगे।

   (ग) प्रवेशिका के उत्तरार्ध तक हिंदी की पूरी वर्णमाला आ गई है और बच्चों के पहचानने और याद करने के लिए 71 पृष्ठ पर दी गई है। परिचित व्यंजनों के साथ, सीखी हुई मात्राओं के योग का अभ्यास साथ-साथ कराया गया है।

(घ) इस प्रवेशिका के सभी शब्द ऐसे हैं जिनसे विद्यालय में प्रवेश लेने से पूर्व हिंदी भाषा-भाषी बच्चे प्रायः परिचित होते हैं। इस प्रकार प्रवेशिका के शब्द, अर्थ की दृष्टि से, बच्चों के लिए नए नहीं है।

(ङ) एक पाठ में केवल तीन-चार नए लिपि चिह्नों का परिचय कराया गया है। तीसरे पाठ से जो भी शब्द चित्रों के पास पढ़ने के लिए दिए गए हैं, उनमें से प्रत्येक में केवल एक ही लिपि चिह्न छात्रों के लिए अपरिचित है। प्रत्येक पाठ में सिखाए गए नए लिपि चिह्नों के योग से बनने वाले शब्दों को पढ़ने के अभ्यास के लिए दिया गया है। इस प्रकार सिखाए गए लिपि चिह्नों के योग से बनने वाले शब्दों और उन शब्दों के मेल से बनने वाले वाक्यों के पढ़ने की योग्यता का बच्चों में निरंतर विकास होता जाएगा। पिछले पाठों के शब्दों की अगले पाठों में आवृत्ति होती गई है जिससे छात्रों के पढ़ने में गति आएगी।

(च) जिन शब्दों से वस्तुओं के चित्र बन सकते हैं उनमें से कुछ के चित्र दिए गए हैं। इन चित्रों में दिखाई गई वस्तुओं के नाम बच्चे नए शब्दों में से खोजेंगे। इस प्रकार शब्दों को पहचानने का उनका अभ्यास बढ़ेगा और वे इनके अर्थ और प्रयोग भली-भाँति समझ सकेंगे।

(छ) बच्चे प्रवेशिका के पहले भाग के अंत तक कई सौ शब्दों को पढ़ने की योग्यता प्राप्त कर सकेंगे। पुस्तक के सीमित आकार में इन सभी शब्दों को नहीं दिया जा सकता किंतु इन शब्दों के आधार पर लिखी गई सामग्री को बच्चे पूरक-पठन के रूप में आसानी से पढ़ सकते हैं।

(ज) दूसरे पाठ से पढ़ने के साथ-साथ लिखने का अभ्यास भी प्रारंभ कराया गया है। आरंभ में कुछ वर्ण लिखने के लिए दिए गए हैं, फिर कुछ शब्द और कुछ वाक्य। प्रत्येक नए वर्ण को स्वाभाविक एवं सुगम चरणों में लिखने की प्रक्रिया सुझाई गई है। लिखने का अभ्यास उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार तख़्ती, स्लेट, कागज़ आदि पर कराया जा सकता है।

(झ) पुस्तक बच्चों की भाषा में लिखी गई है। पाठ ऐसे विषयों–घर, पड़ोस, खेल-कूद, पशु-पक्षी आदि पर आधारित हैं, जिनमें छोटे बच्चों की स्वतः ही रुचि होती है। पाठों के प्रमुख पात्र बच्चे ही हैं। उनसे बच्चों का सहज संबंध स्थापित हो सकेगा। पुस्तक के बहुत से पाठ संवादात्मक हैं, इससे बच्चों को बातचीत करने का अभ्यास भी सहज रूप से हो सकेगा।

(ञ) किसी भी भाषा की प्रवेशिका का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाना होता है, किंतु पढ़ने की प्रक्रिया को भाषा की अन्य प्रक्रियाओं से अलग करके नहीं सिखाया जा सकता। पढ़ने के द्वारा बच्चों की सुनने, बोलने, लिखने, समझने और सोचने की योग्यताएँ भी विकसित होती हैं। इस पुस्तक में ऐसे पाठ रखे गए हैं जिनसे बच्चों में सहायता, सहयोग, बाँट कर उपयोग करना, दया, सफ़ाई, शिष्टाचार, आज्ञापालन, पर्यावरण और स्वास्थ्य के प्रति सजगता आदि गुणों का विकास करने में सहायता मिलेगी।

प्रवेशिका के प्रयोग के लिए कुछ सुझाव

1. बच्चों के लिए पाठशाला का वातावरण घर के वातावरण से बिलकुल भिन्न होता है। पहले उन्हें इस नए वातावरण से भली प्रकार परिचित होने दीजिए फिर उनसे उनके घर-परिवार, पास-पड़ोस, खेल-कूद आदि पर बातचीत कीजिए, कहानियाँ सुनाइए, पहेलियाँ बुझाइए और उचित अंग-संचालन के साथ समूह गान गवाइए। इन क्रियाओं से बच्चों की झिझक दूर होगी। खेल-कूद भी इस दिशा में बहुत सहायता कर सकते हैं। एक सप्ताह इसी प्रकार का कार्यक्रम रखिए। इसमें पुस्तक का प्रयोग बिलकुल नहीं होगा।

2. अब बच्चों को प्रवेशिका के प्रारंभिक चित्रों पर लाइए। इनके बारे में बातचीत कीजिए। प्रत्येक बच्चे को बोलने के लिए उत्साहित कीजिए। पुस्तक में चर्चित चित्र पर बच्चों का ध्यान दिलाते रहिए। चित्रों के नीचे उँगली रखवाइए, फिर चित्र के किसी विशेष भाग, जैसे मोर के पंख, हाथी की सूँड़ या आँख पर उँगली रखवाइए। इससे बच्चे क्रमशः बड़ी से छोटी चीज़ पर ध्यान केंद्रित करना सीखेंगे। कुछ और चीज़ों के चित्र दिखाकर उनके बारे में बातचीत कीजिए।

3. इन चित्रों के बाद कहानियों के चित्रों पर आइए। प्रश्नों द्‌वारा चित्रों की क्रमिक घटनाओं का वर्णन करवाइए और उनका संबंध निकलवाइए। अंत में बच्चों से चित्रों के आधार पर कहानी सुनाने के लिए कहिए। आवश्यकतानुसार उनकी सहायता कीजिए। पुस्तक में चार कहानियों के चित्र हैं। यदि संभव हो तो कुछ अन्य कहानियों के चित्र कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। प्रयत्न कीजिए कि सभी बच्चे चित्र देखकर इन कहानियों को सुना सकें। इससे बोलने में उनकी झिझक दूर होगी और भाषा में प्रवाह आएगा।

4. हिंदी भाषी प्रदेश के अधिकतर बच्चे घर पर मानक हिंदी नहीं बोलते अपितु अपने-अपने क्षेत्र की बोलियाँ बोलते हैं। पढ़ना सिखाने के पूर्व चित्रों के आधार पर बातचीत करने और कहानियाँ सुनाने तथा कविताएँ याद कराने का एक प्रमुख उद्‌देश्य यह भी है कि बच्चे मानक हिंदी के वाक्य-विन्यास से परिचय प्राप्त कर लें। आप अपनी ओर से मानक हिंदी का ही प्रयोग कीजिए ताकि बच्चे आपकी भाषा अनुकरण द्‌वारा ग्रहण कर लें। मानक हिंदी में बोलने के लिए बच्चों को प्यार के साथ प्रोत्साहन दीजिए। हाँ, यदि आवश्यक हो तो आप बच्चों की बोली में भी कभी-कभी बोल सकते हैं ताकि उनसे अधिक आत्मीयता स्थापित हो सके।

5. जिन दिनों अक्षर-ज्ञान के पूर्व की ये क्रियाएँ चल रही हों, उन्हीं दिनों बच्चों को पृष्ठ 14 और 15 पर दी गई आकृतियाँ बनाने का अभ्यास भी प्रारंभ करा दीजिए। रेखाओं और आकृतियों की बनावट पर प्रारंभ से ही ध्यान दीजिए। ये अभ्यास मूल आकृतियों से संबंधित हैं और लेखनारंभ की योग्यता का विकास करेंगे। इनसे आँख और हाथ की गति का नियंत्रण होगा और बच्चे लिखना सीखना प्रारंभ करेंगे।

6. पढ़ने की प्रक्रिया का वास्तविक प्रारंभ प्रवेशिका के पृष्ठ सं. 16 से होता है। बच्चे के मस्तिष्क में शब्द एक चित्र के रूप में स्थापित होते हैं। प्रस्तुत पाठ में **बस** और **नल** के चित्र देकर उनके नाम लिखे हैं। इन शब्द-चित्रों के द्‌वारा **ब, स, न, ल** वर्णों का परिचय कराया गया है। बस के चित्र के पास लिखे **बस** शब्द को पढ़वाइए। स्मरण रहे कि चित्र देखकर बस का उच्चारण करना, पढ़ना नहीं है। यदि बच्चे बस का चित्र देखकर बस बोल रहे हैं तो वे पढ़ नहीं रहे हैं। बच्चों में शब्दों के पढ़ने की योग्यता तभी विकसित माननी चाहिए जब वे शब्दों को केवल लिखित रूप में देखकर ही पढ़ सकें, पढ़ने के लिए चित्र के सहारे की आवश्यकता न पड़े। पहले **ब** और **स** का परिचय कराया गया है। **ब** और **स** को श्यामपट पर लिखकर बार-बार पढ़वाइए। कार्डों पर बड़े आकार में वर्ण लिखकर उन्हें पढ़वाना उपयोगी होगा। अलग-अलग पढ़वाने के बाद दोनों वर्णों को मिलाकर पढ़वाइए। फिर पाठ में छपे **ब** और **स** पर बारी-बारी से उँगली रखवाइए। **ब** और **स** से भली प्रकार परिचित हो जाने पर इसी प्रकार **न** और **ल** का परिचय करवाइए।

7. इस अभ्यास के बाद इन चार वर्णों (ब, स, न, ल) के योग से बनने वाले उन नए शब्दों को पढ़ना सिखाइए जो सामने के पृष्ठ 17 पर दिए गए हैं। उन्हें भी पहले श्यामपट पर लिखकर और बाद में कार्डों पर लिखा हुआ दिखाकर पढ़वाइए। कक्षा के प्रत्येक बच्चे से अलग-अलग पढ़वाकर देखिए। कमज़ोर बच्चों पर प्रारंभ से ही अधिक ध्यान दीजिए। इन शब्दों से संबंधित चर्चा कीजिए ताकि पढ़ने के साथ-साथ सुनना, बोलना और सोचना भी चलता रहे और पाठ में रोचकता बनी रहे।

8. पढ़ने की प्रक्रिया की नवीनता के कारण बच्चों के लिए पहला पाठ सबसे कठिन होता है। यदि इसे सिखाने में सात-आठ दिन भी लग जाएँ तो अधिक नहीं हैं। पाठ में दी गई प्रत्येक बात को भली प्रकार सिखाकर ही आगे बढ़ें। हर अगला पाठ पिछले पाठों में सीखी हुई सामग्री पर आधारित है इसलिए पिछले पाठों में कोई कमी रह जाने पर अगला पाठ पढ़ने में बच्चों को कठिनाई होगी।

9. दूसरे पाठ से ही लिखने का अभ्यास प्रारंभ कराया गया है। प्रत्येक वर्ण को क्रमिक चरणों में लिखकर दिखाया गया है जिससे उसके नीचे लिखे जाने की प्रक्रिया स्पष्ट हो सकेगी। यदि बच्चों ने सरल आकृतियाँ बनाने का अभ्यास पहले कर लिया है तो उन्हें वर्ण लिखने में विशेष कठिनाई नहीं होगी। देखकर लिखने के लिए बच्चों को कुछ शब्द दीजिए और कभी-कभी श्रुतलेख लिखवाइए। वर्णों की शुद्‌ध और सुडौल बनावट पर बल दीजिए।

10. तीसरे पाठ में केवल दो लिपि संकेतों का प्रवेश है '**ा**' और '**त**'। अभी यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह **आ**

की मात्रा है। **क** और **का** को अलग-अलग पढ़वाइए। बताइए कि यह **क** है और यह **का**। इसी प्रकार **न** और **ना**, **म** और **मा**, **ल** और **ला**, **त** और **ता** को कई बार अलग-अलग पढ़वाइए तथा पढ़वाकर इनकी पहचान करवाइए। बाद में स्वरों का ज्ञान हो जाने पर आप बच्चों को बताएँ कि यह **आ** है और यह **ा** (आ की मात्रा) है आदि।

11. तीसरे पाठ में ही बच्चों द्वारा अब तक सीखे हुए लिपि चिह्नों के आधार पर पढ़े जा सकने वाले परिचित शब्दों की संख्या इतनी हो गई है कि उन सबको पुस्तक में देना संभव नहीं रहा। अतः शिक्षक ऐसे शब्दों को श्यामपट पर लिखकर या कार्डों की सहायता से पढ़वाएँ। संभव हो तो इन शब्दों को चार्टों पर लिखकर कक्षा के कमरे में लगाएँ। कहीं-कहीं पर पढ़े जा सकने वाले शब्दों की सूची साथ-साथ दे दी गई है। आगे के पाठों में पढ़ने के अभ्यास के लिए केवल उन शब्दों को चुना गया है जिनके द्वारा उस पाठ में सिखाए गए लिपि चिह्नों का अच्छा अभ्यास हो सके। कुछ स्वतंत्र वाक्य भी दिए गए हैं जिनसे छात्रों के पढ़ने में अधिक गति आ सकेगी।

12. पाठ छह में मदन और कमला नाम के दो बच्चों का प्रवेश कराया गया है जिनको आधार बनाकर इस पाठ में तथा अगले कुछ पाठों में कुछ रोचक पठन-सामग्री का विकास किया गया है। इस पाठ में और आगे के सम संख्या वाले पाठों में किसी नए लिपि चिह्न का परिचय नहीं कराया गया है। ये पाठ पिछले सीखे हुए वर्णों और शब्दों के पढ़ने के अभ्यास के लिए हैं। साथ ही इन पाठों में बच्चों से बात करने और उनके सोचने-विचारने के लिए पर्याप्त सामग्री दी गई है। इन पाठों के आधार पर किस प्रकार की बातचीत बच्चों से की जा सकती है, इसके लिए कुछ प्रश्न नमूने के तौर पर अध्यापन संकेतों में दिए गए हैं। ऐसे बहुत से प्रश्न, बातचीत के आधार पर आप स्वयं तैयार कर सकते हैं।

13. कविताएँ याद करने और गाए जाने के लिए हैं। पाठों के बीच-बीच में जहाँ उपयुक्त समझें किसी एक कविता का चुनाव करके अभिनयात्मक ढंग से बच्चों को याद करवाएँ। स्वरचित या चयनित कुछ अन्य शिशु गीत और कविताएँ भी बच्चों को याद करवाएँ।

14. पढ़ने का अभ्यास कराने में कार्डों पर लिखे गए वर्ण और शब्द आपकी बहुत सहायता करेंगे। कम से कम शुरू के पाँच पाठों में प्रत्येक वर्ण और शब्द को कार्डों पर अवश्य ही मोटी कलम से लिख लीजिए। इनके प्रयोग से आप न केवल पढ़ने का अभ्यास अधिक अच्छी तरह करा सकेंगे अपितु बच्चों की बोध परीक्षा भी सुगमतापूर्वक हो सकेगी।

15. कहानी वाले सभी पाठों में कुछ मुख्य विचार उभरकर सामने आते हैं। बच्चों में सुनने और बोलने की योग्यता का विकास करने हेतु उनसे कहानी के बारे में प्रश्न पूछें। इससे बच्चों की तर्कशक्ति भी बढ़ेगी।

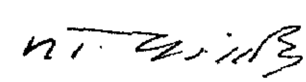
विषय सूची

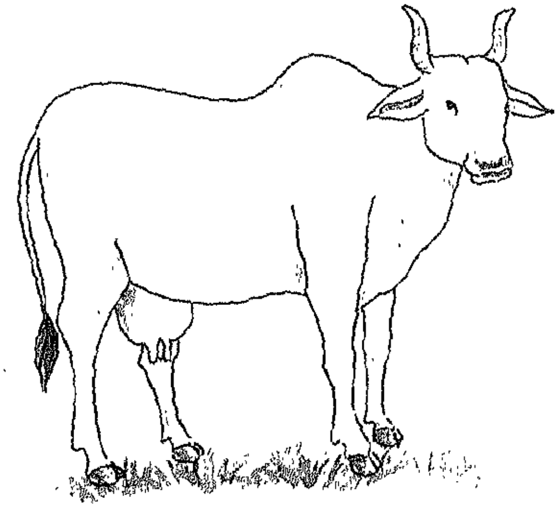
गांधी जी का जन्तर

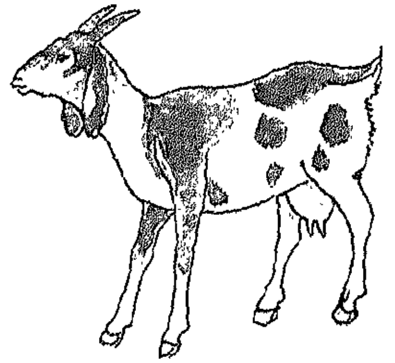
तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

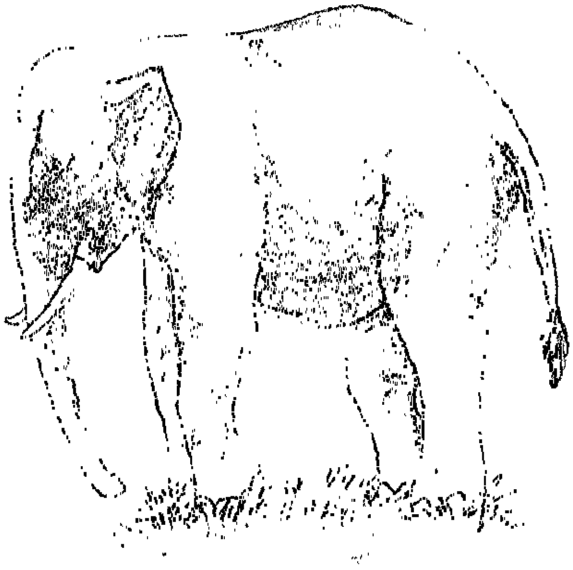
तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

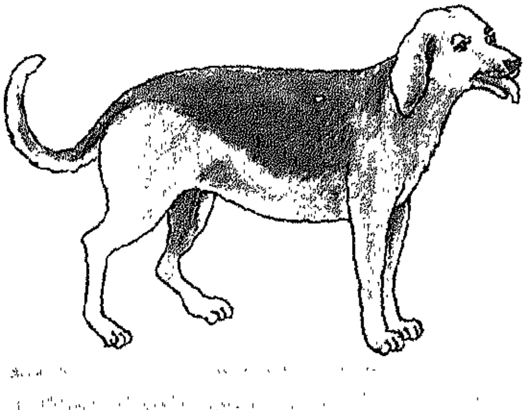








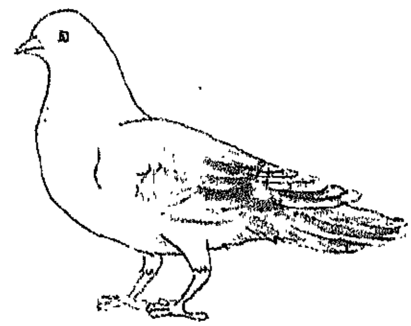




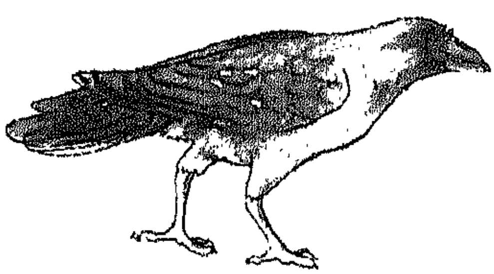


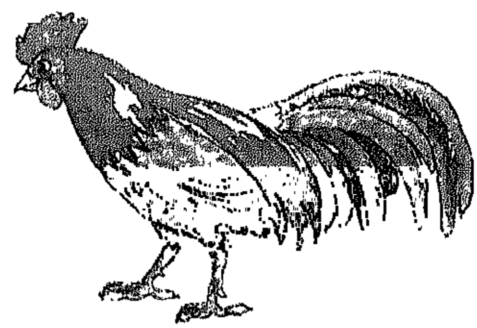
अध्यापन संकेत : इस पृष्ठ पर कुछ परिचित पशुओं के चित्र हैं। प्रत्येक पशु के चित्र पर उँगली रखवाइए, चित्र के विषय में बात कीजिए, फिर उसके किसी एक अंग पर उँगली रखवाइए। जैसे, कहिए कि गाय के सींग पर उँगली रखो। इस अभ्यास का उद्देश्य छोटी चीज़ पर बच्चों का ध्यान केंद्रित करना है। प्रत्येक पशु के बारे में प्रश्न पूछिए – गाय हमें क्या देती है ? हाथी के कान कैसे होते हैं? वह अपनी सूँड़ से क्या करता है ? कुत्ता और बिल्ली कैसे बोलते हैं? बकरी क्या खाती है? वह कैसे बोलती है? इसी प्रकार कुछ अन्य पशुओं जैसे, बंदर, घोड़ा, शेर, भालू, ऊँट आदि के चित्र दिखाकर उनके बारे में बातचीत कीजिए। किसी के घर में कोई पालतू पशु हो तो उसके बारे में बताने को कहिए।



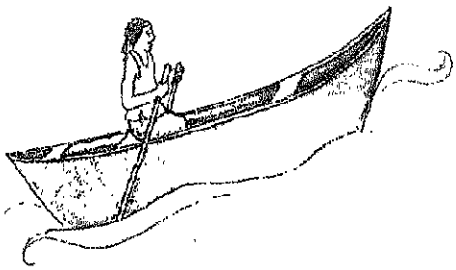


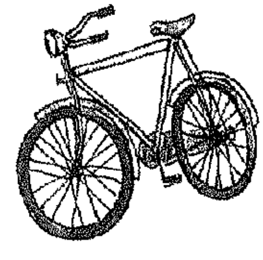


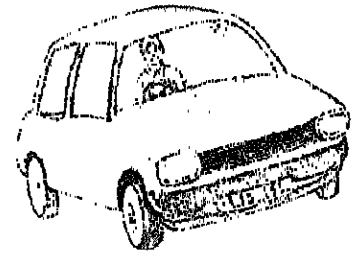


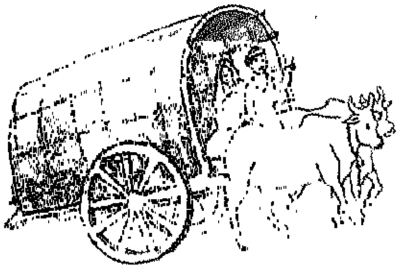


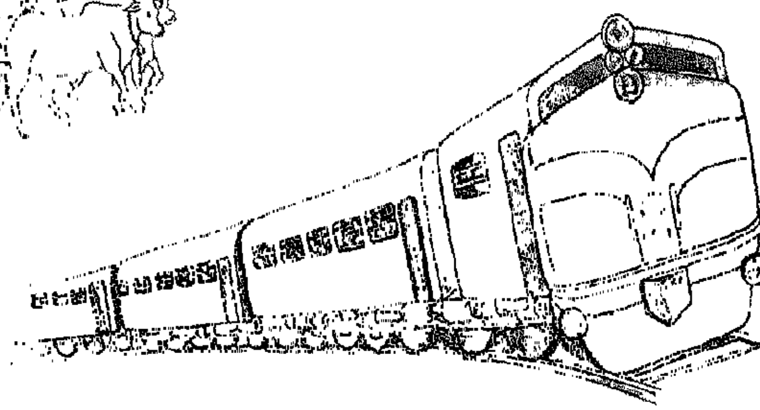
अध्यापन संकेत : इस पृष्ठ पर कुछ पक्षियों के चित्र हैं। प्रत्येक चित्र को दिखाते हुए पक्षी और उसके अंगों पर बच्चों से उँगली रखवाइए। इन पक्षियों के बारे में बातचीत कीजिए। जैसे - तोता किस रंग का है? उसकी चोंच किस रंग की है? वह क्या खाता है? कबूतर किस-किस रंग के होते हैं? वे कैसे बोलते हैं? कौआ किस रंग का है? वह कैसे बोलता है? मोर के पंख में कौन-कौन से रंग होते हैं? मोर कैसे नाचता है? मुरगा कैसे बोलता है? चित्रों की सहायता से चिड़िया (गौरैया), कोयल, बगुला, बतख, सारस, चील आदि के बारे में बातचीत कीजिए।

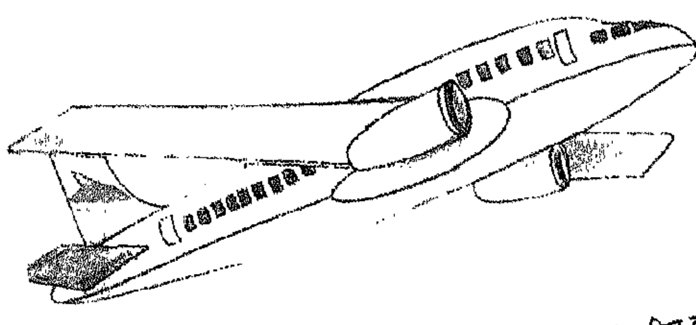






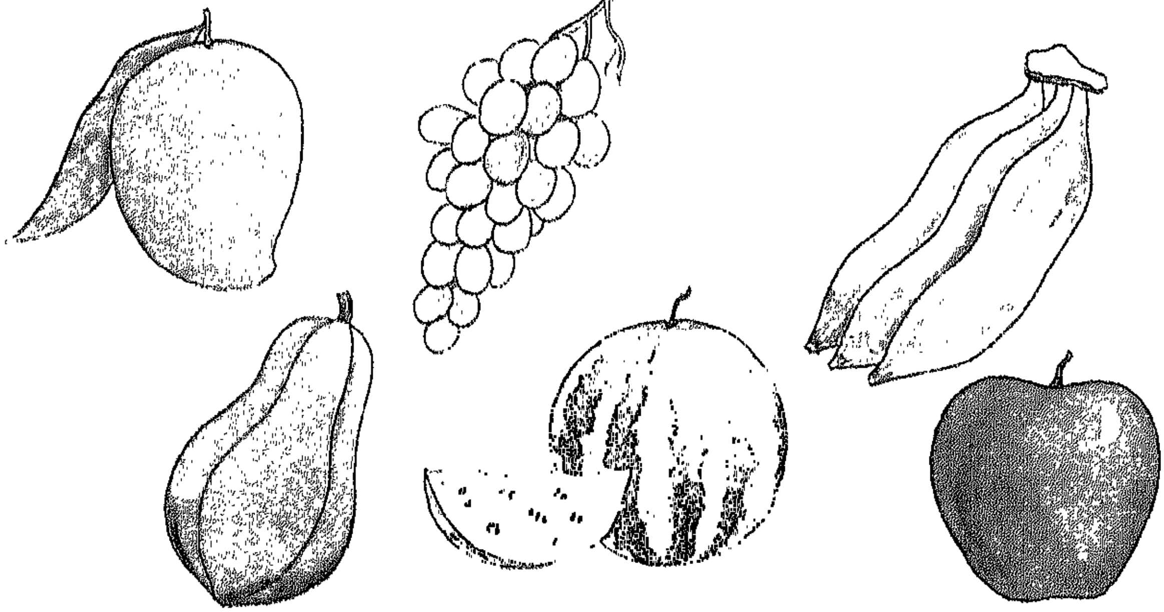


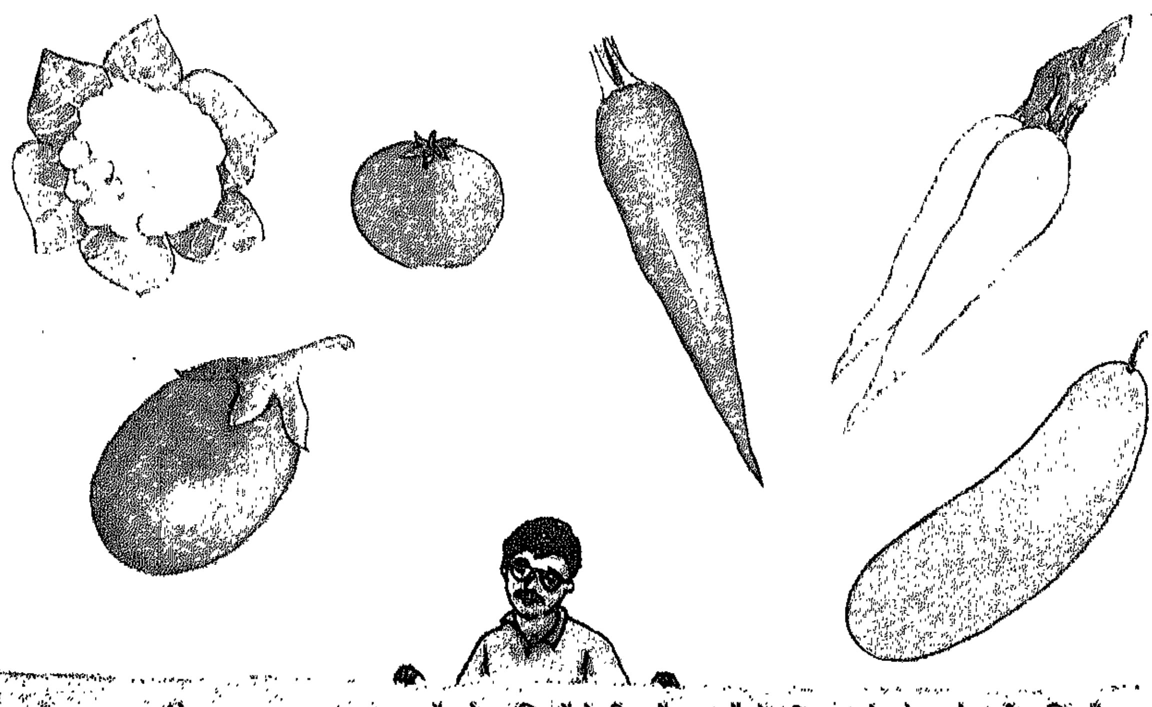






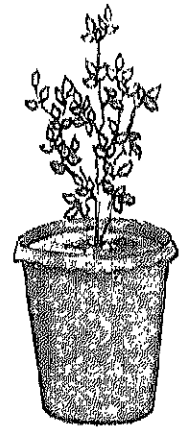
अध्यापन संकेत : इस पृष्ठ पर कुछ सवारियों के चित्र हैं। प्रत्येक चित्र को दिखाते हुए बातचीत कीजिए। किस-किस के घर में साइकिल है? साइकिल किस काम आती है? कार में कितने पहिए होते हैं? रेलगाड़ी में तुम में से कौन-कौन बैठा है? तुम रेलगाड़ी से कहाँ गए थे? बैलगाड़ी कौन खींचता है? नाव कहाँ चलती है? तुमने हवाई जहाज़ कहाँ देखा है? आदि। उनसे पूछिए – इन चित्रों में किन-किन के पहिए हैं? पहिए के बारे में बच्चों को बताइए। पानी का जहाज़, स्कूटर, बस, ताँगा, ट्रक, ट्रैक्टर के चित्र दिखाइए और उनके बारे में चर्चा कीजिए। बच्चों से कागज़ की नाव बनवाइए।

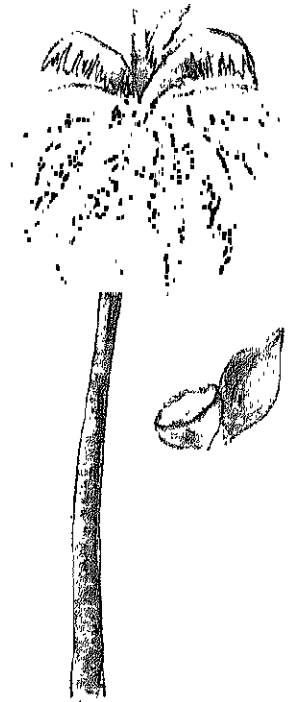




अध्यापन संकेत : इस पृष्ठ पर कुछ फलों और सब्जियों के चित्र हैं। बच्चों से पूछिए – वे कौन-कौन सी सब्जियाँ और फल खाते हैं? प्रत्येक फल और सब्जी के रूप-रंग और स्वाद के बारे में बातचीत कीजिए। बच्चों को फल, हरी पत्तेदार सब्जियाँ और गाजर, मूली जैसी कच्ची सब्जियाँ खाने को प्रेरित करें। उन्हें बताएँ कि फल और सब्जियाँ खाना हमारी सेहत के लिए बहुत जरूरी है।





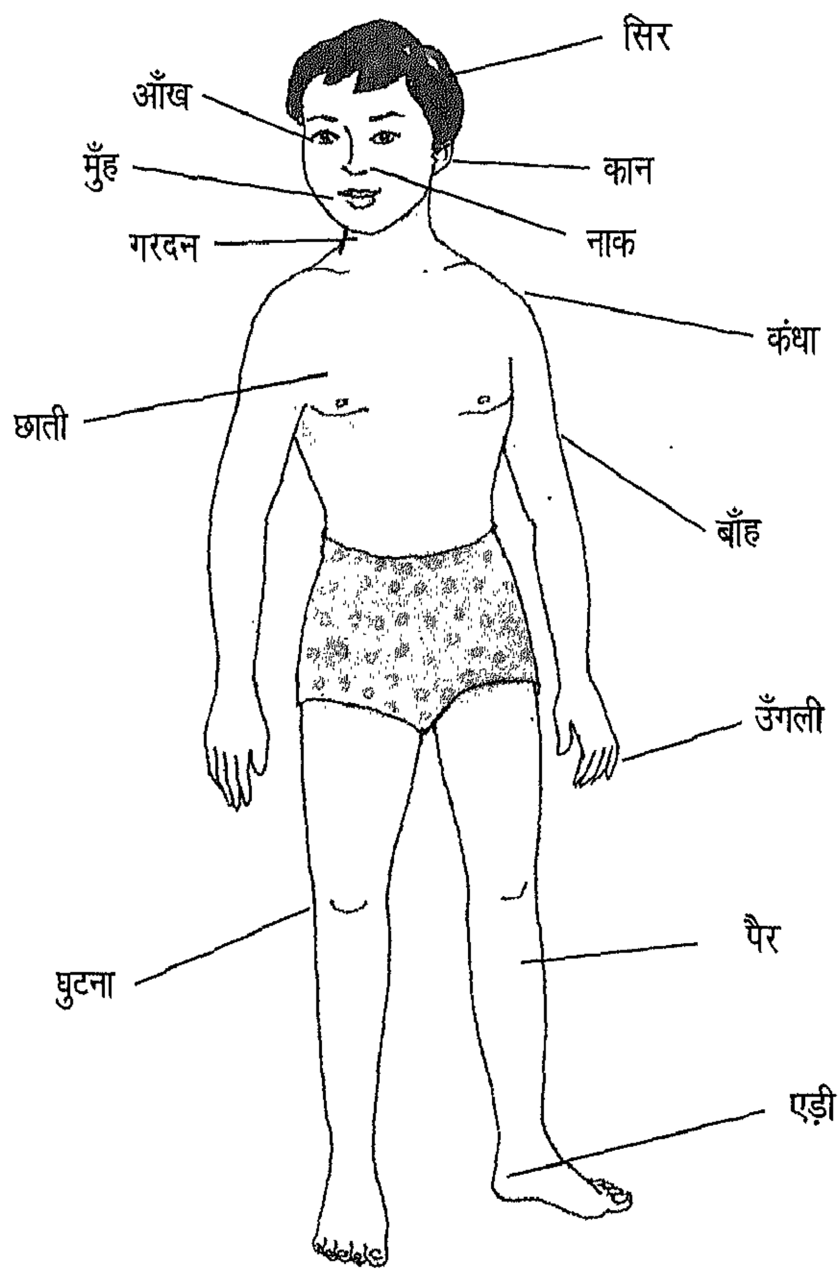






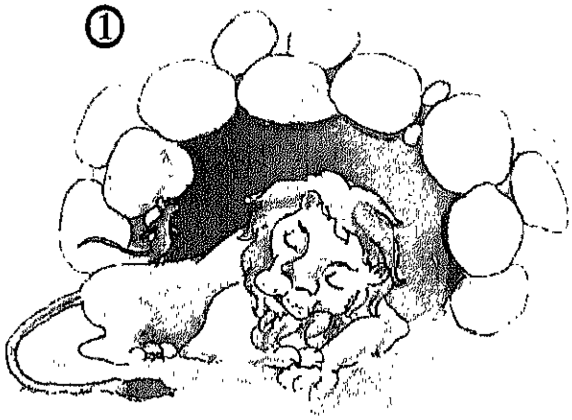


अध्यापन संकेत : बारी-बारी से प्रत्येक चित्र को दिखाइए और पूछिए – तुमने कौन-कौन से पेड़-पौधे देखे हैं? पेड़ों से हमें क्या-क्या मिलता है? फूलों के कुछ पौधों के नाम बताओ। पौधे और पेड़ में क्या अंतर है? बेल और पौधे में क्या अंतर है? कुछ बेलों के नाम बताओ। कुछ ऐसे पेड़-पौधों के नाम बताओ जो दवा के रूप में काम आते हैं। बच्चों को तुलसी, नीम, अदरक, हल्दी आदि की औषधीय उपयोगिता के बारे में बताइए। बच्चों को पेड़-पौधे उगाने और उनकी देखभाल करने के लिए प्रेरित कीजिए।

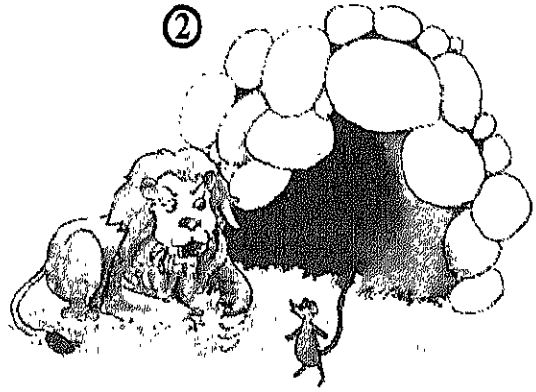


अध्यापन संकेत : बच्चों से उनके शरीर के अंगों पर बारी-बारी से उँगली रखवाकर उनके नाम पूछिए। यदि बच्चे न जानते हों तो उन्हें नाम बताइए।

①



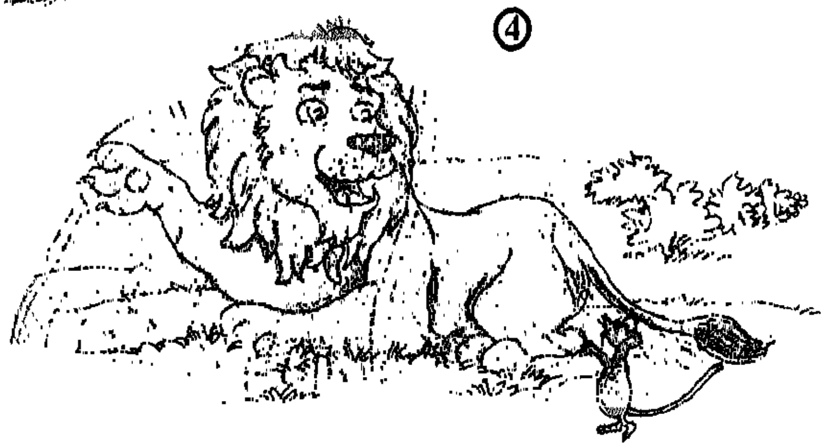
②



③



④

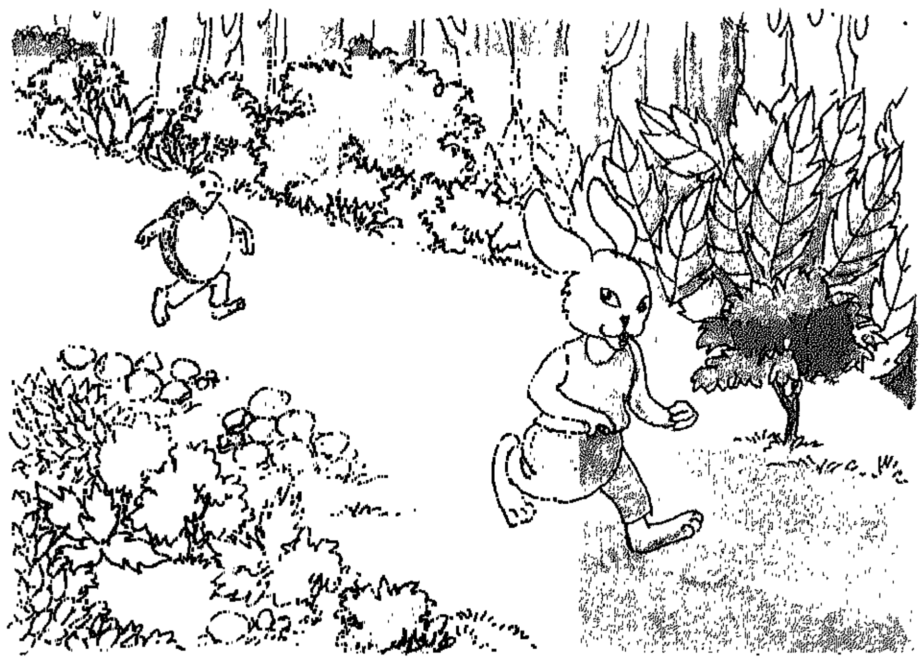


शेर और चूहा : ये चार चित्र एक प्रसिद्‌ध कहानी के विषय में हैं। पहले चित्र पर ध्यान दिलाते हुए शेर के बारे में पूछिए। बच्चों ने शेर नहीं देखा हो तो उसके बारे में बताइए। उसके दहाड़ने की आवाज़ निकलवाइए। अब चूहे पर ध्यान दिलाइए और चूहे के बारे में प्रश्न पूछिए। चूहे के द्‌वारा शेर की नींद खराब होने की बात बताइए। दूसरे चित्र में पूछिए– शेर ने क्या किया? शेर और चूहे की बातचीत नाटकीय ढंग से प्रस्तुत कीजिए। तीसरे चित्र में शेर की दशा पर ध्यान दिलाइए। चौथे चित्र में चूहे द्‌वारा शेर की मदद करने पर ध्यान दिलाइए। शेर और चूहे की पूरी कहानी अभिनयात्मक ढंग से सुनाइए। पूछिए– चूहे के माफ़ी माँगने पर शेर ने क्या किया? चूहे ने शेर की मदद कैसे की? कहानी का अभिनय करवाइए। जानवरों की कुछ और रोचक कहानियाँ सुनाइए, जैसे – शेर और खरगोश।

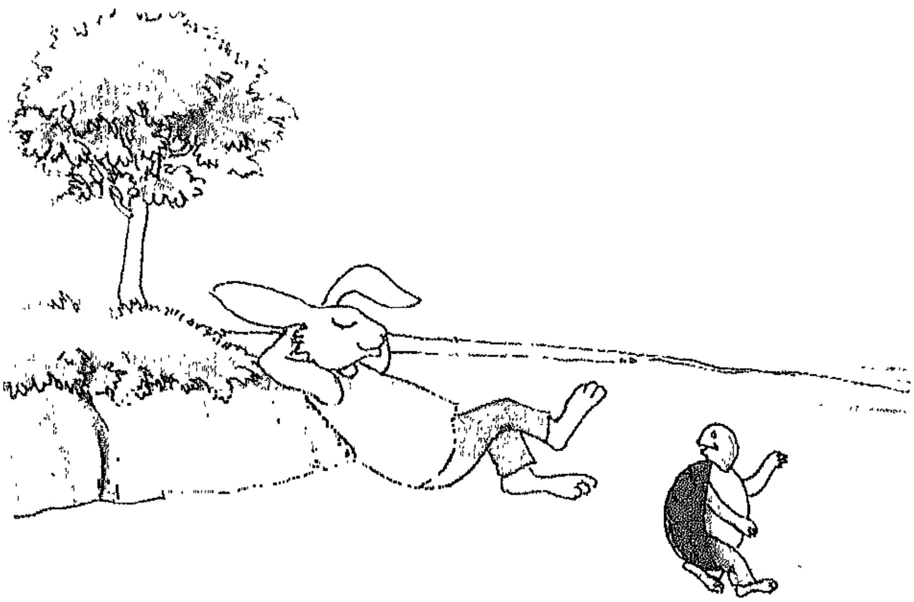
①



②

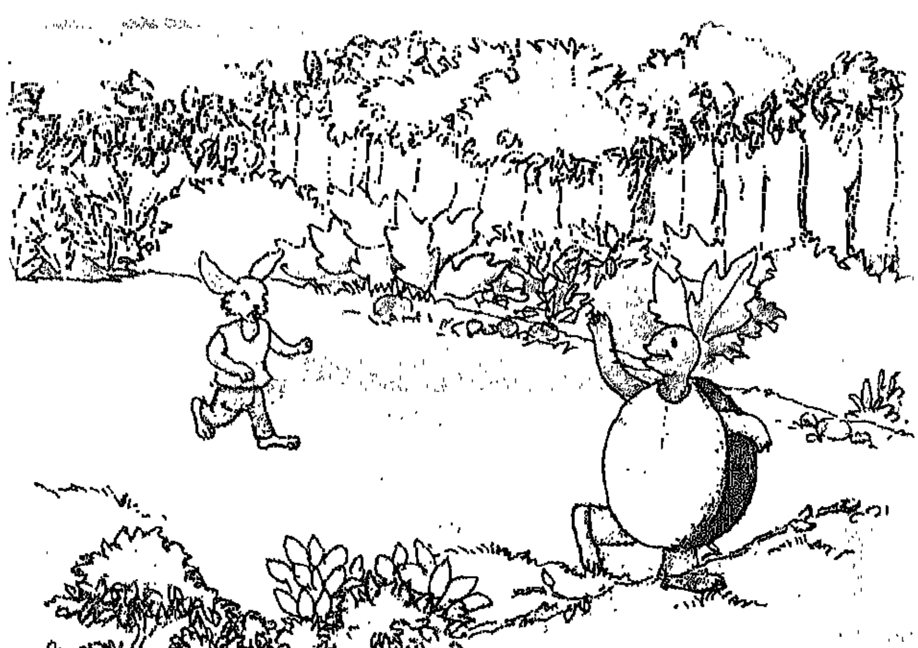


कछुआ और खरगोश : यह भी एक प्रसिद्‌ध कहानी है। पहले चित्र पर ध्यान दिलाते हुए पूछिए– इस चित्र में कौन-कौन से जानवर हैं? कछुआ और खरगोश क्या करने जा रहे हैं? दूसरे चित्र में कौन आगे है और कौन पीछे?



③

④

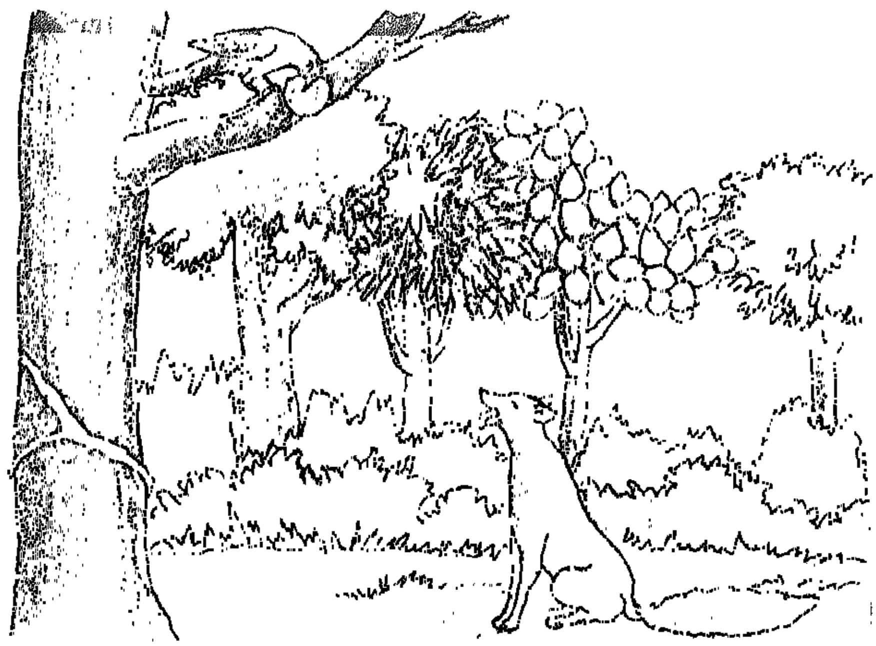


तीसरे चित्र में खरगोश क्या कर रहा है? कछुआ क्या कर रहा है? बच्चों को बताइए कि खरगोश के सो जाने पर भी कछुआ चलता ही रहा। चौथे चित्र में पूछिए– खरगोश अब कहाँ है? कछुआ कहाँ है? इस दौड़ में कौन जीता? खरगोश क्यों नहीं जीत सका? बच्चों को बताइए कि कछुआ क्यों जीता। पूरी कहानी सुनाइए और अभिनय करवाइए।

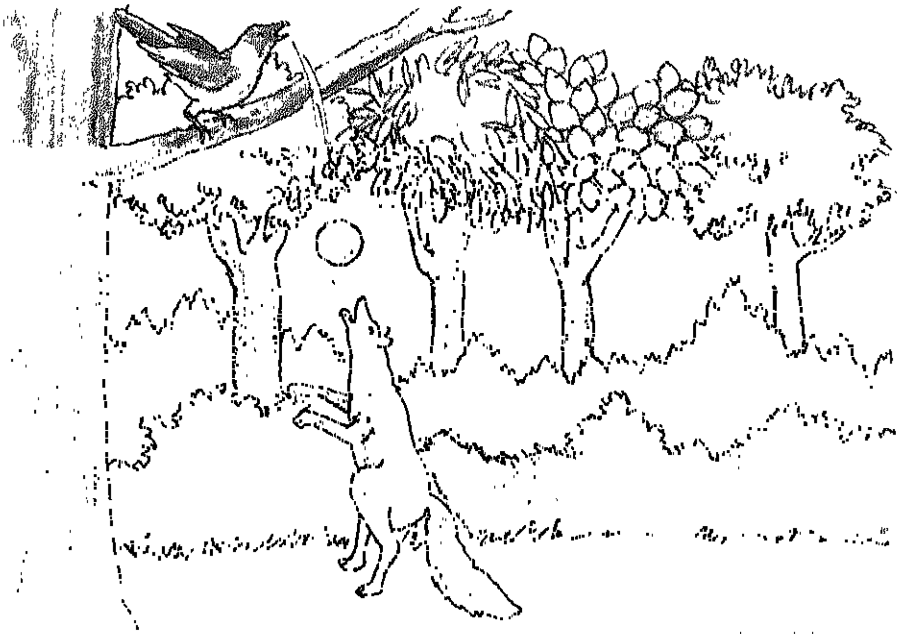


①

②



कौआ और लोमड़ी : पहले चित्र पर ध्यान दिलाते हुए प्रश्न पूछिए – कौए की चोंच में क्या है? कौआ रोटी कहाँ से लाया होगा? अब दूसरे चित्र पर बच्चों का ध्यान दिलाइए। पूछिए – रोटी लेकर कौआ कहाँ बैठ गया? देखो, इस चित्र में पेड़ के नीचे कौन है? अधिकतर बच्चों ने लोमड़ी नहीं देखी होगी। इसलिए उसके रूप-रंग के बारे में बताइए।

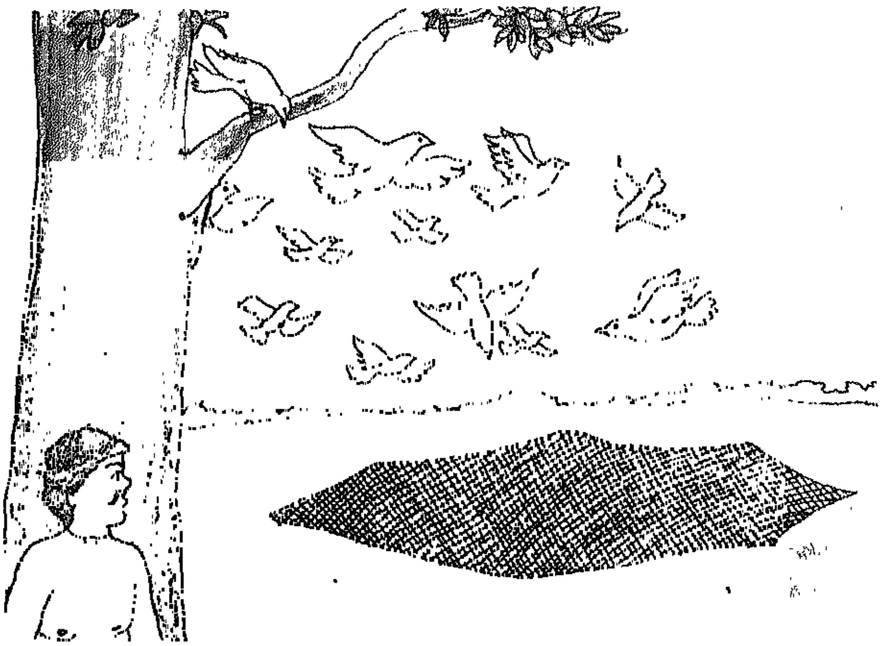


③

④

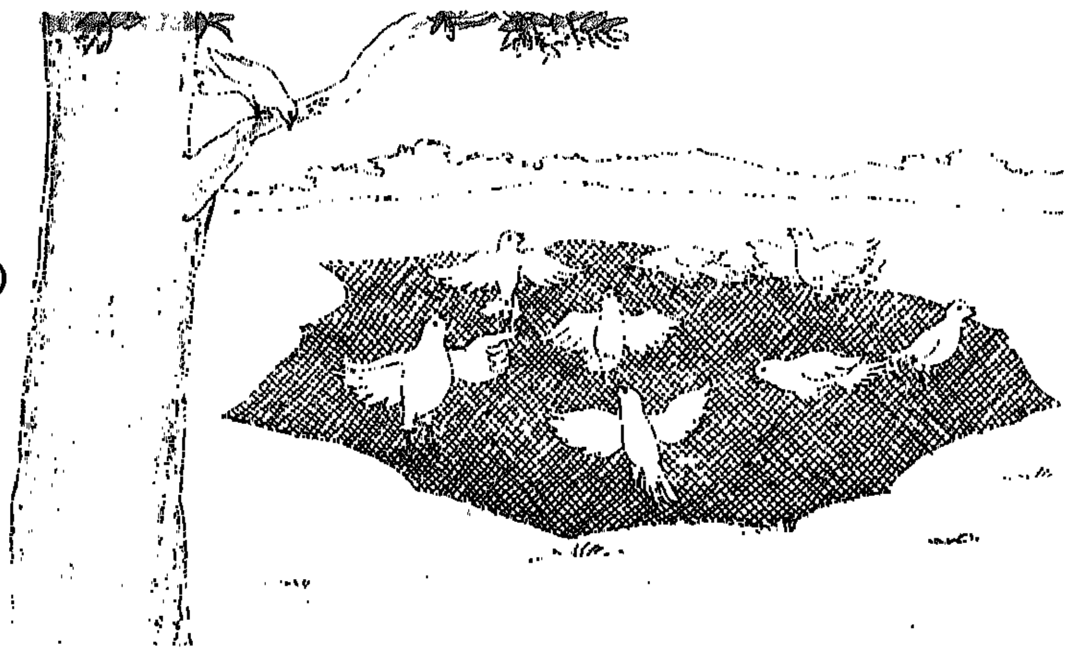


पूछिए – लोमड़ी क्या चाहती है? कौए ने क्या किया? कौए के मुँह खोलने से क्या हुआ? अंतिम चित्र पर ध्यान दिलाते हुए पूछिए – कौए ने रोटी क्यों खो दी? लोमड़ी तुम्हें कैसी लगी? पूरी कहानी सुनाइए और बच्चों से कहानी को दोहराने के लिए कहिए। 'प्यासा कौआ' कहानी सुनाइए। दोनों कहानियों के कौओं के बारे में बातचीत कीजिए।



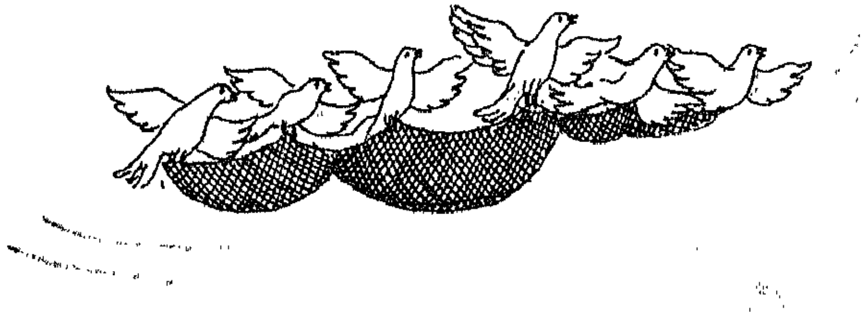
①

②



कबूतर और जाल : पहले चित्र पर ध्यान दिलाते हुए पूछिए – इस चित्र में कौन-से पक्षी हैं? वे क्या कर रहे हैं? दूसरे चित्र में वे ज़मीन पर क्यों उतर आए? वे क्या कर रहे हैं? ज़मीन पर क्या बिछा है? इस चित्र में कबूतरों की ओर संकेत करते हुए बच्चों से कहिए – यहाँ कबूतर जाल में फँस गए हैं । क्या वे उड़ सकेंगे? थोड़ी दूर बैठा बूढ़ा कबूतर उनसे

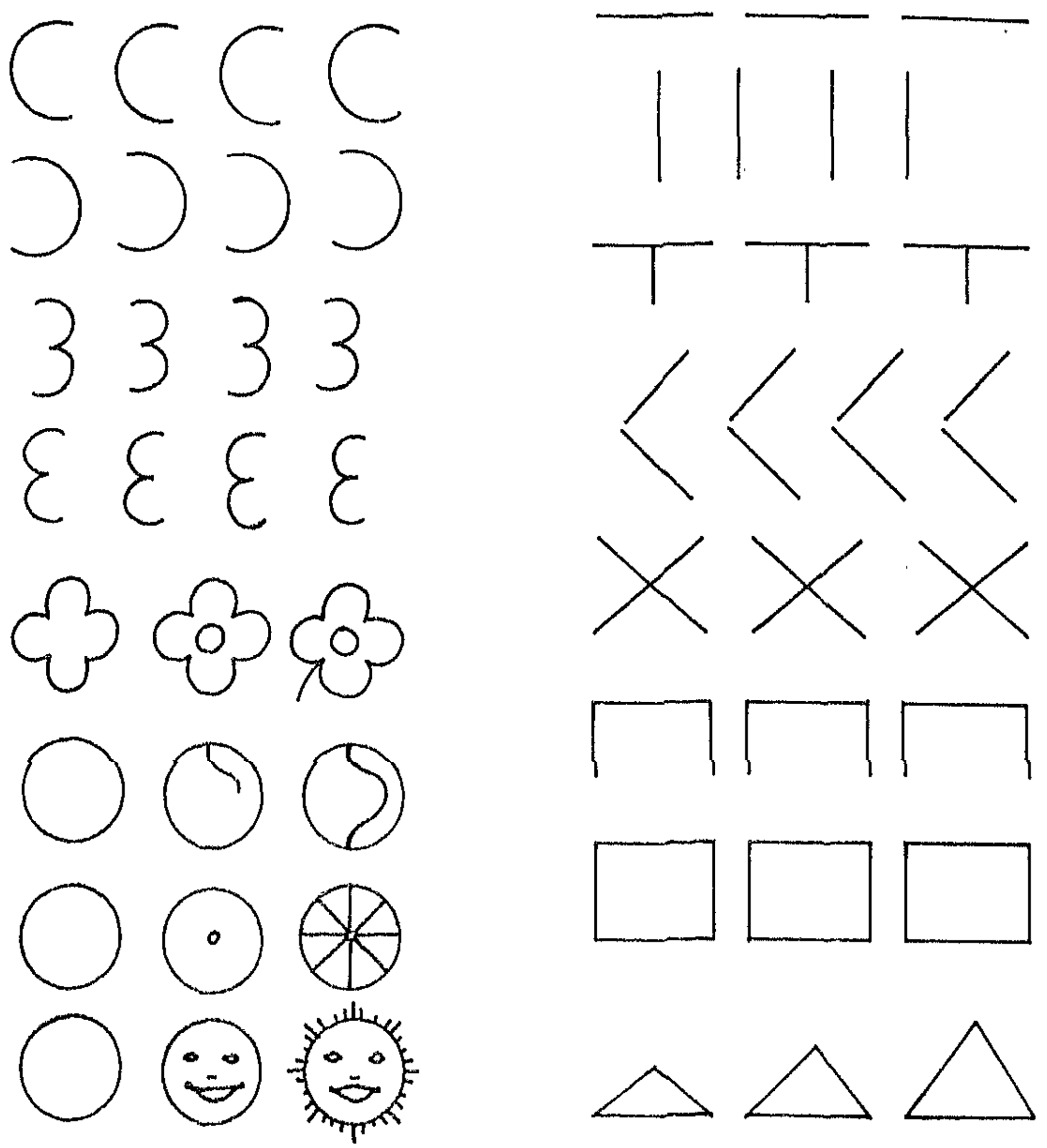
③



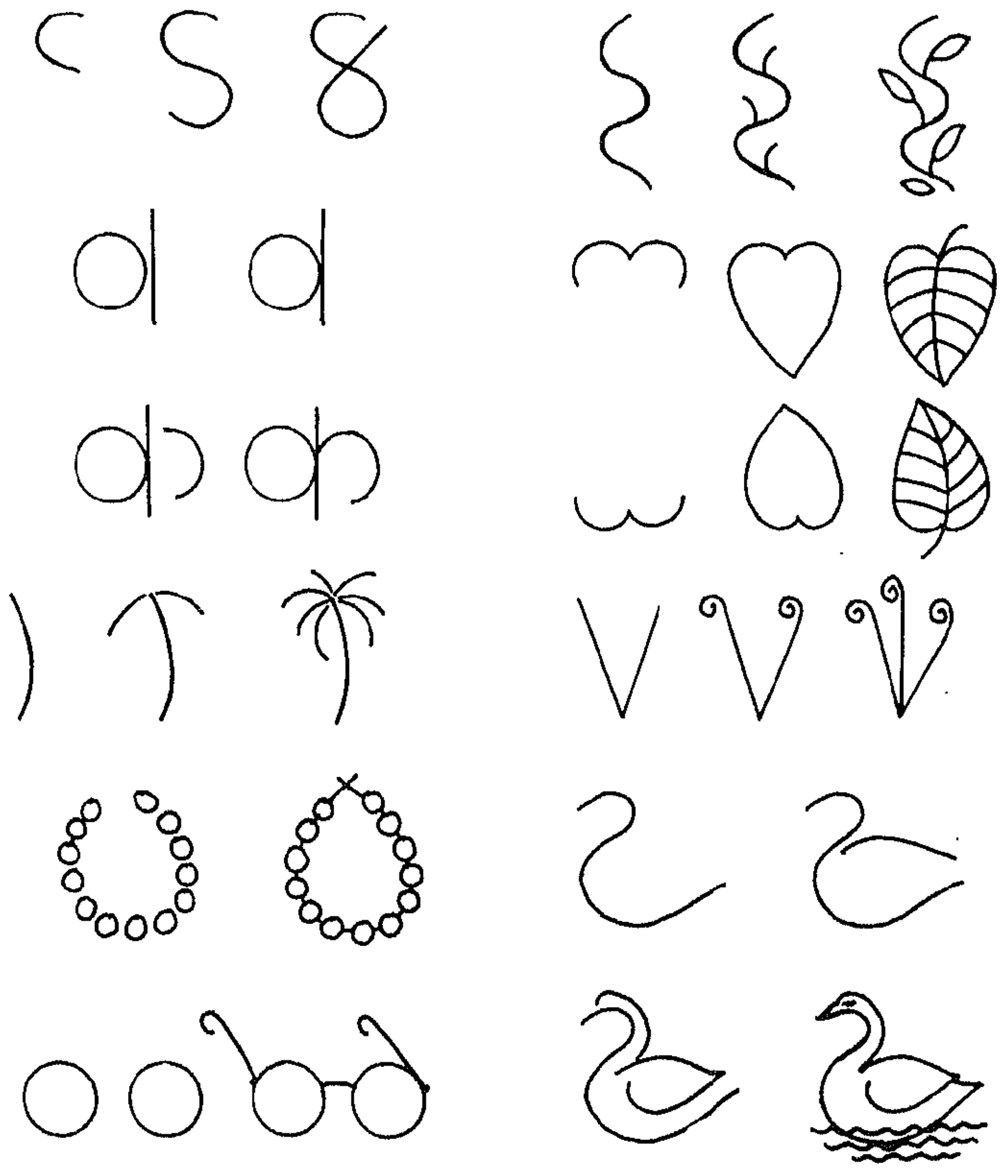
④



क्या कह रहा है? तीसरे चित्र में कबूतर क्या कर रहे हैं? चौथे चित्र के बारे में पूछिए – अब क्या हुआ? कबूतर कैसे उड़ सके? पूरी कहानी सुनाकर बच्चों को बताइए कि मिलजुल कर काम करने से सभी काम आसानी से हो जाते हैं। इस कहानी का अभिनय करवाइए। 'एकता में बल है', के बारे में कोई और कहानी सुनाइए।



अध्यापन संकेत : इस पृष्ठ पर **रेखांकन के अभ्यास के लिए कुछ आकृतियाँ** दी गई हैं, जो सरल से जटिल के क्रम में हैं। इस अभ्यास का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को लिखने के लिए तैयार करना है। इन आकृतियों का अभ्यास स्लेट, पट्टी या कागज़ पर कराया जा सकता है। बालू में उँगली या तीली की सहायता से तथा हवा में उँगली चलाकर भी इनका अभ्यास कराया जा सकता है। पहले आकृतियों के नमूने काफ़ी बड़े आकार में श्यामपट पर स्वयं बनाकर दिखाइए, तब बच्चों से बनवाइए। बच्चों में लेखनारंभ और गति-नियंत्रण की कुशलता के विकास के लिए बार-बार आकृतियाँ बनवाइए। एक आकृति के अभ्यास के बाद दूसरी आकृति लीजिए। यह अभ्यास **पृष्ठ 1** के अभ्यास के साथ ही प्रारंभ कीजिए। इसे करवाने में कई दिन लगेंगे।

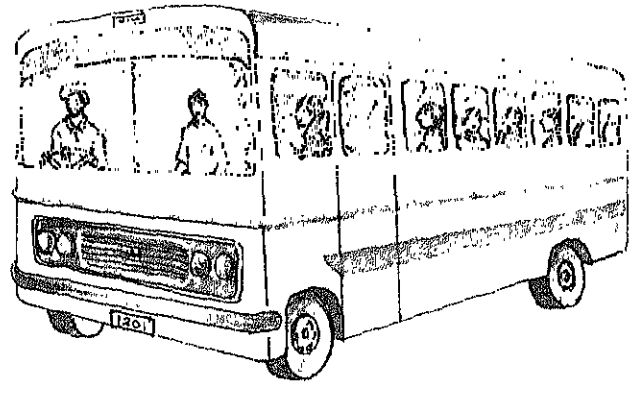


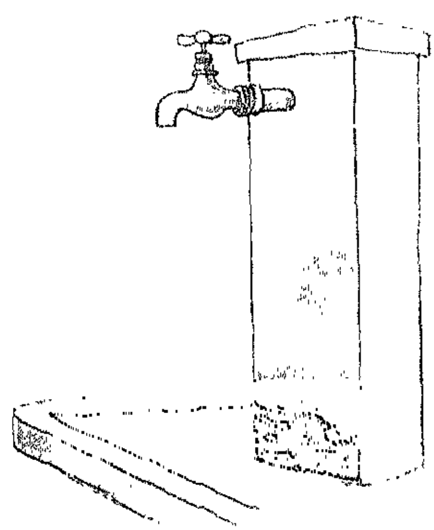
अध्यापन संकेत : इस पृष्ठ पर अपेक्षाकृत कुछ जटिल आकृतियाँ हैं, जो पहले पृष्ठ की आकृतियों के अभ्यास के बाद ली जा सकेंगी। इन आकृतियों को बनवाने का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को धीरे-धीरे देवनागरी लिपि के वर्णों की आकृतियों की ओर लाना है। इन आकृतियों को श्यामपट पर बनाइए। फिर बच्चों से ये आकृतियाँ बार-बार बनवाइए। रेखाओं को मिलाकर कुछ अन्य नमूने भी अभ्यास के लिए दिए जा सकते हैं। यदि बच्चों के पास रंग है तो रंग भरने को भी कहा जा सकता है। इस तरह का अभ्यास करने के बाद बच्चे आसानी से लिखना सीख सकेंगे। प्रारंभ से ही प्रत्येक बच्चे पर अलग-अलग ध्यान दीजिए। जिन बच्चों को बाएँ और दाएँ का अंतर करने में कठिनाई हो अथवा जिनमें गति-नियंत्रण का अभाव हो, उनकी विशेष सहायता कीजिए।

पाठ एक — ब स न ल

बस

ब स





नल

न ल

अध्यापन संकेत : बच्चों को बस का चित्र दिखाकर पूछिए – यह किसका चित्र है? चित्र पर ध्यान दिलाते हुए उसके बारे में बात कीजिए। पूछिए कि **बस** में कौन-कौन बैठा है। अब कहिए कि बस के चित्र के पास उसका नाम लिखा है – **बस**। **बस** में शुरू की आवाज़ है – ब। बच्चों से बुलवाइए – **ब**। बकरी, बतख, बरता की शुरू की आवाज़ निकलवाइए – **ब ब ब**। इसी तरह पूछिए – बस में ब के बाद कौन सी आवाज़ आ रही है – स। दो-तीन बार बुलवाइए – **स स स**। **रस, नस, बस** में **स** की आवाज़ निकलवाइए। इस पाठ में **ब**, **स**, न और ल ध्वनियों का परिचय करवाया गया है। **ब** और **स** वर्णों को श्यामपट और कार्डों पर से पढ़वाइए। यदि **ब** और स को कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़ों पर लिखकर बच्चों को बाँट सकें तो बहुत अच्छा रहेगा। फिर निर्देश दीजिए – सब बच्चे **ब** उठाकर दिखाएँ। अब **स** दिखाएँ। **ब** और **स** दोनों को साथ-साथ रखें और पढ़ें – **बस**। इसी प्रकार **न** और ल के बारे में बताइए।

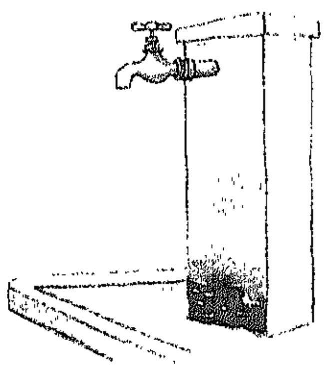
पहचानो और बोलो

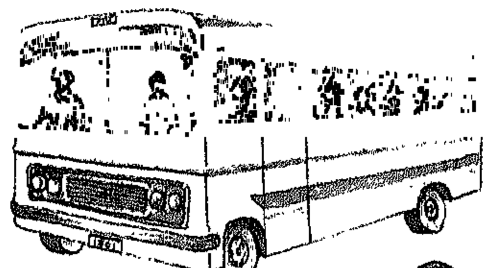
ब	स	न	ल
स	ल	न	ब

पढ़ो

बस	सब	बन
नल	बल	नस

इनके नाम ऊपर खोजो





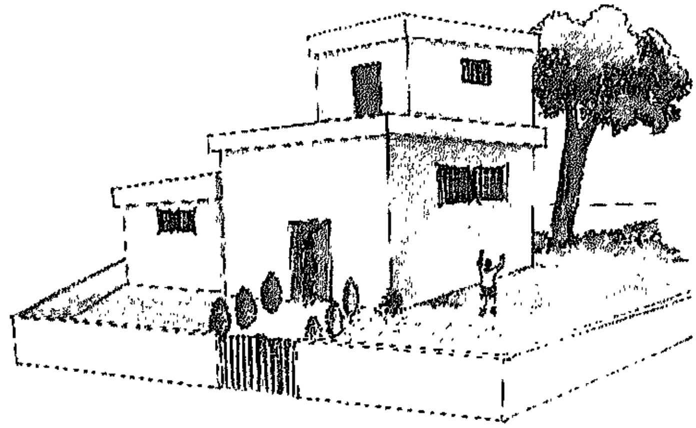


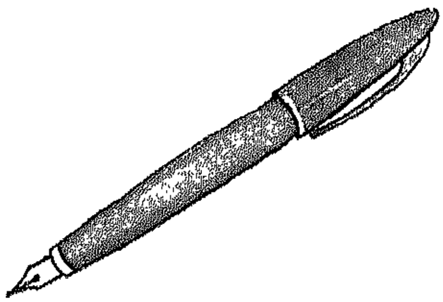
अध्यापन संकेत : चारों वर्णों को श्यामपट पर लिखकर बारी-बारी से पहचान करवाइए। इसी प्रकार **बस** और **नल** शब्दों को श्यामपट और कार्डों पर से बार-बार पढ़वाइए। बच्चों से सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से ऊँची आवाज़ में बुलवाइए – **ब-ब-ब, स-स-स, न-न-न, ल-ल-ल**। इससे इन ध्वनियों पर बच्चों का ध्यान जाएगा और उच्चारण की शुद्धता बढ़ेगी। इन वर्णों के योग से बनने वाले नए शब्दों को श्यामपट और कार्डों पर से पढ़वाइए। अब पुस्तक से पढ़वाइए। **'बस'** के उच्चारण पर विशेष ध्यान दीजिए। देखिए कि कुछ बच्चे बश या बछ तो नहीं बोल रहे हैं। बच्चों से पूछिए – किन-किन शब्दों की शुरू की आवाज़ एक जैसी है? **बस** और **बल** में **ब** तथा **नल** और **नस** में **न**। जब तक इन चारों वर्णों की पूरी तरह पहचान न हो, आगे न बढ़ें।

पाठ दो — घ र क म

घर

घ र





कलम

क ल म

पहचानो और बोलो

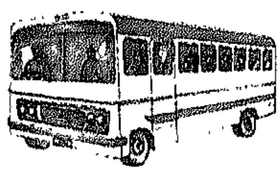
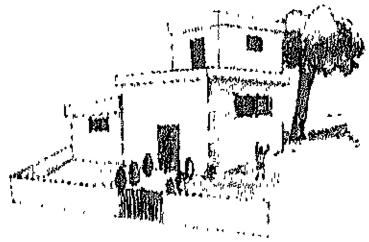
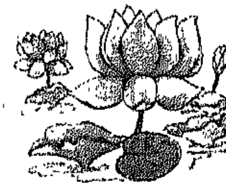
घ	र	क	म
न	ब	स	ल

अध्यापन संकेत : घर के चित्र के पास उसका नाम लिखा है। अब घर के बारे में चर्चा कीजिए। बताइए कि लोग अलग-अलग तरह के घरों में रहते हैं। कुछ उदाहरण दीजिए तथा चित्र दिखाइए। पिछले पाठ की तरह घर में शुरू की आवाज़ पर ध्यान दिलाइए और घड़ा, घड़ी से **घ** ध्वनि निकलवाइए। इसी तरह **र** का परिचय दीजिए। मटर, कार, अनार से **र** ध्वनि निकलवाइए। शुरू में आए **र** वाले शब्दों **रथ, रस्सी** से भी **र** ध्वनि निकलवाइए। **घ** और **र** की पहचान श्यामपट और कार्डों से करवाइए। फिर कलम के चित्र को दिखाकर उसी तरह **क, ल, म** सिखाइए। वर्णों को श्यामपट और कार्डों पर से अलग-अलग पढ़वाइए। बच्चों से **कलम** के बारे में बात करते हुए उन्हें बताइए – कलम लिखने के काम आती है। पहले तख्ती पर लिखते समय इसका प्रयोग होता था। पेन को भी कलम कहते हैं। अब पिछले पाठ में सिखाए गए वर्णों में मिलाकर **घ र क म** की पहचान करवाइए। जैसे कल।

पढ़ो

घर	कर	कब	कम
मन	नल	बस	रस
कलम	नमक	कमल	

इनके नाम ऊपर खोजो

लिखो

- न न । - म म

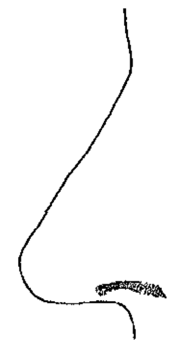
ʲ र र ० व ब ब

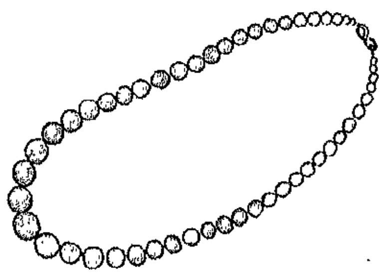


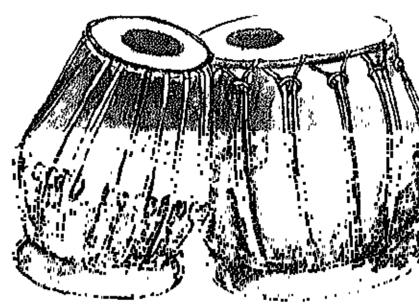
अध्यापन संकेत : सभी शब्दों को श्यामपट और कार्डों पर से पढ़वाइए। रस और नमक के बारे में बात कीजिए। बच्चों से उन शब्दों को पढ़ने को कहिए, जिनमें क वर्ण आया हो। इसी प्रकार अन्य वर्णों वाले शब्दों को चुनने को कहिए। इससे बच्चे शब्द के प्रारंभ, मध्य और अंत में किसी वर्ण विशेष को पहचान सकेंगे। इस पाठ से लिखने का अभ्यास भी प्रारंभ हो रहा है। कलम, स्लेट, चाक और पेंसिल को पकड़ने तथा बैठने का सही ढंग छात्रों को बताइए। 'लिखो' के अंतर्गत दिखाए गए ढंग से प्रत्येक वर्ण को श्यामपट पर लिखिए। फिर छात्रों से वैसा ही लिखने को कहिए। एक वर्ण का अभ्यास हो जाने पर दूसरा वर्ण लीजिए।

पाठ तीन ा ा









पहचानो और बोलो

त	क	र	घ	म	स
त	ता	ब	बा	र	रा

अध्यापन संकेत : चित्रों के साथ दिए शब्दों को श्यामपट और कार्डों से पढ़वाइए। कान, नाक, माला और तबला शब्दों में **का, ना, मा, ला** तथा **त** के उच्चारण पर बल दें। जैसे **क का, न ना, म मा, त ता।** इनको बार-बार पढ़वाइए, ताकि बच्चे इन्हें अलग-अलग पहचानकर उच्चारण कर सकें। अब तक पढ़ाए गए सभी वर्णों का **ा** के साथ अभ्यास करवाइए। इन जोड़ों (क का आदि) की ध्वनियों का स्पष्ट उच्चारण करना सिखाइए। अभी यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि '**ा**' आ की मात्रा है। केवल उसकी पहचान करवा कर उसका सही उच्चारण करना काफ़ी है।

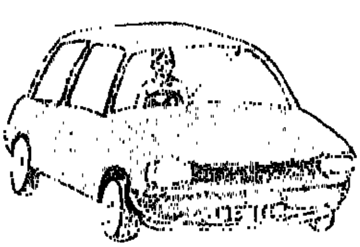
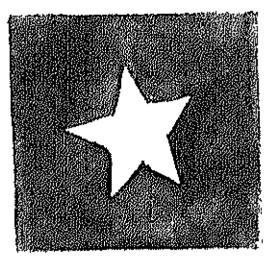
बच्चों से अपने कान पर हाथ रखने को कहिए, फिर नाक पर। इन शब्दों को फिर जल्दी-जल्दी बदल-बदल कर बोलिए और बच्चों को शब्द के अनुसार हाथ रखने को कहिए। कभी-कभी उसी शब्द को दोहरा दीजिए। इससे बच्चे शब्दों की ध्वनियों पर ध्यान देना सीखेंगे। माला और तबला के बारे में बात कीजिए।

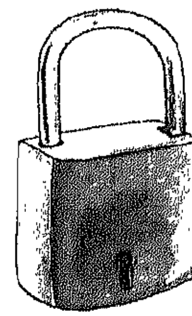
पढ़ो

रात	नाक	कान	घास
तारा	माला	कार	लाल
कमरा	बालक	बारात	ताला

काम कर। माला बना।

इनके नाम ऊपर खोजो



लिखो

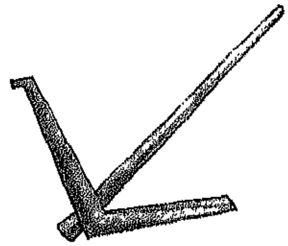
ा	त	त	र	९	स	स
०	व क	क	ए	ए	ल	ल
र	र।	रा	म	म	म।	मा



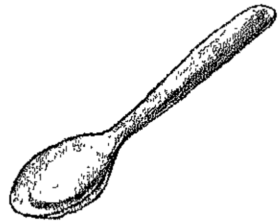
अध्यापन संकेत : 'पढ़ो' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए शब्दों को श्यामपट और कार्डों पर से पढ़वाइए। इनमें से क्रमशः ल, स, क, त वर्णों वाले शब्दों को चुनने के लिए कहिए। इन ध्वनियों से आरंभ होने वाले कुछ और शब्द बनाने को कहिए। तारा, ताला, घास आदि के बारे में बात कीजिए। लाल, काला और अन्य रंगों की चीज़ें दिखाने को कहिए। ध्यान रखिए कि बच्चे शब्दों के नीचे दिए गए वाक्यों को रट कर न बोलने लगें। र और स की बनावट में संबंध स्पष्ट कीजिए। माला किन-किन चीज़ों से बनाई जा सकती है ? बच्चों से माला बनवाइए। कुछ बच्चे घर से भी माला बनाकर ला सकते हैं।

पाठ चार

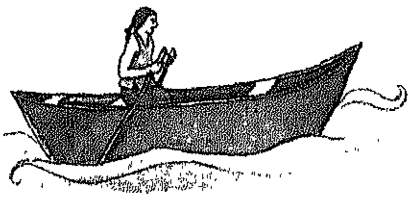
ह च द व



हल



चमचा



नाव



दवात

पहचानो और बोलो

व	च	द	ह	ल
दा	वा	हा	चा	ता
सा	घा	बा	ला	का

अध्यापन संकेत : हल और चमचा किस काम आते हैं? दवात किस काम आती है? दवात लाकर दिखा सकें तो अच्छा है। बच्चों को नाव के बारे में बताइए। पूछिए – नाव में आखिरी आवाज़ क्या है? व ध्वनि से बनने वाले शब्द बुलवाइए।

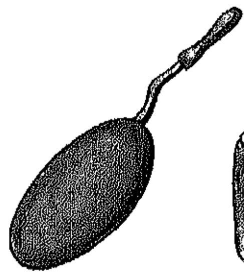
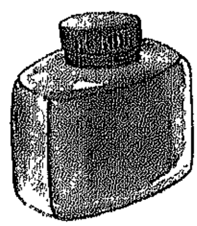
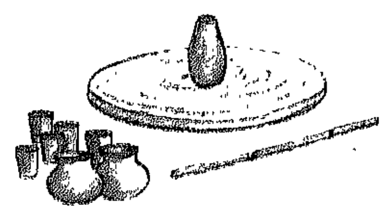
पहले ह, च, द, व वर्णों को अलग-अलग और फिर शब्दों में मिलाकर पढ़वाइए। ब और व को बार-बार सही बुलवाकर उनका अंतर स्पष्ट कीजिए। द दा, व वा, ह हा, च चा, का उच्चारण करवाते समय ध्यान रखें कि बच्चे सीखे गए सभी वर्णों के साथ 'ा' लगाकर उसे ठीक ढंग से बोलना सीखें। कम-काम, हल-हाल, कर-कार, चल-चाल और बल-बाल शब्दों को श्यामपट पर लिख कर पढ़वाइए।

पढ़ो

हम	दवा	चाक	नाच	बादल
हरा	वन	तवा	दवात	चावल

घर चल । कहना मान ।

इनके नाम ऊपर खोजो

लिखो

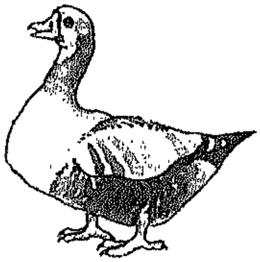
० व व - च च

घ घ । द द

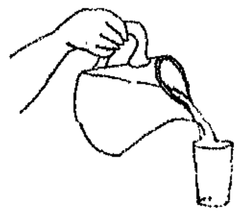
का ला चा दा वा घा हा

अध्यापन संकेत : 'पढ़ो' के अंतर्गत लिखे सभी शब्दों को पढ़वाइए। इन शब्दों में से **ह, च, द, व** की पहचान करवाइए। हवा, हरा, चना, चल, दस, दाल, दाना, दादा, वह, घाव, तवा, दवात आदि शब्द श्यामपट्ट पर लिखकर पढ़वाइए। पूछिए – बच्चे कौन-कौन सी दालें खाते हैं? दवा की ज़रूरत कब पड़ती है? दवा कहाँ मिलती है? इसी तरह चमचा, दवात, नाव, चावल के विषय में बात कीजिए। लिखने में **ब** और **व** में अंतर स्पष्ट कीजिए। बच्चों से कागज़ की नाव बनवाइए। पुस्तक के अंतिम पृष्ठों पर दी गई कविताओं में से **नाव** की कविता सिखाइए।

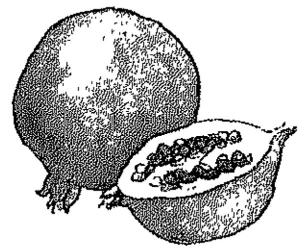
पाठ पाँच — ख ज े अ



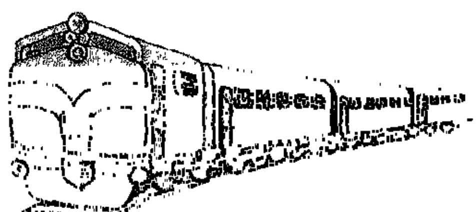
बतख



जल



अनार



रेल



केला

पहचानो और बोलो

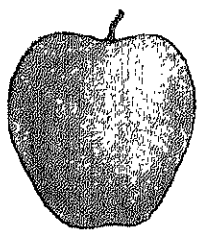
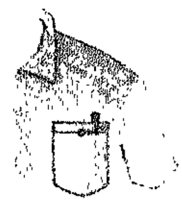
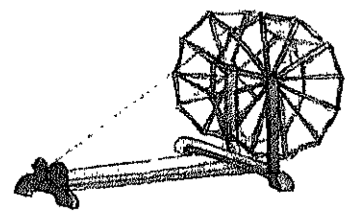
ख	ज	अ	रे	क	से
ख	खे	ज	जे	द	दे
म	मा	मे	न	ना	ने

अध्यापन संकेत : नए लिपि चिह्नों की पहचान करवाइए। बतख की आखिरी आवाज़ पूछिए। ख से बनने वाले शब्द बुलवाइए। सब-सेब, जल-जेल, बल-बेल, खत-खेत, जब-जेब शब्दों का बार-बार उच्चारण करवाकर 'े' का प्रयोग स्पष्ट कीजिए। अभी यह न कहिए कि यह ए की मात्रा है। ख की बनावट पर विशेष ध्यान दिलाइए ताकि लिखते समय र और व का भ्रम न हो। पहचानो और बोलो अभ्यास करवाइए। चित्रों में दी गई चीज़ों के बारे में बात कीजिए। रेल की सवारी किस-किस ने की है? रेल कैसे चलती है? अब तक सीखे गए वर्णों के साथ ा और 'े' लगाकर इनका अभ्यास कराइए– **क का के, ख खा खे** आदि।

पढ़ो

जल	अब	सेब	अमर	बेर
अनार	खेल	अदरक	जाल	खेत
चरखा	मेला	करेला	जेब	सवेरा
केला	केलेवाला	बाजा	बाजेवाला	

इनके नाम ऊपर खोजो

लिखो

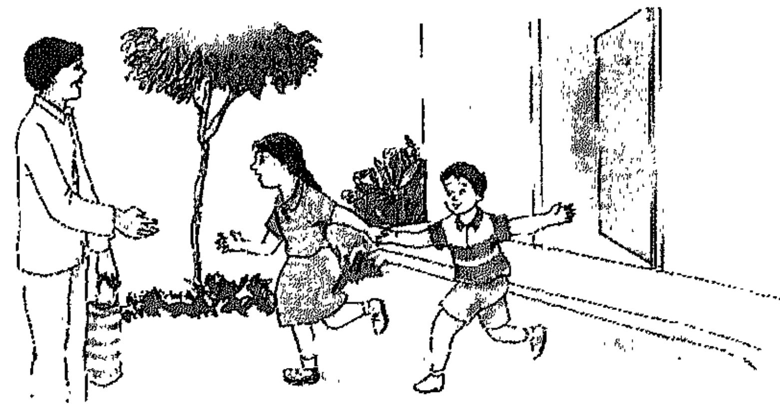
ख   ज   अ   रे   ने   के

अब   नल   चल   जेब



अध्यापन संकेत : सभी शब्द श्यामपट पर लिखकर या कार्डों की सहायता से पढ़वाइए। बाजा, अनार, खेल, रेल, खेत, जेब, मेला तथा बाजेवाले के बारे में चर्चा कीजिए। उन शब्दों को बुलवाइए जिनमें **ज, ख, अ** वर्ण आए हों फिर **ब, ल, र** वर्णों वाले शब्दों को चुनवाइए। पूछिए कि वे कौन-कौन से शब्द हैं जिनमें **मे, के, रे** की आवाज़ है, नए वर्णों को क्रमिक चरणों में लिखने का अभ्यास करवाइए। इस पाठ से वर्णों को लिखने के लिए विभिन्न चरण नहीं दिए गए हैं। उन्हें अभ्यास पुस्तिका की सहायता से स्वयं करवाइए। इस पाठ से शब्दों के लिखने का अभ्यास आरंभ किया गया है। शब्दों को लिखते समय ध्यान दीजिए कि वर्णों के बीच सही दूरी हो, उनका आकार उचित हो और उनकी शिरोरेखा जुड़ी हो। केले और अनार के चित्र बनवाइए।

मेला



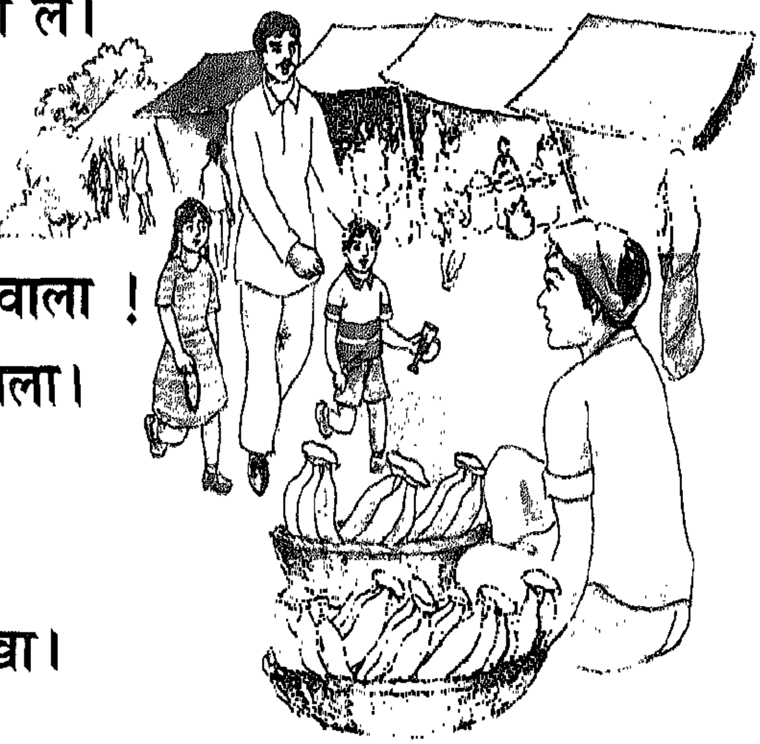
मदन, मेले चल।
देर मत कर।
कमला, मेले चल।
देर मत कर।



अरे, वह बाजेवाला।
बाजेवाले, बाजेवाले,
बाजा दे।
वह बाजा दे।
ले, बाजा ले।
ले कमला, बाजा बजा।

अध्यापन संकेत : यह पाठ सीखे हुए वर्णों और शब्दों के पढ़ने के अभ्यास के लिए है। इसमें किसी नए लिपि चिह्न का प्रयोग नहीं किया गया है। ध्यान दीजिए कि बच्चे पढ़ते समय शब्द को समग्र रूप में पढ़ें। मदन और कमला नामक दो बच्चे, जो भाई-बहिन हैं, पिता जी के साथ मेले गए हैं। ये दोनों पात्र आगे के कई पाठों में आएँगे। बच्चों से पूछिए – क्या तुमने कोई मेला देखा है? मेले में तुमने क्या-क्या देखा? क्या किया? वहाँ से क्या लाए? आदि। कोई मेला लगने वाला हो तो उसके बारे में चर्चा कीजिए। विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए पाठ का आदर्श वाचन कीजिए जिससे अनुकरण वाचन करते समय बच्चे भी इनका ध्यान रख सकें।

मालावाले, वह माला दे।
लाल माला दे।
कमला, लाल माला ले।

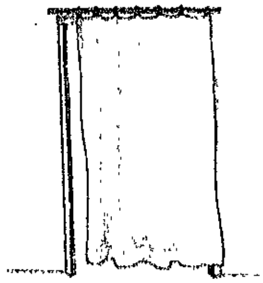


अरे, देख वह केलेवाला !
मदन, देख, केलेवाला।
केलेवाले, केले दे।
चार केले दे।
ले कमला, केला खा।
मदन, केला खा।

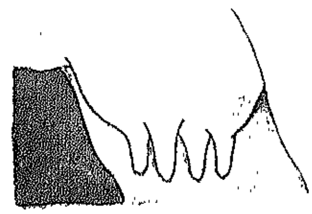


अध्यापन संकेत : पाठ का थोड़ा-थोड़ा अंश बारी-बारी से सभी बच्चों से ऊँची आवाज़ में पढ़वाएँ। इसमें कोई शब्द नया नहीं है, इसलिए यदि बच्चों ने पिछले पाठ भली प्रकार सीख लिए हैं तो उन्हें इसके पढ़ने में कठिनाई नहीं होगी। शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। जिन वाक्यों के बीच में अधिक स्थान छोड़ा गया है वहाँ बातचीत का प्रसंग बदल गया है। मदन ने बाजा पहले कमला को दिया। इससे बहिन-भाई के प्यार और मिलजुल कर खेलने की भावना उभरती है। इस ओर बच्चों का ध्यान दिलाइए। बच्चों से पूछिए – मेला देखने कौन-कौन गया? मदन ने मेले से क्या खरीदा? कमला ने मेले से क्या खरीदा?

पाठ सात



परदा



थन



तोता



मोर

पहचानो और बोलो

प	थ	मो	तो	
पा	था	जा	सो	रे
दो	लो	खो	थे	हो
ल	ला	ले	लो	से

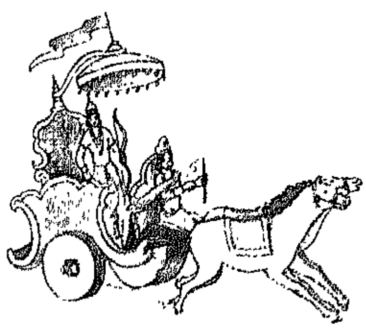
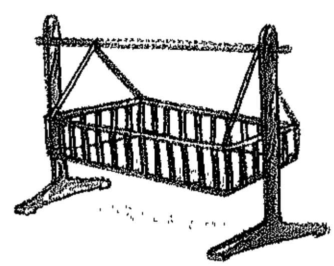


अध्यापन संकेत : चित्र दिखाकर प्रत्येक चित्र का नाम बुलवाइए। **थ** के उच्चारण पर विशेष ध्यान दीजिए। **परदा** और **थन** के बारे में बात कीजिए। तोता, मोर और कुछ अन्य पक्षियों के भोजन, आवास और शरीर की बनावट के बारे में बच्चों से बातचीत कीजिए। **ल ला ले लो** की तरह कुछ अन्य व्यंजनों का इन मात्राओं के साथ श्यामपट पर लिखकर अभ्यास कराइए।

पढ़ो

परदा	पान	पालक	अपना	पालना
रथ	नथ	हाथ	साथ	माथा
थन	थाल	बेल	दो	चलो
बोतल	सोना	खोलो	बोलो	खेलो

इनके नाम ऊपर खोजो

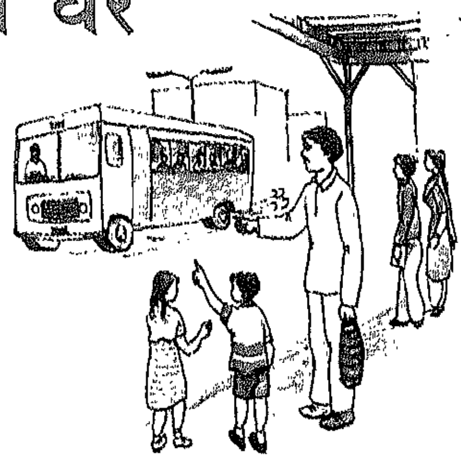
   

लिखो

प	थ	मा	मो	ता
तो	जे	जा	हे	हो
रथ	पान	हाथ	खेलो	मोर

अध्यापन संकेत : उन शब्दों को चुनवाइए जिनमें **प** और **थ** आए हैं, फिर उन शब्दों को जिनमें **मो**, **तो** की तरह **ओ** की आवाज़ है। पिछले पाठों के कुछ वर्णों की पहचान करवाइए। नए वर्णों को लिखवाइए। **थ** के लिखने में घुंडी पर विशेष ध्यान दिलाइए। **मो** को क्रमिक चरणों में इस प्रकार लिखवाइए– म-मा-मो-मो। कुछ अन्य व्यंजनों का सीखी हुई ा े ो मात्राओं के साथ लिखने का अभ्यास भी कराइए। वर्णों और शब्दों का श्रुतलेख करवाइए।

मेले से घर

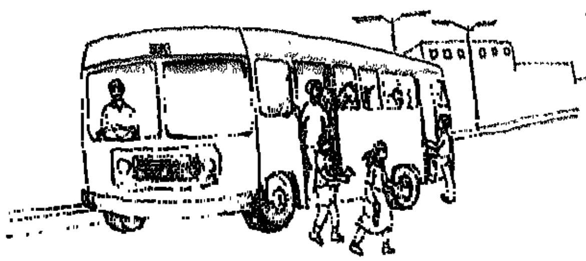


कमला, मदन, चलो।

अब घर चलो।

देर मत करो।

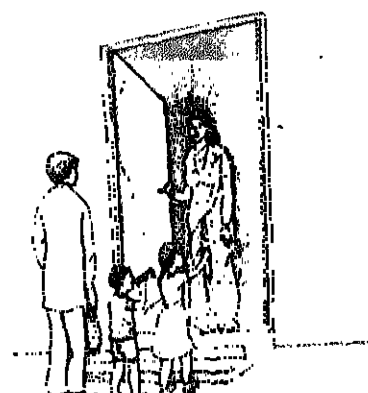
बस से घर चलो।



वह देखो अपना घर।

बसवाले, बस रोको।

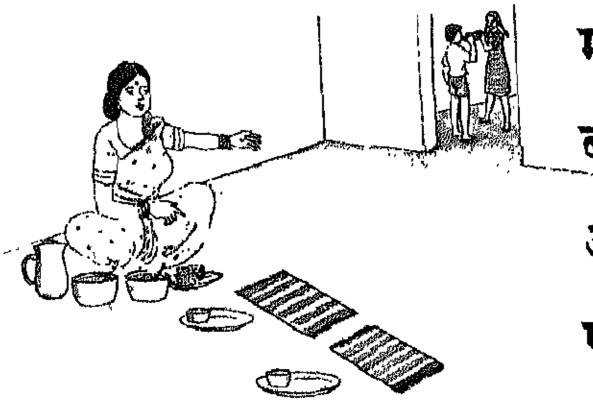
चलो, घर चलो।



देखो, मेरा बाजा देखो।

देखो, देखो माला देखो।

अध्यापन संकेत : यह पाठ भी पढ़ने के अभ्यास के लिए है। ध्यान दिलाइए कि छठे पाठ में मदन और कमला मेले गए थे, उस विषय में कुछ प्रश्न पूछिए – कमला और मदन किसके साथ मेले गए थे? मेले से उन्होंने क्या-क्या खरीदा? पाठ में दिए गए चित्रों को दिखाकर चर्चा कीजिए। इस पाठ को कुछ बच्चों से ऊँची आवाज़ में पढ़वाइए। पढ़वाते समय पाठ छह में दिए गए निर्देशों का अनुपालन कीजिए। जिन शब्दों के पढ़ने में बच्चे कुछ कठिनाई अनुभव करें, उन्हें श्यामपट पर लिखकर उनके पढ़ने का विशेष अभ्यास करवाइए



कमला, खाना खा।

मदन चल, खाना खा।

बाजा मत बजा।

अब बाजा रख दे।

पहले खाना खा।

कमला, मेरे साथ खाना खा।

मदन, अब सो जा।

कमला, माला रख दे।

अब सो जा।

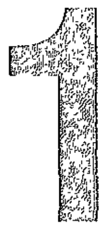
कल खेलना।



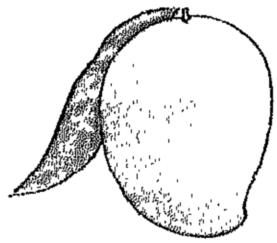


अध्यापन संकेत : पाठ के संतोषजनक ढंग से पढ़े जाने के बाद बच्चों से पूछिए – मदन और कमला कहाँ गए थे? वे घर वापस कैसे आए? मदन ने माँ को क्या दिखाया? कमला ने माँ को क्या दिखाया? कमला की माला किस रंग की थी? माँ ने बच्चों से क्या कहा? माँ ने बच्चों को खेलने के लिए मना क्यों किया? बच्चों से माला और बाजे का चित्र बनाने को कहिए।

पाठ नौ



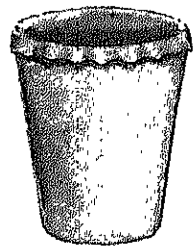
एक



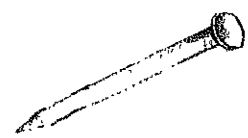
आम



चील



गमला



कील

पहचानो और बोलो

आ	ए	ग	ची	की
ए	पा	थ	थी	थे
ख	खा	खी	खे	खो
ग	गा	गी	गे	गो

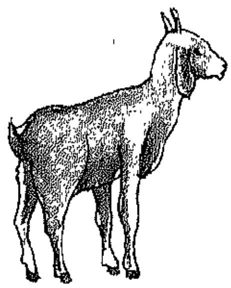


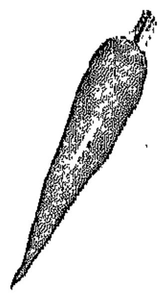
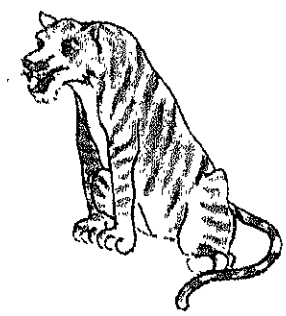
अध्यापन संकेत : **अ** और **आ** में समानता तथा अंतर पर ध्यान दिलाइए। **प पा, ग गा** आदि में उच्चारण के अंतर पर ध्यान दिलाइए। **चील** और **कील ई** की मात्रा के बोध के लिए हैं। पाठ में चित्रित वस्तुओं तथा पक्षी के बारे में चर्चा कीजिए। **'पहचानो'** अंश की निचली दो पंक्तियों की तरह मात्राओं का अभ्यास अन्य व्यंजनों के साथ करवाइए।

पढ़ो

आज	एक	लाए	आए	गाजर
गाना	आग	बाग	बाघ	पीला
नीला	चीनी	नीचे	जलेबी	नीम
नदी	मदारी	सहेली	बकरी	हाथी

इनके नाम ऊपर खोजो



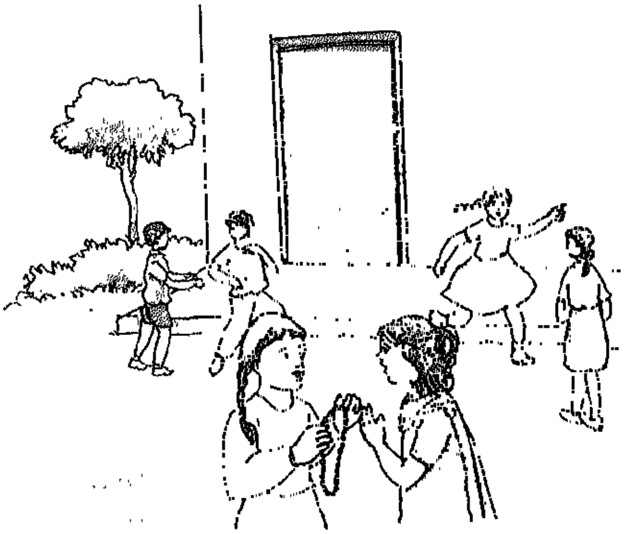
लिखो

आ	ग	ए	दे	पी	गी
गमला	आग	चीनी	चाची	गए	



अध्यापन संकेत : नए शब्दों को क्रमशः श्यामपट पर लिखकर और कार्डों पर से पढ़वाइए। बच्चों को पूरा शब्द एक साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। ध्यान रखिए वे **आ-ज** या **आ-ग** अलग-अलग न पढ़ें बल्कि **आज** और **आग** पढ़ें। गाना, आग, चीनी, जलेबी, बाग, बाघ, नीम, नदी, मदारी, सहेली और बकरी के बारे में बात कीजिए। पीले, नीले, लाल और हरे रंग की चीज़ों की ओर संकेत करने के लिए कहिए। ग और म तथा र और ए की बनावट में अंतर स्पष्ट कीजिए। ग और घ की ध्वनियों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराइए।

कमला की सहेली



मीरा, चल।
मेरे साथ चल।
आज मेरे घर चल।
माता जी, मेरी सहेली मीरा।
आ, मीरा आ।

मीरा, कल हम मेले गए थे।
हमने केले खाए थे।
मेले से हम माला लाए।
मेले से हम बाजा लाए।

अध्यापन संकेत : छठे और आठवें पाठों में आए हुए मदन और कमला नाम के बच्चों का स्मरण करवाइए और उनके विषय में प्रश्न कीजिए। इस पाठ में कमला की सहेली मीरा उसके घर आती है। ध्यान दीजिए कि जहाँ वाक्यों के बीच में अधिक अंतर है वहाँ बातचीत का प्रसंग बदल जाता है। बच्चों से ऊँची आवाज़ में पाठ पढ़वाइए।

बच्चों से कई बार पाठ पढ़वाने के बाद पूछिए - कमला ने मीरा से कहाँ चलने को कहा? कमला मेले से क्या लाई थी? कमला ने मीरा को क्या-क्या दिखाया? यह भाव निकलवाइए कि अपने खिलौने एक दूसरे को खेलने के लिए देने चाहिए। मिलकर खेलना अच्छी बात है।

मीरा, देख माला।

देख, मेरी लाल माला।

ले, माला पहन।

देख, मदन का बाजा।

ले, बाजा बजा।



अब मीरा गाना गा।

एक गाना गा।

कमला, मीरा को

आम दो।

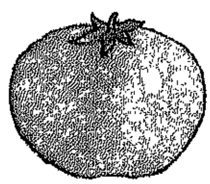
आ मीरा, आम खा।

ले, अब आम खा।

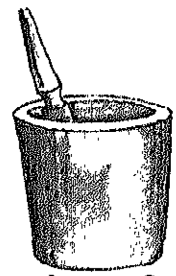


अध्यापन संकेत : मीरा द्वारा गाना गाने की बात को आधार बनाकर बच्चों को कुछ न कुछ सुनाने को प्रोत्साहित कीजिए। तीन बच्चों को पात्र बनाकर हाव-भाव तथा प्रवाह के साथ पढ़ने और बोलने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। बच्चों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दीजिए और उनके द्वारा की गई अशुद्धियों को दूर करने का प्रयास कीजिए।

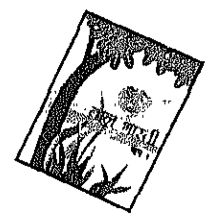
पाठ ग्यारह   ट य ओ ि



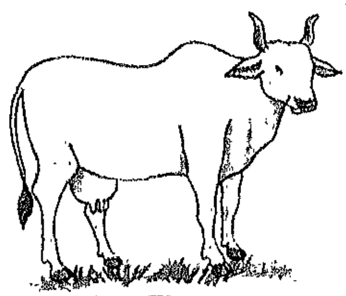
टमाटर



ओखली



पुस्तक



गाय



तितली

पहचानो और बोलो

ट	य	ओ	कि	ति	
ए	टी	ग	य	ओ	अ
क	का	कि	की	के	को
अ	आ	ए	ओ		

अध्यापन संकेत : टमाटर किस रंग का होता है? गाय हमें क्या-क्या देती है? ओखली किस काम आती है? तितलियाँ किस-किस रंग की होती हैं? (रंग-बिरंगी) गाय में **य** अंत में आया है। गाय और चाय शब्दों में **य** की पहचान करवाइए। किताब और तितली शब्द **इ** की मात्रा 'ि' के लिए हैं। इस मात्रा का अभ्यास कुछ अन्य व्यंजनों के साथ करवाइए। शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान दीजिए।

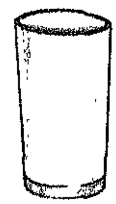
पढ़ो

टाट	टहनी	टोपी	रोटी	याद
यह	चाय	गया	ओस	गाओ
ओला	आओ	दिन	सिर	चिमटा

चित्र से उसके नाम तक रेखा खींचो


गिलहरी

याक


किताब

दीया


टोकरी

गिलास

लिखो

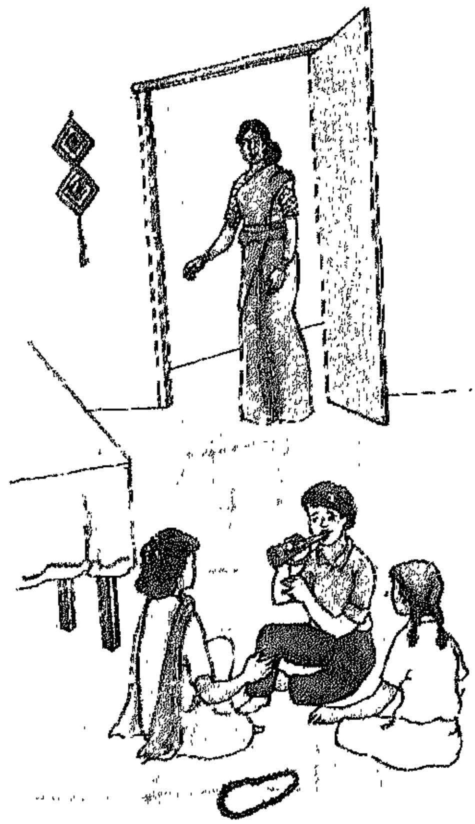
ट	य	अ	आ	ओ	ति
दिन	सिर	टोपी	रोटी	गाय	ओस



अध्यापन संकेत : टाट, टोपी, टहनी, टोकरी, चाय, ओस, सिर, किताब, गिलास, गिलहरी और दीए के बारे में चर्चा कीजिए। प, य और थ के अंतर को श्यामपट पर लिखकर स्पष्ट कीजिए। अ, आ, ओ की बनावट में संबंध स्पष्ट कीजिए। अब आप आ, ए, ओ की मात्राओं की पहचान इनका नाम लेकर करा सकते हैं। ध्यान दिलाइए कि ा, ि, ी, े, ो क्रमशः आ, इ, ई, ए और ओ की मात्राएँ हैं। सीखे गए वर्णों के साथ इन मात्राओं को लगाकर पढ़ने और लिखने का अभ्यास करवाइए।

पाठ बारह

आओ खाना खाओ



कमला आओ।
मदन आओ।

मीरा को साथ लाओ
आओ, खाना खाओ।
सब मिलकर खाना
खाओ।

आओ, मीरा आओ।
आओ, खाना खाओ।

अध्यापन संकेत : बच्चों को ध्यान दिलाइए कि पाठ दस में कमला की सहेली उसके घर आई थी। उसके बारे में कुछ प्रश्न कीजिए। बताइए कि मीरा कमला के साथ खेलती रही। इतने में माता जी ने खाना बना लिया। मीरा ने कमला के साथ खाना खाया। बच्चों से पूछिए कि क्या वे भी अपने साथियों को अपने घर खाना खिलाते हैं और उसके घर खाते हैं। बताइए कि दूसरों को अपने घर खाना खिलाना बहुत अच्छी बात है। पाठ को कई बार बच्चों से पढ़वाइए। उच्चारण पर विशेष ध्यान दीजिए। स्वयं आदर्श वाचन कीजिए।

माता जी, दाल-चावल दो।
लो मीरा, दाल-चावल लो।
साग लो, चटनी लो।
मदन, रोटी लो, रायता लो।
खाना चबा-चबाकर खाओ।



माता जी, पानी दो।
लो कमला, पानी लो।
यह लो, पानी का गिलास।
अब खीर खाओ।



अध्यापन संकेत : बच्चों से पूछिए कि वे क्या-क्या खाते हैं और यह बताइए कि उन्हें क्या-क्या खाना चाहिए। ध्यान दिलाइए कि कमला अपनी सहेली मीरा का ध्यान रख रही है। माता जी सब बच्चों का ध्यान रख रही हैं। हमें दूसरों का ध्यान रखना चाहिए। पहली कक्षा के बच्चे खाना बनाने और परोसने से संबंधित खेलों में विशेष रुचि लेते हैं। इस पाठ को आधार बनाकर अभिनय कराइए। बच्चों से पाठशाला में एक साथ मिलकर खाना खाने को कहिए। उन्हें बताइए कि खाना खाने से पहले और बाद में हाथ-मुँह धोना चाहिए। खाना मिल-बाँट कर खाना चाहिए।

पाठ तेरह

इ ई उ ड ु



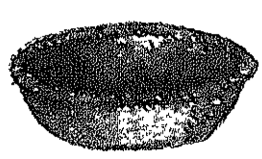
इमली



ईख



उपला



डलिया



कुरता

पहचानो और बोलो

इ	ई	उ	ड	कु		
ट	य	ओ	टि	टु		
प	पा	पि	पी	पु	पे	पो
ड	डा	डि	डी	डु	डे	डो

अध्यापन संकेत : इस पाठ में तीन स्वर **इ, ई, उ** सिखाए गए हैं। **इ, ई** की मात्राएँ बच्चे पहले सीख चुके हैं। **उ** की मात्रा भी इसी पाठ में सिखाई गई है। **इ** और **ई** के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास इन दोनों स्वरों में अंतर समझाते हुए करवाइए। छोटी **इ**, बड़ी **ई** न बोलिए क्योंकि ऐसे बोलने में दोनों जगह **ई** का उच्चारण होता है और इन स्वरों के उच्चारण का अंतर स्पष्ट नहीं हो पाता। हिंदी की ध्वन्यात्मक प्रकृति को ध्यान में रखते हुए स्वरों के उच्चारण में सचेत रहें। बच्चों को ईख के बारे में बताइए। यदि उपला और डलिया के लिए स्थानीय बोली में कोई अन्य शब्द प्रयुक्त होते हैं तो कहिए कि इन चीज़ों के ये नाम भी हैं। **आ, इ, ई, उ, ए, ओ,** स्वरों का उनकी मात्राओं से संबंध, कार्डों की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

पढ़ो

इस इन इमली गई ईख ईद

डाकघर उसका उजाला इनाम पुल

गुलाब जामुन बहुत पुराना हलवाई

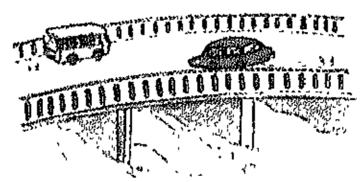
खीरा बिजली आइए जाइए डोरी

डाकिया उमर

चित्रों से उनके नाम तक रेखा खींचो



इमली



गुलाब

डाकिया



पुल



लिखो

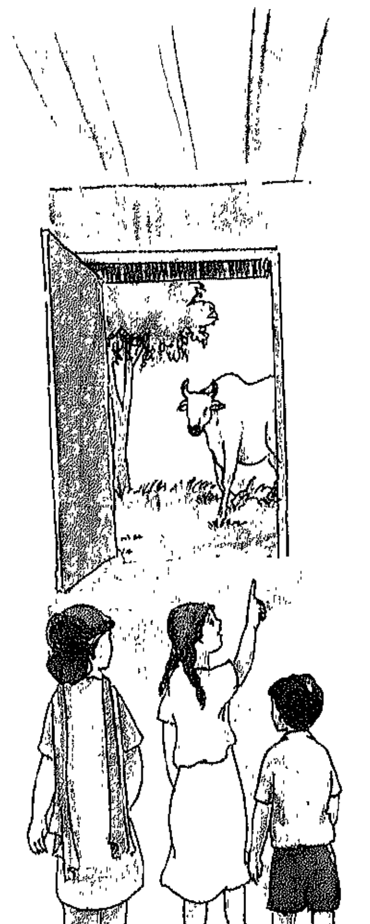
ड इ ई पि उ पु मु

इमली पुल आई उसका डोली

किसान ईख लाया।

अध्यापन संकेत : इस पृष्ठ पर बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनमें इ, ई और उनकी मात्राओं का प्रयोग हुआ है। उन शब्दों को दोनों स्वरों के उच्चारण में अंतर स्पष्ट करते हुए पढ़वाइए। कार्डों से खिल खील, मिल मील, बिन बीन, किला कील, सिल सील पढ़वाइए। उन शब्दों को चुनवाइए जिनमें उ या उ की मात्रा ु का प्रयोग हुआ है। फिर ड वाले शब्दों को चुनवाइए। डोरी, डाकघर, पुल, दुकान और जामुन के बारे में बातचीत कीजिए। गुलाबजामुन श्यामपट पर एक साथ लिखकर पढ़वाइए। लिखने के अभ्यास में पहले ड लिखवाइए फिर इ और तब ई। तीनों का संबंध और अंतर स्पष्ट कीजिए। ई के ऊपरी भाग पर ध्यान दिलाइए। बच्चे अ लिखना सीख चुके हैं इसलिए उ के लिखने में कठिनाई नहीं होगी। कुछ वर्णों और शब्दों का श्रुतलेख करवाइए।

गाय आ गई



गाय आ गई।

गाय घर आ गई।

पिताजी गाय ले आए।

मदन, देख हमारी गाय।

आ, बाहर आ।

गाय के पास चल।

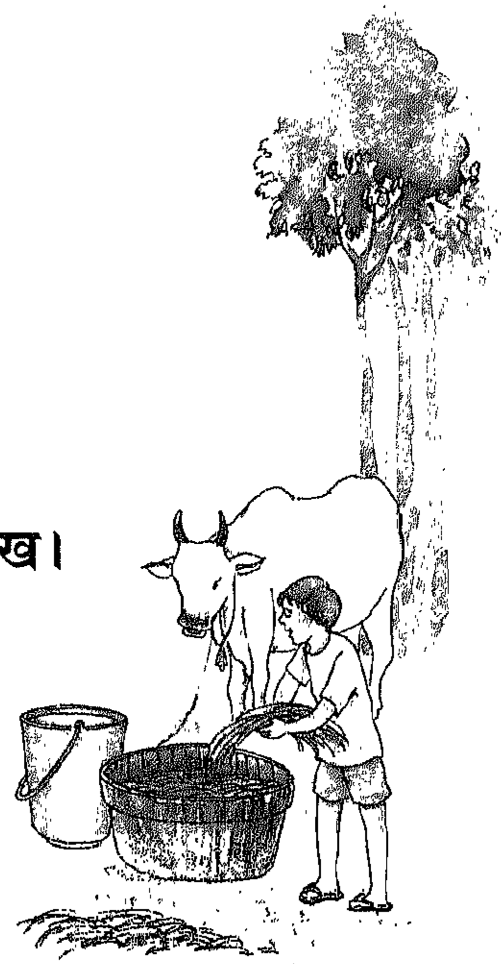
डर मत।



अध्यापन संकेत : यह पाठ गाय के बारे में है – गाँवों और कस्बों में बहुत से घरों में गाय होती है। इस पृष्ठ के संवाद कमला और मदन के बीच हैं। इन्हीं संवादों को आधार बनाकर पूछिए – गाय कौन लाया? कमला ने क्यों कहा – डर मत? अगले पृष्ठ के वाक्य माता जी के हैं।

गाय पानी पिएगी।

कमला, बालटी ला।



मदन, गाय के सामने बालटी रख।

उसे पानी पिला।

उसके लिए घास ला।

गाय के आगे घास डाल।

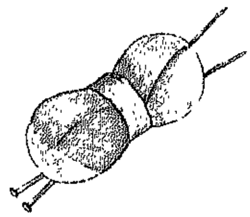
गाय को हरी-हरी घास खिला।



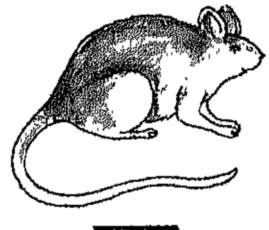
अध्यापन संकेत : बच्चों से पूछिए – गाय क्या-क्या खाती है? मदन ने गाय को क्या खिलाया? उसने गाय को पानी किससे पिलाया? तुम में से किस-किस के घर में गाय है? तुम गाय के लिए क्या करते हो? गाय से हमें क्या मिलता है? और कौन-कौन से जानवर दूध देते हैं? दूध किस-किस काम आता है? कौन-कौन से जानवर घर में पाले जा सकते हैं? अगर किसी के घर में कोई पालतू पशु हो, तो उससे पूछिए – तुम उसकी देखभाल कैसे करते हो? बच्चों से पशुओं के चित्र इकट्ठा करने को कहिए।

पाठ पंद्रह

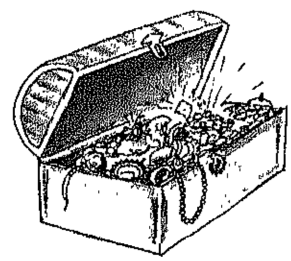
ऊ श ध ड़ ू



ऊन



चूहा



धन



पेड़



शलगम

पहचानो और बोलो

ऊ	चू	श	ध	ड			
ई	इ	पु	उ	डा			
ड	ड़	डा	ड़ा	डी	ड़ी	डे	ड़े
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धो

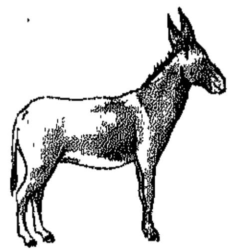
अध्यापन संकेत : इस पाठ में ऊ के साथ उसकी मात्रा ' ू ' भी सिखाई गई है। उ और ऊ के उच्चारण का इस प्रकार बार-बार अभ्यास कराइए कि बच्चे उन्हें अलग-अलग सुनकर उनके उच्चारण में अंतर कर सकें। छोटा उ और बड़ा ऊ मत बोलिए। उ और ऊ की मात्राओं की बनावट में अंतर पर ध्यान दिलाइए। **ध** और **घ** के अंतर पर ध्यान दिलाइए। ध्यान दीजिए कि **ध** वर्ण एक छोटी घुंडी के साथ लिखा जाता है। **ड** और **ड़** में अंतर बताते हुए नीचे की बिंदी पर ध्यान दिलाइए। कुछ बच्चे **ड़** की जगह **र** बोलते हैं और **श** की जगह **स** बोलते हैं। बार-बार शुद्ध उच्चारण के अभ्यास से इस दोष का निवारण कीजिए।

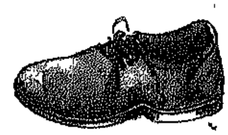
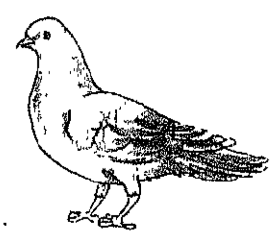
पढ़ो

ऊन	ऊपर	चूहा	कबूतर	चाकू
जूता	शरबत	शाम	शलगम	तराजू
शेर	धरती	धोती	दूध	साबुन
गधा	पेड़	गाड़ी	सड़क	गुड़िया

इधर देखो। उधर देखो। अब सड़क पार करो।

इनके नाम ऊपर खोजो



लिखो

श	ध	ऊ	कू	ड़
ऊन	चूहा	शेर	धागा	गुड़िया

शाम हुई। दूध पिओ। गाड़ी आई।



अध्यापन संकेत : ध, श और ड़ वाले शब्दों को बुलवाइए। उन-ऊन, चुना-चूना, बुरा-बूरा, सुना-सूना जैसे जोड़ों को लिखकर उ और ऊ की मात्राओं को ठीक पढ़ने और इन स्वरों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराइए। ऊन, दूध, चूहा, कबूतर, शलगम, जूता, धोती, गधा, पेड़, गाड़ी, गुड़िया आदि के बारे में बातचीत कीजिए। बच्चों को सड़क पार करने के नियमों की जानकारी दीजिए। ड और ड़ तथा उ और ऊ लिखने में समानता तथा अंतर पर ध्यान दिलाइए।

कमला की गुड़िया



एक दिन कमला ने अपनी सहेली मीरा से कहा – मेरी गुड़िया बड़ी हो गई। अब इसकी शादी करनी चाहिए।

कमला ने लाल कपड़ा लिया। मदन ने उसे साबुन से धोया। कमला सूई-धागा लाई। उसने गुड़िया के लिए कुरता बनाया। मीरा ने गुड़िया के लिए सलवार बनाई।

अध्यापन संकेत : यह पाठ पढ़ने का अभ्यास कराने के लिए है। बच्चे गुड्डे-गुड़ियों के खेल में बहुत रुचि लेते हैं। पहले पूरा पाठ स्वयं पढ़कर सुनाइए फिर बच्चों से बारी-बारी से पढ़वाइए। जिन ध्वनियों के उच्चारण में वे अशुद्धियाँ करते हैं, उन पर विशेष ध्यान दीजिए। इस पाठ में पहली बार अनुच्छेद दिए गए हैं। बच्चों से पूरा अनुच्छेद एक साथ पढ़वाइए। जो वाक्य दो पंक्तियों में बँट गए हैं, उनके अभ्यास के लिए विशेष आवश्यकता होगी। प्रत्येक अनुच्छेद के बारे में कुछ प्रश्न पूछिए।

मीरा घर से ऊनी कपड़ा लाई। उसने ऊनी कपड़े से गुड़िया के लिए शाल बनाई।



कमला ने गुड़िया को सलवार पहनाई। उसने गुड़िया को कुरता पहनाया। उसे अपनी लाल माला पहनाई। मीरा ने गुड़िया के ऊपर शाल लपेटी।

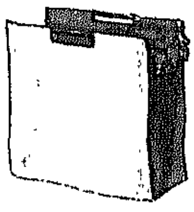
मदन बोला – वाह ! अब गुड़िया दुलहन बन गई।

मीरा बोली – यह तो सचमुच दुलहन बन गई। कमला बहुत खुश हुई।



अध्यापन संकेत : बच्चों से गुड़ियों के बारे में चर्चा कीजिए। उन्हें अपनी-अपनी गुड़िया कक्षा में लाने को भी कहा जा सकता है। पाठ पढ़वाने के बाद पूछिए – कमला ने मीरा से क्या कहा? उसने गुड़िया का कुरता कैसे बनाया? गुड़िया की शाल किससे बनी? मीरा ने कमला की क्या मदद की? ध्यान दिलाइए कि अच्छे बच्चे एक दूसरे की मदद करते हैं। पूछिए कि गुड़ियों को कुरता और सलवार के अलावा और क्या-क्या पहनाया जाता है। आप क्या-क्या कपड़े पहनते हैं? बताइए कि अलग-अलग जगहों के बच्चे और बड़े जैसे कपड़े पहनते हैं वैसे ही कपड़े वे गुड्डे-गुड़ियों को पहनाते हैं। अलग-अलग स्थानों की गुड़ियों के कुछ चित्र बच्चों को दिखाइए।

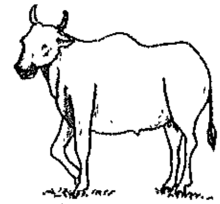
पाठ सत्रह ऐ ै झ भ



थैला



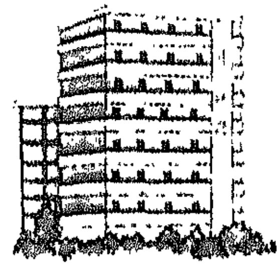
ऐनक



बैल



झरना



भवन

पहचानो और बोलो

ऐ	बै	थै	झ	भ	पै			
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो

अध्यापन संकेत : इस पाठ में **ऐ, ै, झ, भ,** चार नए लिपि-संकेत सिखाए गए हैं। **ए** और **ऐ** के स्वरूप में समानता तथा अंतर पर ध्यान दिलाइए। ध्यान दीजिए सामान्यतः **ऐ** का उच्चारण **अइ** नहीं होता अपितु ऐसा होता है जैसा कि क्रमशः **है** और **पैर**- शब्दों में है किंतु ऐ की मात्रा 'ै' के बाद **य** वर्ण आने पर उसका उच्चारण **अई** ही होता है, जैसे **भैया, मैया** आदि। बच्चों को ध्यान दिलाइए कि – **'ऐ'** वर्ण पर यद्यपि एक निशान है, परंतु इसकी मात्रा में दो निशान होते हैं जैसे ऐसा-कैसा। **भ** की घुंडी और **झ** की **इ** से समानता पर ध्यान दिलाइए। पहचानो और बोलो अंश की निचली तीन पंक्तियों में नौ स्वरों का तथा मात्राओं के साथ **भ** और **झ** का अभ्यास कराया गया है। इसी प्रकार का अभ्यास कुछ अन्य व्यंजनों के साथ कराइए।

पढ़ो

ऐसा ऐनक पेड़ पैर पैसा मैना

जीभ भीड़ भाई भालू भूरा भाभी

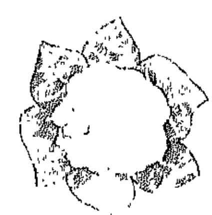
मुझे गोभी झूला झाड़ी झाड़ना झूला

भालू शहद खाता है। भैया इधर आओ।

इनके नाम ऊपर खोजो









लिखो

भ झ ऐ पै थै

ऐनक पैसा झूला भालू झाड़ू

भालू नाचेगा। मेरे साथ झूलो।



अध्यापन संकेत : आशा है कि अब तक बच्चों में हिंदी के स्वरों, उनकी मात्राओं, अधिक प्रयुक्त व्यंजनों तथा इनके योग से बनने वाले परिचित शब्दों के पढ़ने की योग्यता आ गई होगी। आप किसी पाठ को एक ही बार पढ़ाकर संतुष्ट न हो जाएँ, आगे का पाठ तभी प्रारंभ करें जब बच्चे पिछले पाठ की सभी बातें भली प्रकार सीख लें।

झूला झूलो



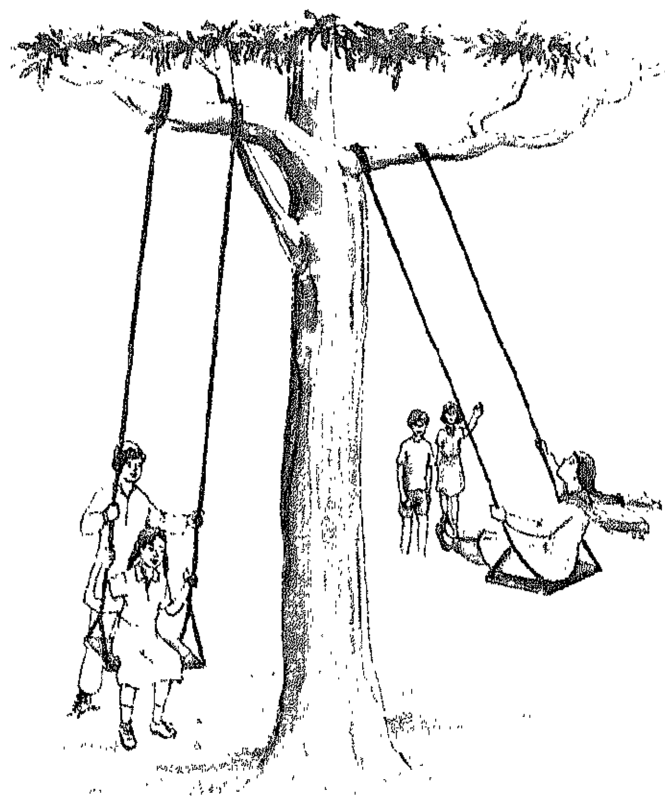
सावन का महीना था।
बादल आ रहे थे।
सब झूला झूलना
चाहते थे।

मदन के घर के पास
नीम का एक पेड़ था।
मदन के पिता जी ने पेड़ पर झूला डाल दिया।

कमला सलमा के घर गई। उसे बुला लाई। वह मीरा को भी बुला लाई। सलमा का भाई रहीम भी झूला झूलने आया। मदन ने सलमा को झूला झुलाया। रहीम ने कमला को झूला झुलाया।

कमला के साथ मीरा भी झूली। तब मदन के साथ रहीम झूला।

कमला सलमा के साथ झूले पर बैठी। रहीम ने झूला झुलाया। झूला ऊपर जाने लगा। सब बहुत खुश हुए।



मीरा गाना गाने लगी। सलमा भी उसके साथ गाने लगी। सभी ने मिलकर गाया –

झूला झूलो, झूला झूलो
मिलकर झूला झूलो रे।
सावन आया झूला झूलो
मिलकर झूला झूलो रे।

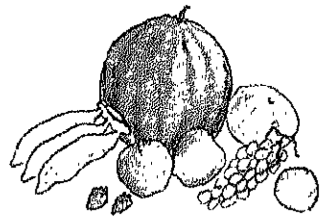


अध्यापन संकेत : झूले के बारे में बातचीत कीजिए। बच्चों से पूछिए कि क्या उन्हें झूले का कोई गीत याद है। उसे सुनाने को प्रोत्साहित कीजिए। फिर प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करवाइए। ध्यान दिलाइए कि सभी बच्चे मिलकर झूला झूलते हैं। बड़े बच्चे झूलने में छोटों की मदद करते हैं।

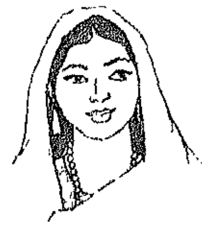
कई बार पाठ पढ़वाने के बाद पूछिए – झूला किन दिनों ज्यादा झूलते हैं? बच्चों को सावन के महीने के बारे में बताइए। बच्चों के लिए झूला किसने डाला? पिता जी ने झूला कहाँ डाला? मदन और कमला के साथ किस-किसने झूला झूला? बच्चों को झूले का चित्र बनाने के लिए कहिए। झूले के संबंध में कोई कविता बच्चों को याद कराइए।

पाठ उन्नीस

औ ौ छ फ फ़



फल



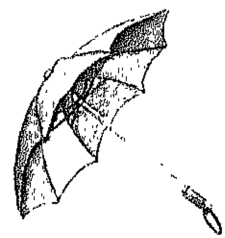
औरत



पौधा



फ़सल



छतरी

पहचानो और बोलो

फ	छ	औ	पौ	लौ					
दा	औ	कौ	छ	फ़	नौ	चौ	सौ		
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ

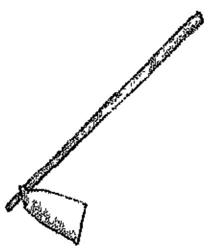


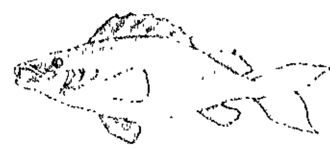
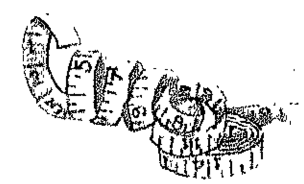
अध्यापन संकेत : इस पाठ में स्वर **औ**, उसकी मात्रा **ौ** तथा **छ, फ, फ़** व्यंजनों का परिचय कराया गया है। **फ** का उच्चारण दोनों ओठों को मिलाकर होता है जबकि फ़ का उच्चारण नीचे के ओठ और ऊपर के दाँतों के मेल से होता है। **फ** स्पर्श व्यंजन है और **फ़ स** की तरह संघर्षी।

पढ़ो

फल	फाटक	फूल	फुलझड़ी	फावड़ा
छत	छोटा	छिपना	मछली	बछड़ा
फ़सल	साफ़	सफ़ाई	फ़ीता	सफ़र
और	औरत	कौन	दौड़ना	नौकर
पौधा	पकौड़ी	हथौड़ा	थैला	सैर

इनके नाम ऊपर खोजो



लिखो

फ छ छा छि छी छो छौ

प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ

थैला पैर कौआ लौकी फल छाता

दौड़ कर फावड़ा लाओ। पौधा लगाओ।



अध्यापन संकेत : फल, पौधा, पकौड़ी, फूल, छत, मछली, फावड़ा और फ़सल के बारे में बातचीत कीजिए। **फ, फ़** और **छ** वाले शब्दों को चुनवाइए। **फ** और **फ़** के उच्चारण पर विशेष ध्यान दीजिए। शब्दों को पढ़ने का इतना अभ्यास करवाइए कि बच्चे किसी शब्द के वर्णों को अलग-अलग न पढ़कर पूरे शब्द को एक साथ पढ़ें। **ओ** और **औ** तथा इनकी मात्राओं (ो, ौ) के उच्चारण तथा लेखन पर विशेष ध्यान दीजिए।

पाठ बीस

खिलौनेवाला



देखो, उधर कौन आया !
खिलौनेवाला, खिलौनेवाला !
आओ, सब आओ।
देखो, खिलौनेवाला आया है।
उसके पास भालू है, शेर है।
गुड़िया है, बड़ा हाथी है।
बड़े हाथी के पीछे छोटा हाथी है।
और एक डुगडुगी भी है।
खिलौनेवाले ने डुगडुगी बजाई –
डुगडुग, डुगडुग। खिलौने ले लो।
खिलौने ले लो।



अध्यापन संकेत : पहले खिलौनेवाले के बारे में बातचीत कीजिए। लगभग सभी गाँवों और शहरों में खिलौनेवाले खिलौने बेचने आते हैं। बच्चों ने उनसे खिलौने खरीदें होंगे। उनसे इस विषय में बातचीत कीजिए। गली में चीज़ें बेचने आने वालों और खेल दिखाने वालों के बारे में पूछिए। पाठ को स्वयं नाटकीय ढंग से पढ़कर नमूना प्रस्तुत कीजिए। फिर कई बच्चों से ऊँची आवाज़ में (सस्वर वाचन के रूप में) पढ़वाइए।

मदन और कमला घर से दौड़े आए।
मीरा आई, सलमा आई। रहीम आया।
और भी बहुत से लोग आए।



खिलौनेवाला बोला –
देखो, यह गुड़िया नाचती है।
उसने गुड़िया की चाबी घुमाई।
गुड़िया नाचने लगी –
छमछम, छमछम।



मदन, रहीम, कमला सभी खिलौनेवाले के पास आ गए। कमला ने गुड़िया ली। मदन ने अपने लिए सीटी ली।

रहीम ने बड़ा हाथी लिया। मीरा ने डुगडुगी लेकर बजाई – डुगडुग, डुगडुग।

खिलौनेवाले को पैसे दिए।

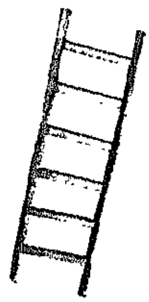
खिलौने लेकर सब खुश थे।



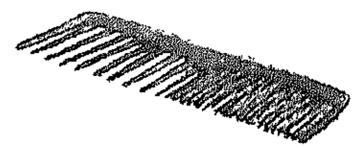
अध्यापन संकेत : पाठ से संबंधित बोध प्रश्न पूछिए - खिलौनेवाला कौन-कौन से खिलौने लाया था? किसने क्या खरीदा? बच्चे क्यों खुश थे? बच्चों को अपने खिलौनों के बारे में बताने को कहिए। कागज़, दियासलाई की खाली डिब्बियों और मिट्टी से खिलौने बनवाइए।

पाठ इक्कीस

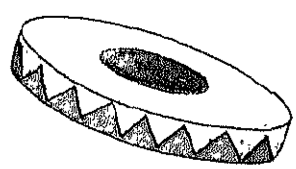
ढ ढ़



सीढ़ी



कंघा



ढपली

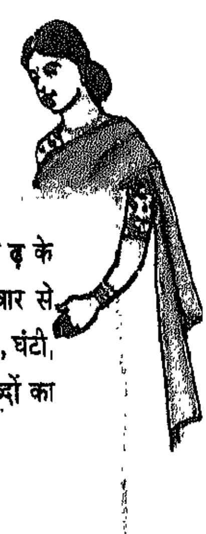


बंदर

पहचानो और बोलो

ढ ढ़ फ छ औ ऐ ड

ड छ ढ़ फू ड बै भौ

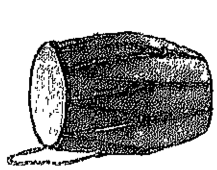
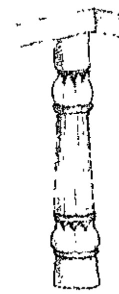


अध्यापन संकेत : इस पाठ में दो व्यंजनों – ढ, ढ़ तथा अनुस्वार 'ं' का परिचय कराया गया है। ढ और ढ़ के उच्चारण तथा लिखित रूपों में समानता और अंतर स्पष्ट कीजिए। गदा-गंदा, घटा-घंटा शब्दों में अनुस्वार से आए अर्थ में परिवर्तन की ओर बालकों का ध्यान आकर्षित कीजिए। कुछ अनुस्वारयुक्त शब्दों – पंखा, मंजन, घंटी, डंडा, सुंदर, पंप, कंबल आदि द्वारा अनुस्वार 'ं' के उच्चारण का अभ्यास करवाइए। अनुस्वार वाले शब्दों का उच्चारण सिखाते समय ध्यान रखें कि बच्चे पंचम वर्ण का मानक रूप में उच्चारण करें।

पढ़ो

ढमढम	ढोल	ढोलक	ढेला	ढीला
चढ़ो	सीढ़ी	बढ़ो	बढ़ई	बाढ़
पंख	पंजा	झंडा	अंदर	लंबा
जंगल	मंजन	घंटा	सुंदर	खंभा

इन चित्रों के नाम लिखो

सुलेख लिखो

बंदर ने ढोल बजाया।

सीढ़ी पर चढ़ो।

अध्यापन संकेत : पढ़ो के अंतर्गत दिए गए शब्दों को पढ़ने का अभ्यास करवाइए। ढोलक, बढ़ई, पंख, घंटा, झंडा और मंजन के बारे में चर्चा कीजिए। ढ़ वाले शब्दों के उच्चारण की शुद्धता पर ध्यान दीजिए। अनुस्वार वाले शब्दों को कक्षा के सभी बच्चों से अलग-अलग पढ़वाकर पूरी कक्षा से एक साथ पढ़वाइए। इन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर बार-बार उन्हें पढ़ने का अभ्यास करवाइए। ढ और ढ़ लिखना सिखाते समय ध्यान रखिए कि बालक ढ़ में नीचे का बिंदु लगाना न भूलें। झंडे की कविता (पृष्ठ 90) याद करवाइए।

मदन घूमने गया

शाम का समय था। मदन पढ़कर घर आया। उसने दूध पिया। फिर वह अपने पिता जी के साथ घूमने निकला।





अध्यापन संकेत : बच्चों से कहिए कि ऊपर बना चित्र देखें। चित्र पर चर्चा कीजिए। अब पूछिए कि वे घूमने कहाँ-कहाँ जाते हैं। क्या उनके घर के पास कोई पार्क या जंगल है? वहाँ वे क्या-क्या देखते हैं? बच्चों ने कौन-कौन से पेड़ देखे हैं? कुछ पेड़ों के नाम बताने को कहिए। यदि बच्चों ने ढाक का पेड़ न देखा हो तो उसके बारे में बताइए। उन्हें ढाक का पेड़ या उसका चित्र दिखाइए। ढाक को टेसू या पलाश भी कहते हैं। बताइए कि इस पेड़ पर लाल रंग के फूल खिलते हैं जो होली पर रंग बनाने के काम आते हैं।



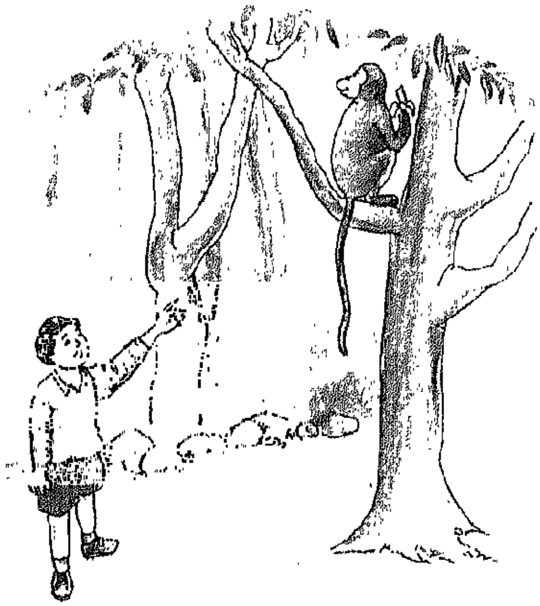
थोड़ी ही दूर जाने पर पिता जी ने मदन के लिए केले खरीदे। फिर वे आगे बढ़े। आगे एक जंगल था। इधर-उधर ढाक के पेड़ थे। उन पर लाल रंग के फूल खिले थे।

मदन ने ढाक के पेड़ पर एक बंदर देखा। मदन के हाथ में केला देखकर बंदर उसकी ओर लपका।



मदन डर गया। पिता जी ने कहा – मदन, बंदर को केला दे दो।

मदन ने बंदर की तरफ़ केला फेंक दिया। बंदर केला ले कर पेड़ पर चढ़ गया और केला खाने लगा।



मदन यह देख कर बहुत खुश हुआ।

मदन ने पेड़ के नीचे से ढाक के कुछ फूल चुने। घर आकर उसने फूल कमला को दे दिए। वह बोली – अहा, कितने सुंदर लाल फूल !

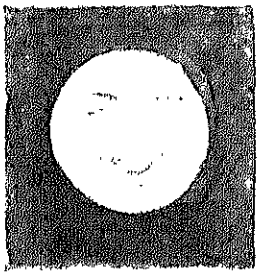
माता जी ने कहा – बेटा, इनसे रंग बनाना और होली खेलना।



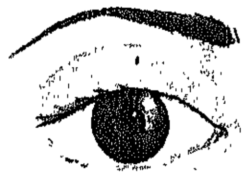
अध्यापन संकेत : पहले स्वयं पाठ पढ़कर फिर बारी-बारी से बच्चों से पढ़वाइए। अब उनके बोध की जाँच के लिए पाठ से संबंधित प्रश्न पूछिए। बंदर मदन की ओर क्यों लपका? पिता जी ने मदन से क्या कहा? उन्होंने ऐसा क्यों कहा? तुम्हें मदन की कौन-कौन सी बातें अच्छी लगीं? तुम मदन की जगह होते तो क्या करते? बच्चों से पालतू और जंगली जानवरों के बारे में चर्चा कीजिए। अब कहिए– जानवर पालतू हों या जंगली, उन्हें सताना या मारना नहीं चाहिए। चिड़ियाघर के जानवरों को भी चिढ़ाना नहीं चाहिए।

पाठ तेइस

ठ ष ज़ ँ



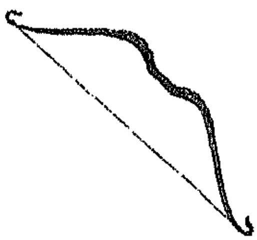
चाँद



आँख



जहाज़



धनुष



गाँठ

पहचानो और बोलो

चाँ	आँ	ठ	ष	ज़		
ष	ढ़	ट	ठ	ड	ढ	ड़
हाँ	माँ	चाँ	दाँ	गाँ	आँ	साँ

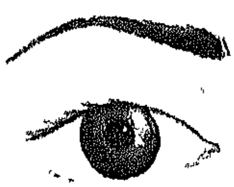
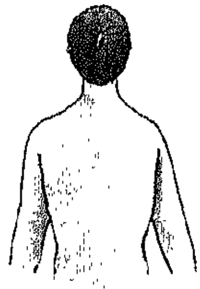
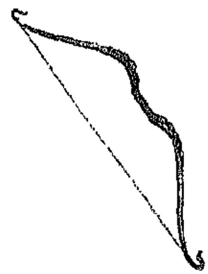
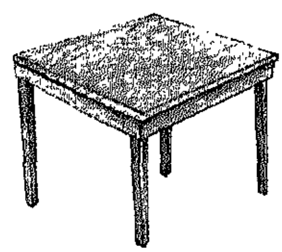
अध्यापन संकेत : इस पृष्ठ पर ठ, ष, ज़ तथा अनुनासिक चंद्रबिंदु '◌ँ' का परिचय कराया गया है। ज़ का उच्चारण स के उच्चारण स्थान से होता है। स की तरह ज़ के उच्चारण में हवा का घर्षण होता है। अनुनासिक '◌ँ' का उच्चारण सिखाते समय ध्यान रखें कि बालक इसका अनुस्वार '◌ं' से अंतर समझ जाएँ। अनुस्वार व्यंजन ध्वनि है जबकि चंद्रबिंदु अनुनासिक स्वर का सूचक है। लिखना सिखाते समय चंद्रबिंदु की आकृति तथा उसके निर्दिष्ट स्थान के प्रति बच्चों को सचेत कीजिए।

पढ़ो

ठीक	उठना	लाठी	ठेला	पीठ
मेज़	ज़मीन	दरवाज़ा	हाँ	माँ
हँसना	गेहूँ	गाँव	मुँह	
उषा	धनुष	सुषमा	ठंडा	

उषा और संतोष यहाँ आए थे।

इन चित्रों के नाम लिखो

सुलेख लिखो

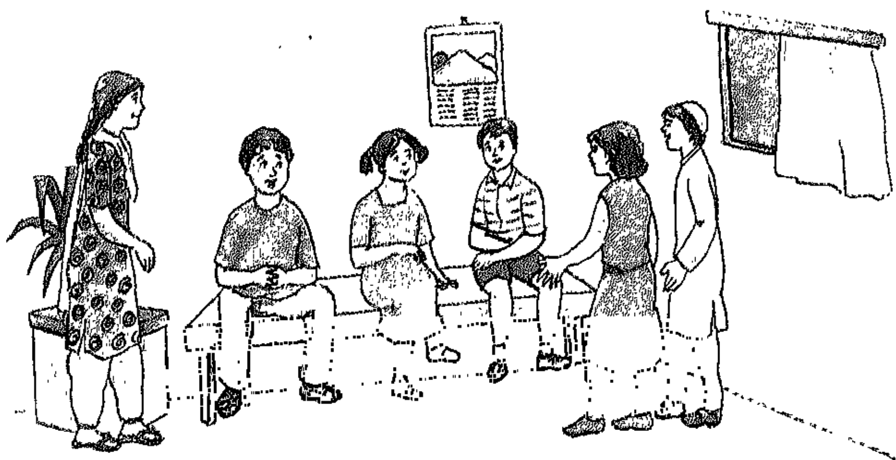
सुषमा यहाँ बैठो।
पंखा मेज़ पर रख दो।
उषा दाँत साफ़ करो।



अध्यापन संकेत : लाठी, ठेला, गेहूँ, गाँव और धनुष के बारे में चर्चा कीजिए। उन शब्दों को चुनवाइए जिनमें ठ, ष और ज़ वर्णों का प्रयोग हुआ है। प और ष में समानता तथा अंतर स्पष्ट कीजिए। वाक्य लिखवाते समय बच्चों को अंत में पूर्णविराम लगाने के लिए भी कहिए। कुछ शब्दों का श्रुतलेख लिखवाइए। अनुनासिक ध्वनियों का उचित ढंग से बोल-बोलकर अभ्यास करवाइए। जहाँ शिरोरेखा के ऊपर कोई मात्रा होती है, वहाँ चन्द्रबिंदु के स्थान पर केवल बिंदु का प्रयोग किया जाता है। जैसे मैँ, गैँद को मैं, गेंद के रूप में लिखते हैं।

आँखमिचौनी

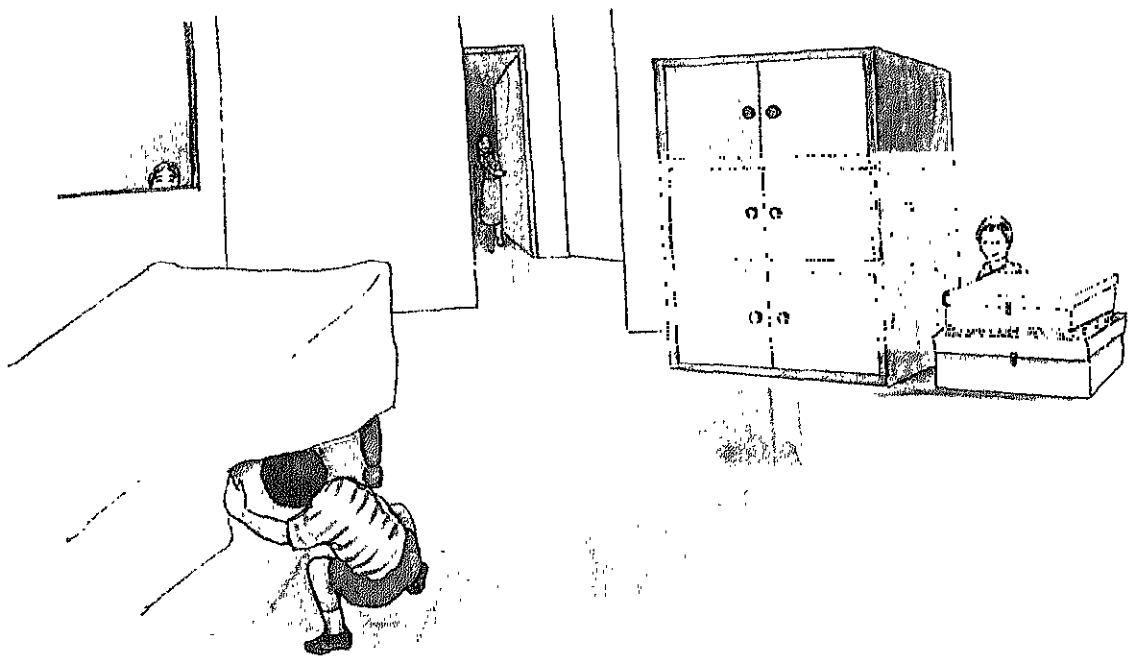
रविवार का दिन था।
सलमा और रहीम घर में बैठे थे।
तभी कमला और मदन उनके घर आए। सलमा और कमला की एक सहेली थी उषा। वह भी अपने भाई मोहन के साथ



अध्यापन संकेत : चित्र पर चर्चा करते हुए बच्चों से पूछिए – छुट्टी के दिन वे क्या-क्या करते हैं? वे कौन-कौन से खेल खेलते हैं? क्या वे आँखमिचौनी भी खेलते हैं? श्यामपट पर लिखिए – आँखमिचौनी। दोनों शब्दों को पढ़वाकर एक शब्द के रूप में लिखिए और पढ़वाइए – आँखमिचौनी। बच्चों से पूछिए – यह खेल कैसे खेला जाता है? यह खेल घर के भीतर तथा बाहर दोनों जगह खेला जा सकता है। पाठ पढ़ने से पूर्व पाठ में आए नए शब्दों से बालकों को भली-भाँति परिचित करवाइए। ये शब्द श्यामपट पर लिखकर बार-बार बुलवाइए – आँखमिचौनी, ढूँढ़ो, दीवार, मुँह, ढूँढ़ने।

वहाँ आई। सभी बैठकर बातें करने लगे।

तभी सलमा बोली – चलो, अब आँखमिचौनी खेलें। सब बोले – हाँ, हाँ ठीक है।



आँखमिचौनी का खेल होने लगा।

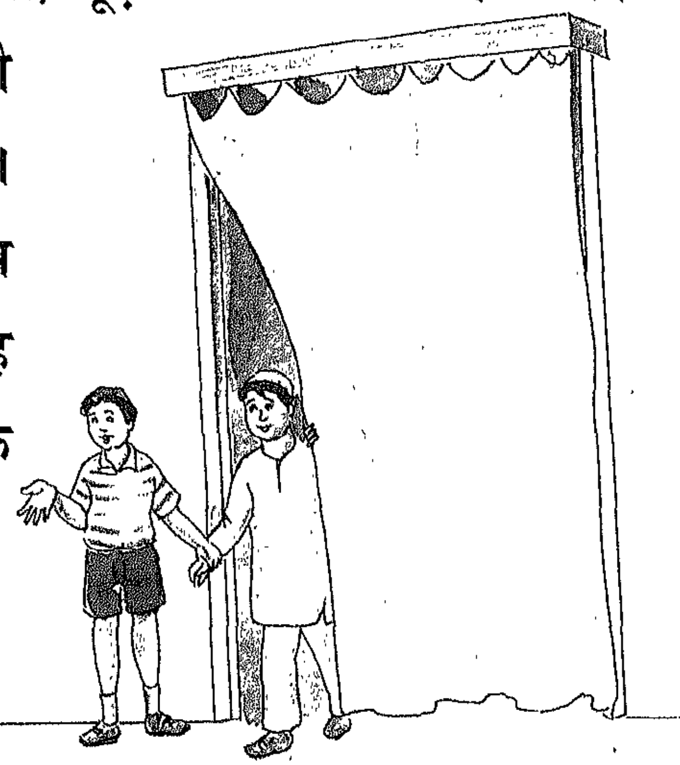
सलमा, कमला, उषा, रहीम और मोहन छिप गए। मदन उनको ढूँढ़ने लगा। उसने दरवाज़े के पीछे देखा। वहाँ कोई



अध्यापन संकेत : पहले पूरा पाठ स्वयं पढ़िए। फिर बारी-बारी से बच्चों से पाठ का कुछ अंश पढ़वाइए। नए शब्दों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दीजिए। बच्चों का ध्यान इस पाठ के चित्रों की ओर दिलवाइए तथा उनसे पूछिए – ये बच्चे आँखमिचौनी कहाँ खेल रहे हैं?

न था। उसने खाट के नीचे देखा। वहाँ भी कोई न था। मदन बोला – अरे, तुम सब कहाँ छिपे हो? सब चुप रहे। फिर मदन ने परदे के पीछे देखा। रहीम वहीं छिपा था।

मदन बोला – ढूँढ़ लिया, ढूँढ़ लिया। अब रहीम की बारी आई। वह दीवार की ओर मुँह करके खड़ा हो गया। सब फिर से छिप गए। रहीम उनको ढूँढ़ने लगा। इस तरह आँखमिचौनी का खेल देर तक चलता रहा।





अध्यापन संकेत : बच्चों के बोध की जाँच के लिए कुछ प्रश्न पूछिए। खेल के घंटे में यह खेल खेलने के लिए कहिए।

दशहरे का मेला

पढ़ो

ण	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र
बाण	कक्षा	मित्र	ज्ञान	श्री
रावण	रक्षा	चित्र	आज्ञा	श्रीमान

आज दशहरा है। कई दिनों से रामलीला हो रही है। गाँव में बहुत बड़ा मेला लगा है।

कमला और मदन, माँ और पिता जी के साथ मेला देखने जा रहे हैं।

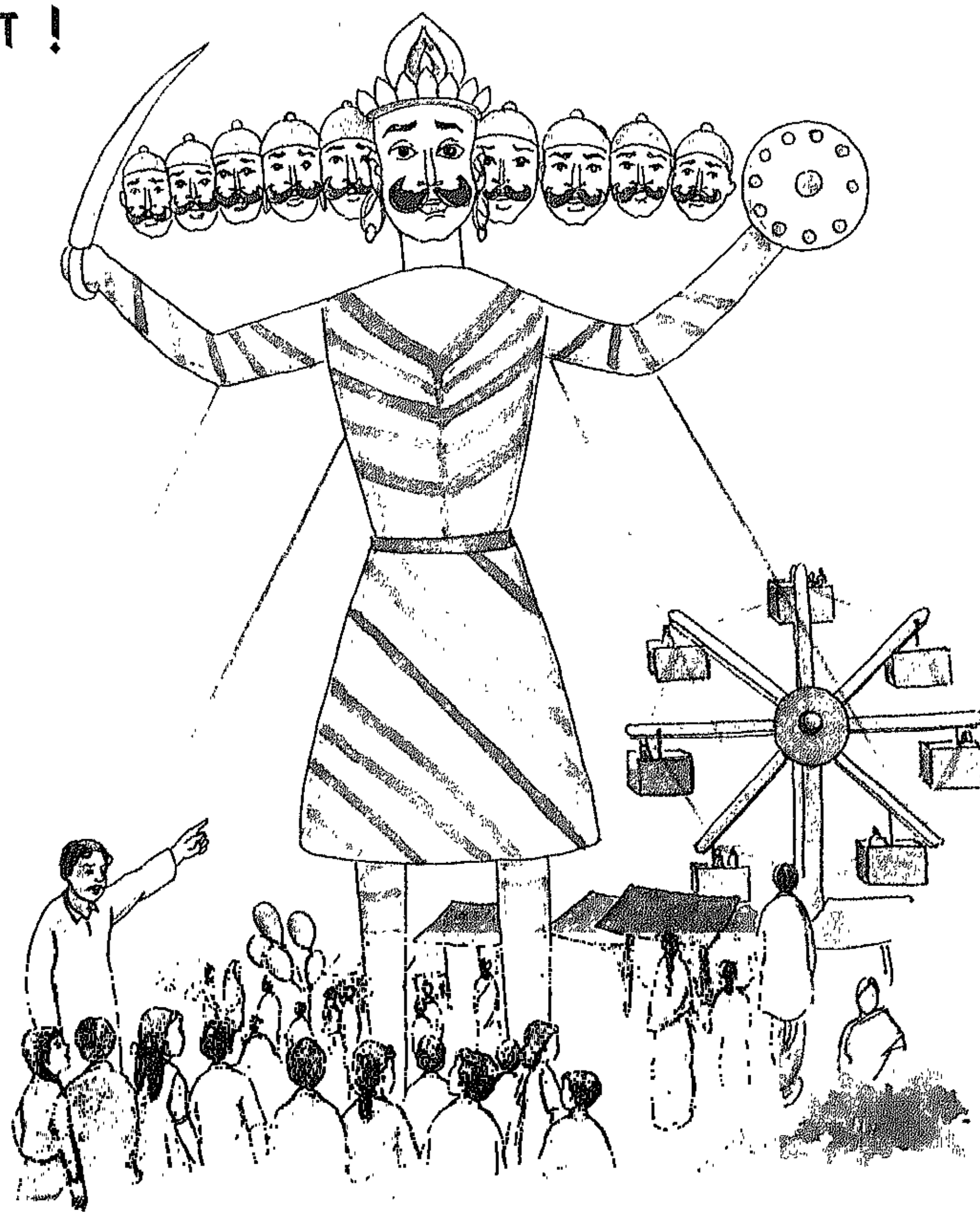


अध्यापन संकेत : श्यामपट पर (बाण, रावण) लिखिए। इन शब्दों का बार-बार उच्चारण करवाइए। फिर इन शब्दों की ओर संकेत करते हुए बालकों से पूछिए – इन शब्दों की आखिरी आवाज़ क्या है? इसी तरह **कक्षा** शब्द से **क्षा** और **क्ष** ध्वनि अलग करवाकर इसका उच्चारण करवाइए। **मित्र** और **चित्र** दोनों में **त्र** संयुक्ताक्षर का उच्चारण करवाइए। **ज्ञान** शब्द से शुरू की आवाज़ – **ज्ञा** निकलवाकर उससे **ज्ञ** का उच्चारण सिखाइए। **श्री, श्र** का उच्चारण करवाइए। इसके बाद **ण, क्ष, त्र** और **श्र** वर्ण श्यामपट पर लिखिए और उनका उच्चारण करवाइए। अब पाठ के ऊपर लिखे वर्ण, संयुक्ताक्षर तथा शब्द फिर से पढ़वाइए, जिससे बच्चों को इन ध्वनियों का समुचित ज्ञान हो जाए।

मदन का एक मित्र है – ज्ञान।

ज्ञान मदन की कक्षा में पढ़ता है। रक्षा उसकी छोटी बहिन है। ज्ञान और रक्षा भी मदन के साथ हैं।

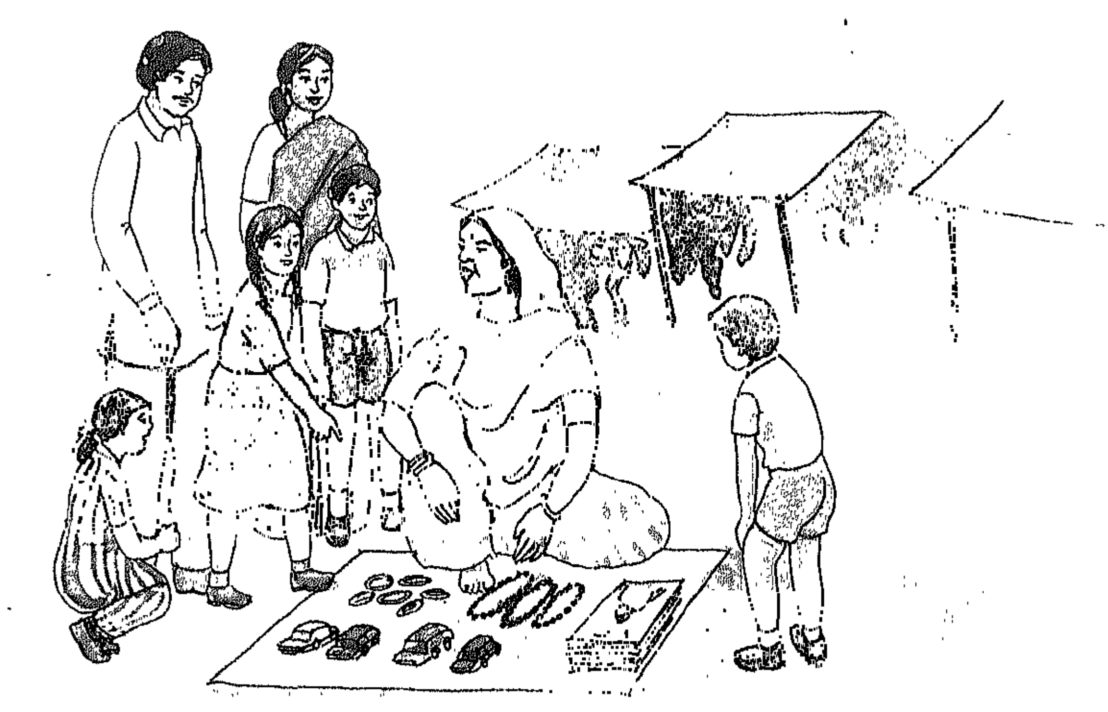
मेले में पहुँचकर पिता जी बोले – वह देखो, रावण का पुतला !



रक्षा बोली – अरे, इतना बड़ा रावण !

मेले में बहुत भीड़ थी। वहाँ बहुत-सी दुकानें लगी थीं। बालक खिलौने खरीद रहे थे।

रक्षा ने श्रीराम का चित्र खरीदा। चित्र में श्रीराम के हाथ में धनुष-बाण था। मदन और ज्ञान ने चित्रोंवाली किताबें खरीदीं। कमला ने चाबी से चलने वाली गाड़ी ली।

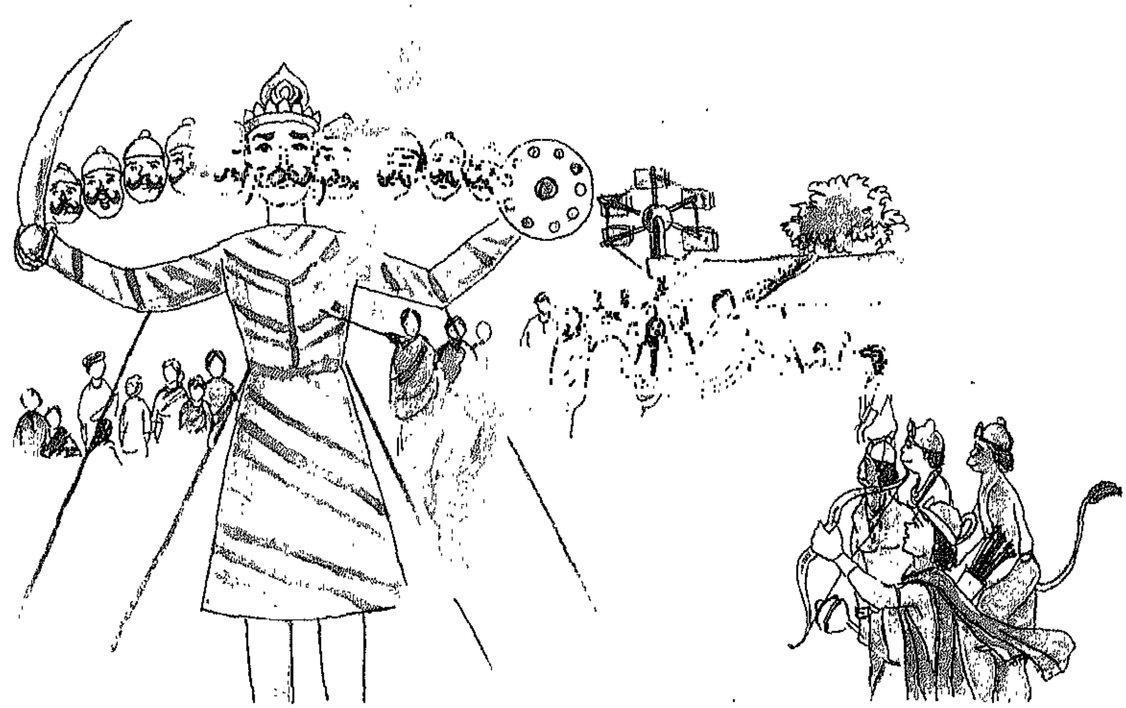


अध्यापन संकेत : पाठ पढ़ाने से पूर्व बच्चों को मेलों तथा त्योहारों के विषय में बताइए। उन्हें छठे और आठवें पाठ का ध्यान दिलाइए जिनमें कमला तथा मदन पिता जी के साथ मेला देखने गए थे। बच्चों से पूछिए : मेले में कौन-कौन सी दुकानें लगी थीं? दशहरे के मेले में क्या विशेष बात होती है? इस मेले के बारे में बच्चों को बताइए।

माँ बोली – देखो, राम और रावण की लड़ाई हो रही है।

तभी राम ने रावण के पुतले पर बाण चलाया। पुतले में आग लग गई। उसमें से पटाखे छूटने लगे। रावण गिर पड़ा।

पिता जी ने मिठाई खरीदी। सबने मिलकर मिठाई खाई। फिर वे खुशी-खुशी अपने घर की ओर चल पड़े ।



अध्यापन संकेत : पहले, पाठ स्वयं पढ़िए, फिर बच्चों से पढ़वाइए। पढ़ाते समय **ण, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र** वाले शब्दों के उच्चारण की ओर विशेष ध्यान दीजिए। बच्चों को रामायण की कहानी सुनाइए।

पाठ छब्बीस

पढ़ो और याद करो

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
क	ख	ग	घ	(ङ)					
च	छ	ज	झ	(ञ)					
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़			
त	थ	द	ध	न					
प	फ	ब	भ	म					
य	र	ल	व						
श	ष	स	ह						
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र						
ज़	फ़								



अध्यापन संकेत : अब तक लगभग सभी वर्णों से बच्चों का परिचय हो गया है। यहाँ क्रम से वर्णमाला का ज्ञान कराना आवश्यक है। बच्चों से पढ़वाकर देखिए कि वे विभिन्न वर्णों को पहचानकर उनका ठीक-ठीक उच्चारण कर सकते हैं अथवा नहीं। वर्णमाला याद करने में उनकी सहायता कीजिए। ङ और ञ का केवल उच्चारण बता दीजिए। कुछ वर्णों को बोलकर लिखवाइए, जिससे बच्चों को वर्णमाला का भली-भाँति ज्ञान हो जाए। चार्ट अथवा कार्डों का प्रयोग कर विभिन्न वर्णों की पहचान करवाइए। यह सुनिश्चित कर लीजिए कि अब कक्षा के सभी बच्चों को पूरी वर्णमाला क्रम से याद हो गई है।

पाठ सत्ताईस

आओ बगीचा लगाएँ

पढ़ो

क्य	च्च	च्छ	न्ह
क्या	बच्चा	अच्छा	इन्हें
क्यारी	बच्चे	गुच्छा	उन्हें



एक दिन बहिन जी ने कहा – आओ बच्चो, आज हम बगीचा लगाएँ।

अध्यापन संकेत : इस पाठ में **क्य, च्च, च्छ, न्ह** – संयुक्त व्यंजनों का परिचय कराया गया है। 'पढ़ो' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए शब्दों को श्यामपट पर लिखकर इनका शुद्ध उच्चारण सिखाइए। बच्चों से पूछिए – क्या तुम्हारे घर में बगीचा है? उसमें कौन-कौन से पौधे लगे हैं? बगीचा लगाने के लिए पहले क्या करना चाहिए? ज़मीन किससे खोदते हैं? ज़मीन तैयार हो जाने पर क्या करते हैं? खाद क्यों डाली जाती है? पौधों के बड़े हो जाने पर क्या होता है? संबोधन के रूप में प्रयुक्त शब्दों पर अनुनासिक का प्रयोग नहीं होता। जैसे – बच्चो, इधर आओ। कारक चिह्न के साथ बहुवचन आने पर अनुनासिक चिह्न होगा। जैसे – बच्चों ने खेल खेला।

बच्चे बोले – हाँ, हाँ, आज हम सब मिलकर बगीचा लगाएँगे।

बच्चों ने खुरपों से मैदान की घास खोदी। मैदान में खूब पानी डाला। ज़मीन गीली हो गई।



बच्चों ने फिर खुरपी से ज़मीन खोदी। कमला और रक्षा ने एक क्यारी बनाई। सलमा और मनीष ने मिलकर दूसरी क्यारी बनाई। इस तरह कई क्यारियाँ बन गईं। बच्चों ने क्यारियों में खाद डाली।

अध्यापन संकेत : पाठ को पहले स्वयं पढ़िए फिर बच्चों से पढ़वाइए। पाठ के विषय में बच्चों से प्रश्न पूछिए। बच्चों से पौधों के बारे में बातचीत करते हुए उन्हें पौधे के भागों के विषय में बताइए। कुछ अंकुर बच्चों को दिखाइए। इस आयु के बच्चे प्रत्यक्ष अनुभव से जल्दी सीखते हैं। अतः कक्षा में अथवा बगीचे में ले जाकर पौधे के सभी भागों की जानकारी करवाइए। उन्हें बताइए कि पौधों के उगने और बढ़ने के लिए धूप, हवा, पानी और खाद की ज़रूरत होती है।

बहिन जी ने उन्हें कुछ बीज दिए। बच्चों ने क्यारियों में बीज बोए। फिर क्यारियों में पानी दिया।

कुछ ही दिनों में बीजों में से अंकुर निकल आए। अंकुर धीरे-धीरे बड़े होने लगे। बच्चों ने और पानी दिया। पौधे बड़े हो गए।



कुछ ही दिनों के बाद पौधों में फूल लगे। फूल बहुत सुंदर थे। वे कई रंगों के थे – लाल, पीले, नीले, और गुलाबी।

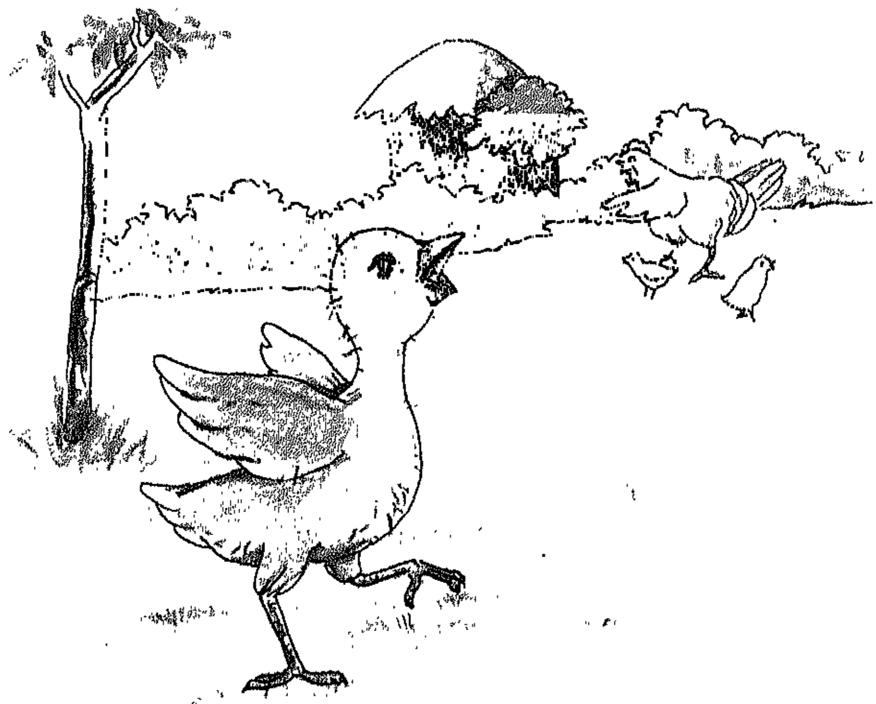
बच्चे बोले – अहा ! कितने सुंदर फूल हैं! अब क्यारियाँ कितनी अच्छी लग रही हैं ! बहिन जी ने कहा – हाँ, ये फूल बहुत सुंदर हैं।

सभी बच्चे बोले – बहिन जी, हम इनकी खूब देखभाल करेंगे।



अध्यापन संकेत : बच्चों से पूछिए – तुम्हें फूल कैसे लगते हैं? कुछ फूलों के नाम बताने को कहिए। बच्चों से तरह-तरह के पत्ते और फूल एकत्रित करवाइए। इन्हें एलबम में या चार्ट पर लगवाइए। फूलों और पत्तों के नाम नीचे लिखवाइए। रंगों का समुचित रूप से ज्ञान भी यहाँ दिया जा सकता है। रंगों के चार्ट द्वारा विभिन्न रंगों के नाम तथा हलके-गहरे रंगों में भेद करना भी सिखाइए।

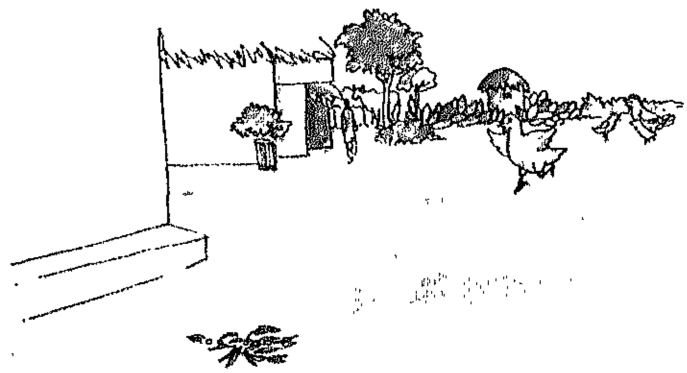
चुनमुन



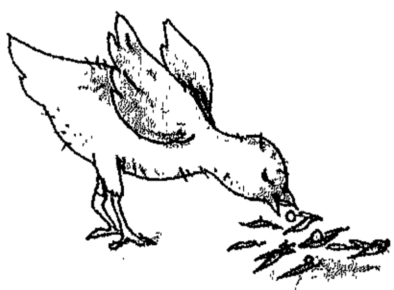
चुनमुन मुरगी का एक छोटा-सा बच्चा था। चुनमुन बड़ा नटखट था। वह रोज़ अपनी माँ के साथ घूमने जाता था। अपनी माँ के बार-बार मना करने पर भी वह इधर-उधर भाग जाता।

माँ चुनमुन को समझाती – तुम अभी बहुत छोटे हो। साथ-साथ रहा करो। मैं तुम्हें खाना ढूँढ़ना सिखाऊँगी।

चुनमुन कुछ समय तक तो माँ की बात याद रखता, फिर भूल जाता।



एक दिन चुनमुन अपनी माँ और भाई-बहिन के साथ बाहर निकला। उसे एक घर के बाहर मटर के हरे-हरे छिलके पड़े दिखाई दिए। वह माँ की बात भूल गया और भागकर छिलकों के पास पहुँच गया। वह अपनी छोटी-सी चोंच से छिलकों में से दाने ढूँढ़कर खाने लगा। मटर का एक दाना अचानक उसके गले में अटक गया।



चुनमुन रोने लगा। वह अपनी माँ को ढूँढ़ने लगा। पर माँ उसे दिखाई न दी। घबराकर वह इधर-उधर भागने लगा।

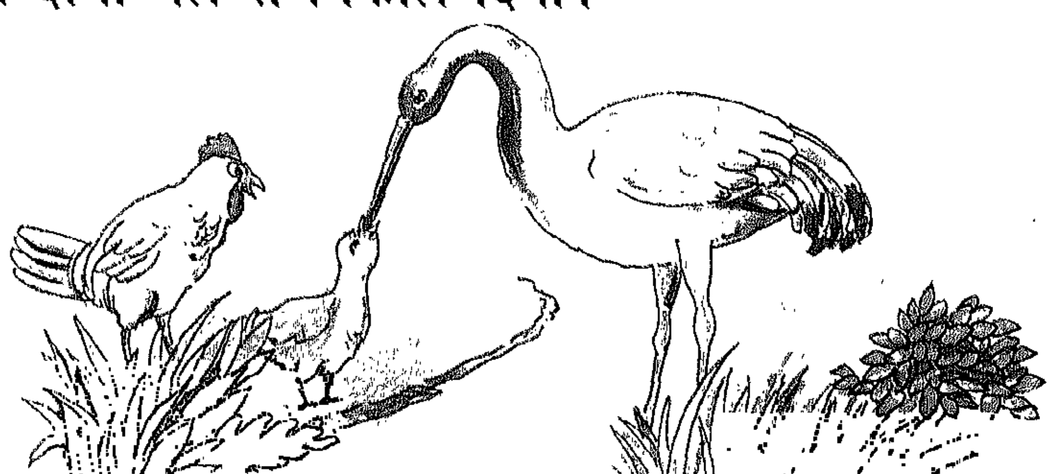
उधर मुरगी ने चुनमुन को जब अपने साथ न देखा तो पीछे लौटी। चुनमुन रो रहा था। उसने रोते-रोते अपना मुँह

खोलकर दिखाया। मुरगी ने देखा – चुनमुन के गले में मटर का एक दाना अटका है। उसने अपनी चोंच से दाना निकालने की कोशिश की। पर उसकी चोंच छोटी थी। वह चुनमुन के गले से दाना न निकाल सकी।

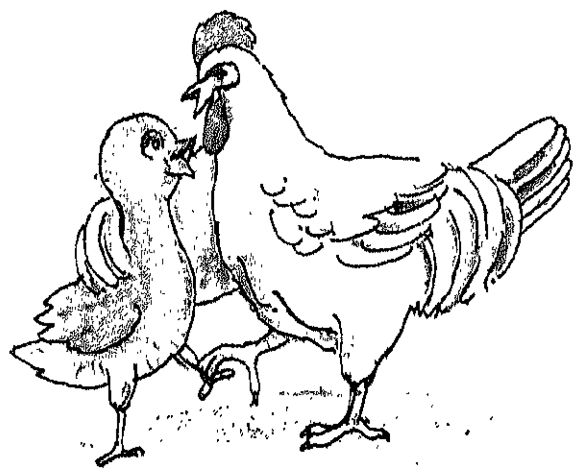


मुरगी का एक मित्र था – बगुला। मुरगी भागकर बगुले के पास गई। रोता हुआ चुनमुन भी पीछे-पीछे था। मुरगी ने सारी बात बगुले को बताई।

बगुले ने चुनमुन की तरफ़ देखा। उसे दया आ गई। उसने अपनी लंबी चोंच चुनमुन के गले में डाली और मटर का दाना गले से निकाल दिया।



चुनमुन माँ से बोला – माँ, मुझसे गलती हो गई। मैं आपका कहना मानूँगा। बिना पूछे कभी इधर-उधर नहीं जाऊँगा। मुरगी ने चुनमुन के आँसू पोंछे और उसे गले से लगा लिया।





अध्यापन संकेत : बच्चों को पूरी कहानी स्वयं सुनाकर एक-एक अनुच्छेद का सस्वर वाचन करवाइए। फिर इसका अभिनय करवाइए। बच्चों को कुछ और कहानियाँ स्वयं पढ़ने को कहिए। अब कुछ प्रश्न पूछिए – चुनमुन कौन था? मुरगी ने चुनमुन को साथ रहने को क्यों कहा? चुनमुन रो क्यों रहा था? माँ चुनमुन के गले से मटर का दाना क्यों नहीं निकाल पाई? बगुले ने क्या मदद की? तुम्हें चुनमुन कैसा लगा? बगुला कैसा लगा? मुरगी ने चुनमुन को गले से क्यों लगाया?

पाठ उनतीस

दो बकरियाँ

पढ़ो

बकरी	बकरियाँ	पाँव	पहुँची	इधर-उधर
में-में	कहाँ	वापस	तंग	चलूँ

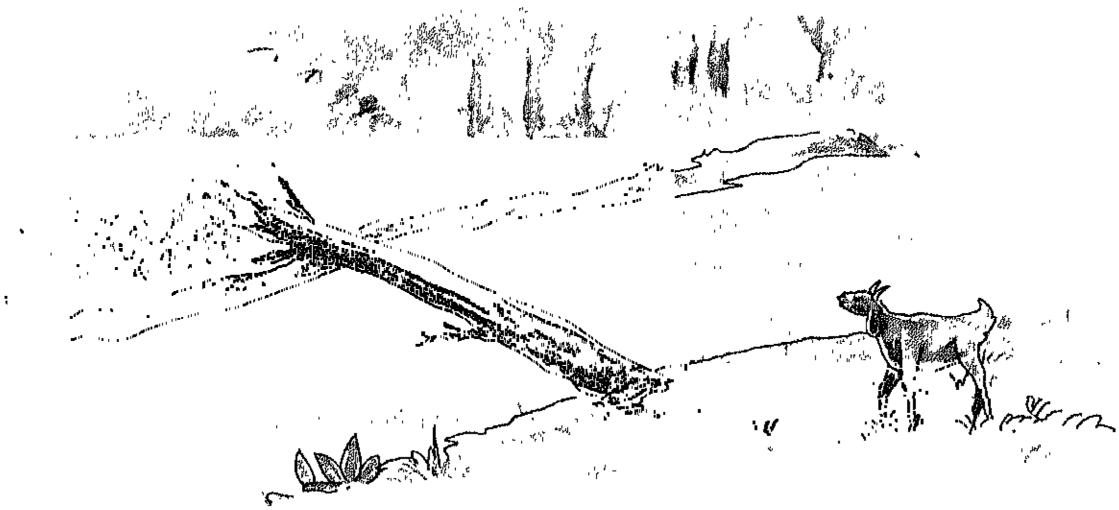


जंगल में एक नाला था। नाले के पास दो बकरियाँ रहती थीं – काली और भूरी। नाले के किनारे हरी-हरी घास लगी थी।

दोनों बकरियाँ रोज़ वहाँ घास चरने जाती थीं।

अध्यापन संकेत : दूध देने वाले पशुओं के बारे में बातचीत कीजिए। वे क्या-क्या खाते हैं? हरी-हरी घास खाने के लिए जानवरों को कहाँ ले जाया जाता है? उन्हें बताइए कि जो कहानी अब हम पढ़ेंगे, वह बकरियों के बारे में है। क्या तुम में से किसी ने बकरी देखी है? बकरी कैसी होती है? वह कैसे बोलती है? इस तरह बातचीत द्वारा बकरी का आकार, रंग, भोजन तथा उसकी आदतों आदि के बारे में चर्चा करते हुए, कहानी में बच्चों की उत्सुकता जागृत कीजिए।

एक दिन भूरी बकरी नाले के किनारे घास चर रही थी। काली बकरी वहाँ नहीं आई थी। वह आज दूसरे किनारे पर घास चरने चली गई थी। भूरी बकरी ने इधर-उधर देखा। फिर उसने नाले की दूसरी तरफ़ देखा।



बकरी ने सोचा – उस किनारे की घास का रंग कितना हरा है ! वह घास नरम भी होगी । क्यों न उस किनारे चलूँ!

नाला गहरा था। भूरी बकरी किनारे-किनारे चलने लगी। एक जगह नाले पर पेड़ गिरा पड़ा था। पेड़ से नाले पर पुल-सा बन गया था। बकरी उस पुल पर चलकर नाला पार करने लगी।

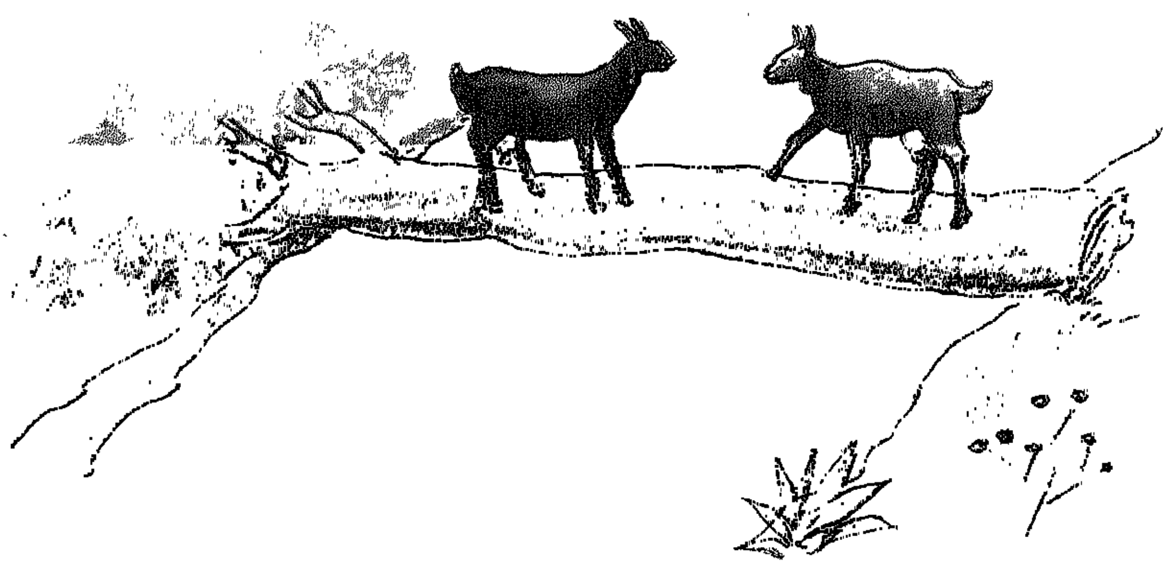
अध्यापन संकेत : बच्चों के चिंतन के विकास के लिए पूछिए – भूरी बकरी दूसरे किनारे क्यों जाना चाहती थी? दोनों बकरियाँ एक साथ क्यों नहीं निकल सकती थीं?

जैसे ही वह पुल के बीच में पहुँची, उसे सुनाई दिया – में-में, में-में। बकरी ने सिर ऊपर उठाया। अरे ! वह बकरी तो इधर ही आ रही है।

भूरी बकरी ने पूछा – बहिन, तुम कहाँ से आ रही हो?

काली बकरी ने कहा – मैं उस किनारे गई थी। अब वापस जा रही हूँ।

भूरी बकरी बोली – बहिन, यह पुल बहुत तंग है। इस पुल से तो हम दोनों साथ-साथ नहीं निकल सकतीं। अब क्या करें?



काली बकरी कुछ सोचने लगी। फिर बोली – मैं पुल पर बैठ जाती हूँ। तुम मेरे ऊपर से निकल जाओ।



भूरी बकरी झट से बोली – नहीं, नहीं मैं बैठ जाती हूँ। तुम पहले निकल जाओ।

भूरी बकरी पुल पर बैठ गई। काली बकरी ने धीरे-धीरे पाँव उठाए। उसने अपने पाँव भूरी बकरी पर रखे। फिर वह दूसरी तरफ़ कूद गई।

भूरी बकरी उठ खड़ी हुई। वह भी नाले के दूसरे किनारे चली गई।

में-में-में दोनों बहुत खुश थीं।

अध्यापन संकेत : यह कहानी स्वयं अभिनयात्मक ढंग से पढ़िए। फिर बच्चों से पढ़वाइए। इस पाठ में आए सभी शब्द बच्चे पढ़ सकते हैं। शुद्ध उच्चारण तथा शब्दों के अर्थ समझने में बच्चों की सहायता कीजिए। इस कहानी का अभिनय करवाइए। बकरी की कोई और कहानी बच्चों से सुनिए या सुनाइए।

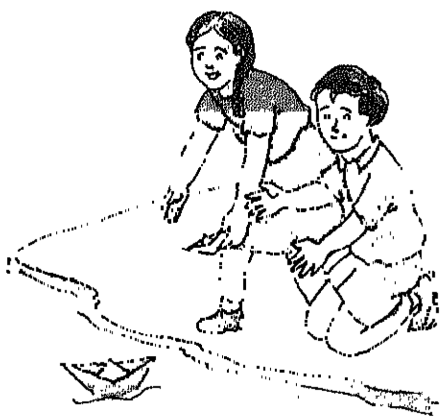
पाठ तीस

कविताएँ

अपनी नाव



आओ-आओ जल्दी आओ
रंग बिरंगा कागज़ लाओ
छोटी-सी एक नाव बनाएँ
उसको पानी पर तैराएँ



देखो कैसे चलती नाव
लहरों के संग बहती नाव
नीचे जाती ऊपर उठती
आगे बढ़ती जाती नाव

कोई नहीं चलाता इसको
फिर भी चलती जाती नाव
कितनी सुंदर कितनी प्यारी
रंग बिरंगी अपनी नाव



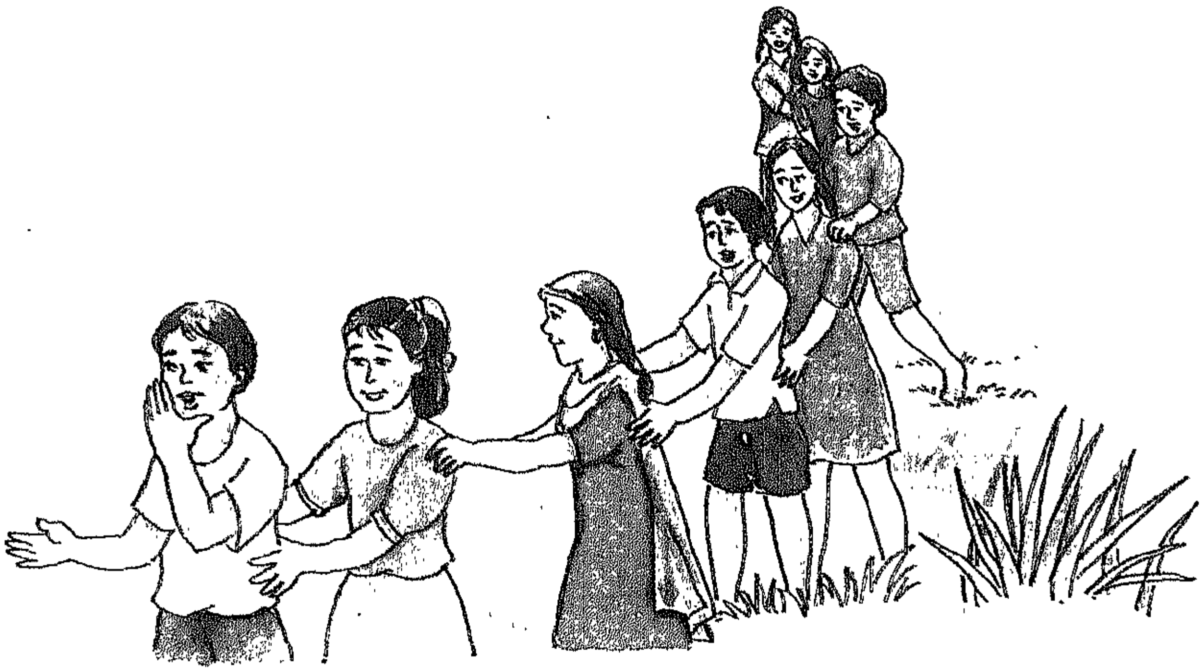
अध्यापन संकेत : अगले कुछ पृष्ठों पर बच्चों की रुचि की कुछ कविताएँ दी गई हैं। इस आयुवर्ग के बच्चे कविताओं में बहुत रुचि लेते हैं। तुक और लय से वे इन्हें जल्दी याद कर लेते हैं। इन कविताओं को पाठों के बीच-बीच जब उचित अवसर पाएँ, याद करवाइए। ये कविताएँ बच्चों को पढ़ाने के लिए नहीं हैं। बच्चे इन्हें याद करें तथा उचित हाव-भाव के साथ अकेले या समूह गान के रूप में गाएँ।

कोयल



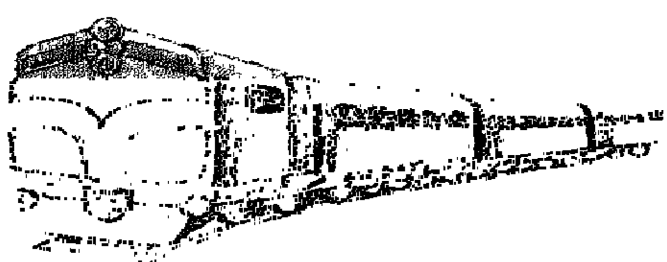
काली कोयल बोल रही है
डाल-डाल पर डोल रही है।
कुहू-कुहू का गीत सुनाती
कभी नहीं मेरे घर आती।
आमों की डाली पर गाती
बच्चों के दिल को बहलाती।
कूक-कूक कर किसे बुलाती
क्या अम्मा की याद सताती?
यदि हम भी कोयल बन जाते
उड़ते फिरते, गीत सुनाते।

रेल

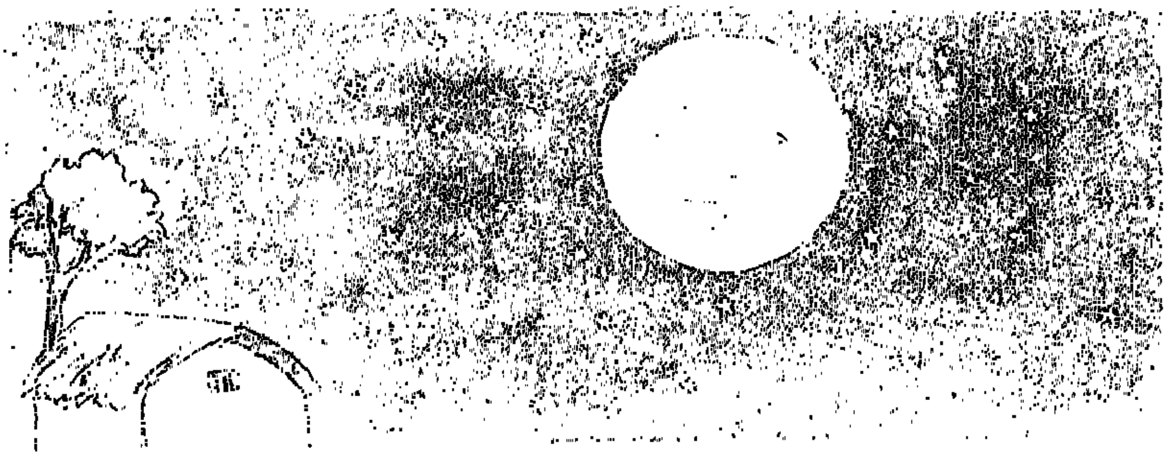


आओ भाई, खेलें खेल
चलती है अब अपनी रेल।
हम इंजन हैं भक-भक करते
हम डिब्बे हैं छक-छक करते।
सीटी देती चलती रेल
कैसा बढ़िया है यह खेल।
दिल्ली जाने वाले आएँ
तनिक देर में हम पहुँचाएँ।

चाहें तो हम इसी रेल में
झटपट कलकत्ता हो आएँ।
टिकट-विकट का काम नहीं है
लगता कुछ भी दाम नहीं है।
स्टेशन आया रुक गई रेल
हुआ खतम अब अपना खेल।

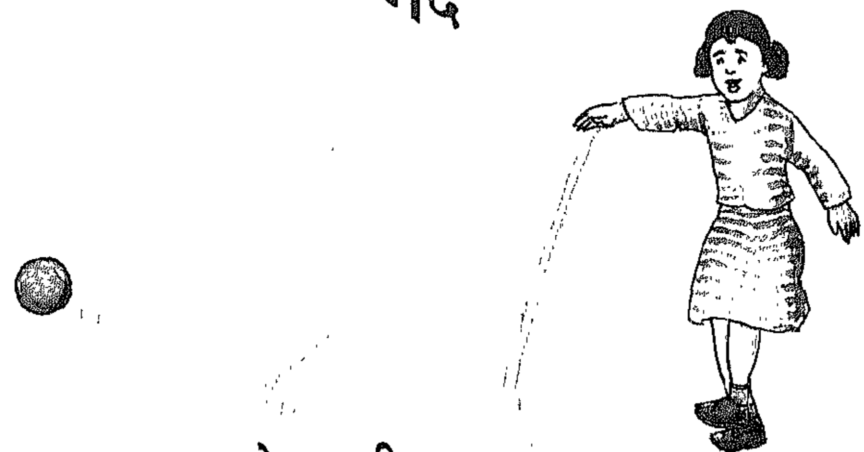


चंदा मामा



आसमान में निकले तारे
चंदा मामा कितने प्यारे
सबके मन को बहलाते हैं
नई चाँदनी छिटकाते हैं।
देखो इनकी शान निराली
सूरत कितनी भोली-भाली
रोज़ सवेरे छिप जाते हैं
जैसे हमसे शरमाते हैं।
आओ चंदा मामा आओ
अपने घर की बात सुनाओ।

गेंद



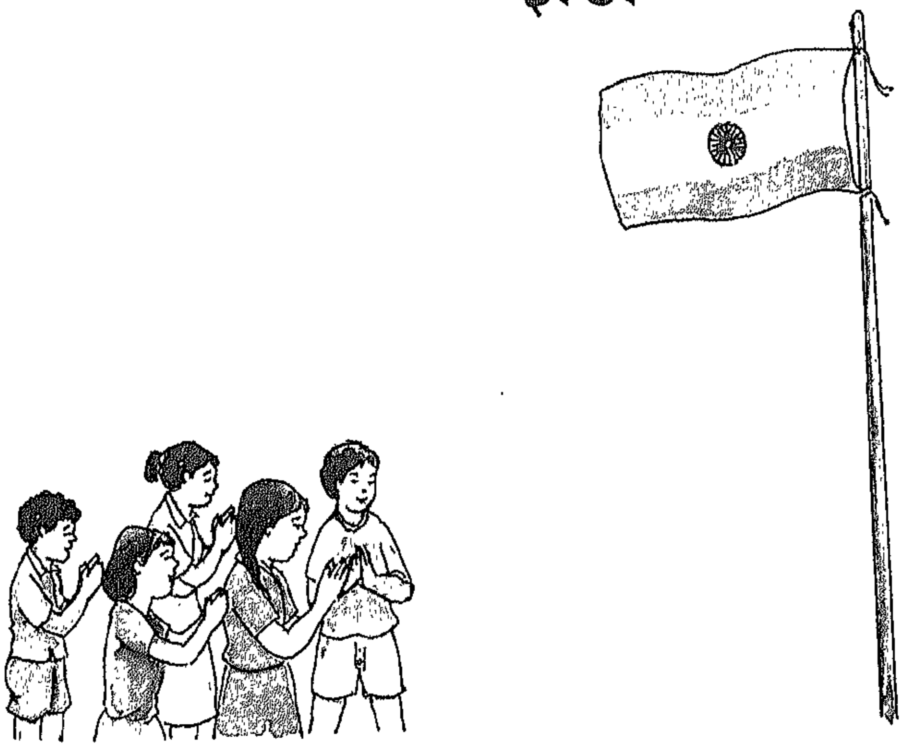
उछल उछल कर आगे जाती
पीछे मुझे भगाती गेंद
फिर भी मेरे हाथ न आती
मुझको बहुत छकाती गेंद।

नीचे पटको ऊपर जाती
फिर नीचे आ जाती गेंद
तरह-तरह के खेल दिखाकर
चुपके से छिप जाती गेंद।



पानी में भी नहीं डूबती
झट ऊपर आ जाती गेंद
एक अकेली है वह लेकिन
सबका मन बहलाती गेंद।

झंडा



तीन रंग का झंडा अपना
हम इसको फहराते हैं।

इसे तिरंगा कहते हैं हम
इसका गाना गाते हैं।

इसे देखते हैं जब हम सब,
कितने खुश हो जाते हैं।

इस झंडे को हम सब बच्चे,
अपना शीश झुकाते हैं।